सख्ती से पूछताछ के बाद सभी ने उक्त घटना में अपनी संलिप्तता को स्वीकार भी किया है। दूसरी घटना हाजीपुर-लालगंज मुख्य मार्ग पर पेट्रोल पंप से 45 हजार रूपये की लूट के बाद मैनेजर को गोली मारे जाने की है। बता दें कि हाजीपुर-लालगंज मुख्य मार्ग के चंद्रालय पेट्रोल पंप पर बीते 4 मार्च की रात पेट्रोल लेने के बहाने आये अपराधियों ने नोजल मैन से 45 हजार रूपये लूट लिये और जब इसका विरोध किया गया तो पेट्रोल पंप के मैनेजर को गोली मार दी गई, जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गये और आनन-फानन में हाजीपुर के नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया। घायल मैनेजर शिवनाथ कुमार सदर थाना क्षेत्र के बलवाकोआरी गांव के निवासी हैं। बहरहाल, घटना की सूचना मिलते ही हाजीपुर सदर एसडीपीओ राघव दयाल एवं सदर थाने की पुलिस पेट्रोल पंप पर पहुंचकर पूछताछ व छानबीन में जुट गई। वही उक्त घटना के संबंध में एसडीपीओ ने कहा कि सदर थाना क्षेत्र के चंद्रालय पेट्रोल पंप पर दो बाइक सवार चार बदमाश लूटपाट करने पहुंचे थे। मगर पेट्रोल पंप पर रूपये नहीं होने पर बदमाशों ने मैनेजर को गोली मारकर उसका मोबाइल लूटकर फरार हो गये। पुलिस घटना के हर एक बिन्दुओं पर जांच कर रही है, जल्द ही घटना में शामिल सभी बदमाशों को पकड़ लिया जायेगा।

विडम्बना है कि पर्व-त्योहार के मौके पर आपसी सौहार्द में खलल डालने का भरपूर प्रयास उपद्रवियों के द्वारा की जाने की संभावना हमेशा बनी रहती है। इस बीच आमजनों को सुरक्षित वातावरण के माहौल में पर्व त्योहारों का उत्सव मनाने को लेकर भी हाजीपुर सदर एसडीपीओ राघव दयाल तत्पर दिख रहे हैं। होली पर्व के दौरान एक तरफ जहां बिहार विधान परिषद् चुनाव के नामंकन की प्रक्रिया चालू हो गयी है, जिसे शांतिपूर्ण संपन्न कराने को लेकर शराब माफियाओं से राघव लोहा लेते दिख रहे हैं। बताते चले कि राघोपुर प्रखण्ड के कई दियारा क्षेत्रों में सघन छापेमारी के दौरान 13 मार्च को दो हजार लीटर देसी शराब के साथ 9 बाइक को बरामद किया गया। इस संबंध में राघव बताते हैं कि होली पर्व को शांति व सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने व विधान पार्षद चुनाव में शांति-व्यवस्था कायम रखने को लेकर शराब तस्करों के खिलाफ राघोपुर प्रखंड के दियारा क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया गया। हाजीपुर सदर एसडीपीओ के नेतृत्व में राघोपुर थाना, रूस्तमपुर ओपी, जुड़ावनपुर थाना की पुलिस सहित काफी संख्या में महिला व पुरूष के जवान ने दियारा क्षेत्र के नदी किनारे पहुंचकर विशेष अभियान चलाया। दूसरी तरफ इसी दिन एसडीओ एवं एसडीपीओ ने मंडल कारा में भी छापेमारी की। बता दें कि होली व विधान परिषद चुनाव को लेकर जिले में सुरक्षा व्यवस्था पर प्रशासन अलर्ट मोड पर है। विधि-व्यवस्था बनाये रखने के लिए डीएम उदिता सिंह के निर्देश के बाद हाजीपुर मंडल कारा में सघन छापेमारी की गयी। हाजीपुर सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राघव दयाल और एसडीओ अरूण कुमार के नेतृत्व में एसडीएम, बीडीओ सहित कई पुलिस अधिकारियों के साथ काफी संख्या में महिला एवं पुरूष के जवान अहले सुबह पहुंचकर हाजीपुर मंडल कारा में छापेमारी अभियान को चलाया। इस छापेमारी से मंडल कारा जेल प्रशासन सहित कैदियों में हड़कंप मच गया।

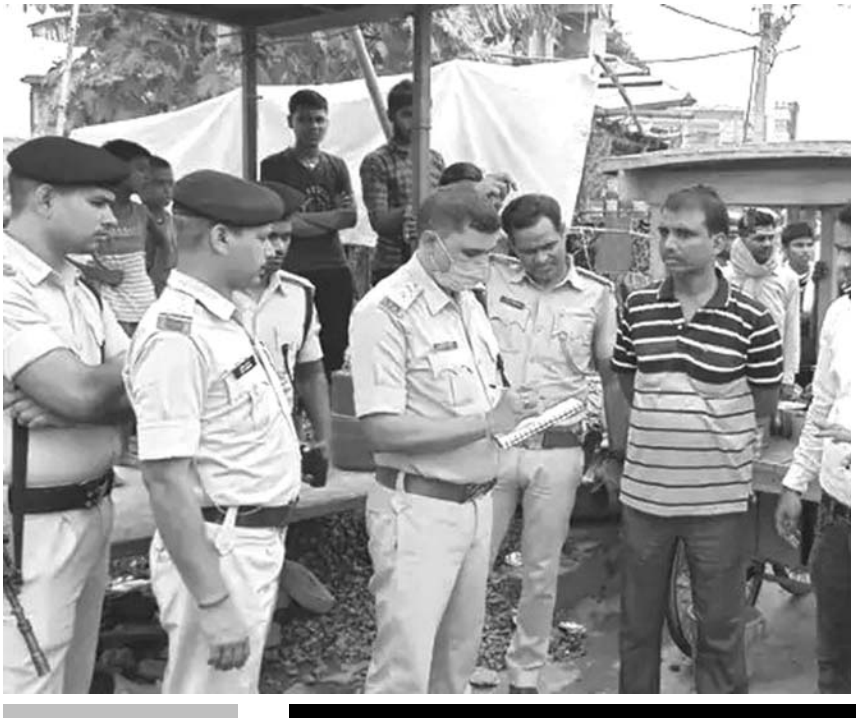

बहरहाल, क्राइम कंट्रोल के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में भी हाजीपुर सदर एसडीपीओ की रूचि देखते बनती है। बीते 6 मार्च को एक्सेस टू जस्टिस कार्यक्रम के तहत हाजीपुर स्थित शुक्ला सभागार में हुए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होकर राघव ने कहा कि पुलिस विभाग बच्चों के संरक्षण की दिशा में लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने इस संबंध में कई उदाहरण भी प्रस्तुत किये, जिसमें बच्चों की सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा व्यापक प्रयास किया गया था। एसडीपीओ द्वारा आगे कहा गया कि इस परियोजना को आगे ले जाने में पुलिस प्रशासन हर संभव मदद करेगा। ●

सीआईआई की वार्षिक बैठक संपन्न

● रीता सिंह

पटना में सीआईआई की ओर से वार्षिक बैठक में विषय एडवांटेज बिहार संकल्प से सिद्धि, बिहार / 75 के मौके पर बिहार के माननीय उद्योग मंत्री, श्री शाहनवाज हुसैन ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि बिहार उद्योग में पिछड़ने के बावजूद बाकी सभी सेक्टर में आगे है। हालांकि बिहार की सबसे बड़ी ताकत स्किल लेबर है। इसीलिए मेरा मानना ही कि जब बिहार आगे बढ़ेगा तब ही देश आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार की मौजूदा उद्योग निति एवं स्किल लेबर के कारण हरियाणा से उद्योग बिहार में आना चाह रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना काल मे एथेनॉल सेक्टर में हमारे पास बिहार में 39 हजार करोड़ के इन्वेस्टमेंट का प्रपोजल आया। उन्होंने कहा कि वहीं 4 प्रोजेक्ट प्रोडक्शन के लिए तैयार है। उन्होंने मुजफ्फरपुर में जल्द ही फूड पार्क शुरू होने की बात कही। साथही बिहार में उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सयैद शाहनवाज हुसैन ने सीआईआई के साथ मिल कर काम करने की बात कही। बैठक में श्री नरेंद्र कुमार, निदेशक, होटल विंडसर को सीआईआई, बिहार राज्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में वर्ष 2022-23 के लिए एक बार फिर से चुना गया है। उनके नाम की घोषणा आज पटना में आयोजित सीआईआई बिहार राज्य परिषद की पुनर्गठित पहली बैठक में की गई। श्री नरेंद्र कुमार हॉस्पिटैलिटी एवं रियल एस्टेट कारोबार में शामिल है। उनके 29 साल के अनुभव के साथ कुमार बिल्डकॉन भारत का एक प्रसिद्ध ब्रांड है जो आपके सपने को वास्तविकता में आकार दे रहा है। उन्होंने कुमार बिल्डकॉन प्रा0 लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1987 में अपने पार्टनर के साथ की थी। आज, उनकी कंपनी को राज्य के साथ देश में एक मजबूत उपस्थिति प्राप्त है जोकि बिहार और झारखंड की परियोजनाओं के साथ रियल एस्टेट उद्योग में एक बड़ी कंपनियों में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाई है। भारत में रियल्टी क्षेत्र में कुमार बिल्डकॉन प्राइवेट लिमिटेड, अग्र धावकों में से एक है। वहीं, स्वधा डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक श्री सचिन चंद्रा को भी दूसरी बार वर्ष 2022-23 के लिए सीआईआई बिहार राज्य परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया है। श्री चंद्रा पिछले 16 सालों से कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री में हैं। उनका नाम बिहार निर्माण उद्योग में सबसे प्रमुख नामों में से एक है। वह बिल्डर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सक्रिय सदस्य रहे हैं। वह बिल्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया में पटना सेंटर के अध्यक्ष, राज्य समन्वयक बिहार रहे हैं। वह बिल्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। ●

दलालों से टिकट बुक करेंगे तो आप ट्रेन में सफर नहीं कर पायेंगे

● रीता सिंह

मनेर थाना के आरोही टूर एंड ट्रैवल दुकान में रेल सुरक्षा बल दानापुर द्वारा छापेमारी कर तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। आरपीएफ का इंस्पेक्टर वैंकटेश कुमार ने गिरफ्तारी की पुष्टि की। पकड़े गए आरोपियों की पहचान बिहार के वैशाली गंगा ब्रिज थाना क्षेत्र निवासी उमेश महतो का पुत्र अमित कुमार, पटना जिला के मनेर थाना क्षेत्र के महिनावां निवासी रामदेव महतो का पुत्र गुड्डू कुमार मालिक फरार है, जो रेल टिकट का माफिया बताया जाता है। रेल थानाध्यक्ष ने बताया कि गुड्डू कुमार मनेर अंचल कार्यालय का दलाल भी है, जो अंचल में इसका बोलबाला है। लेकिन प्रशासन अभी इसकी गिरफ्तारी करने में असफल है। इसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है और भी मनेर थाना के महिनावां बाजार निवासी कामेश्वर प्रसाद का पुत्र धीरज कुमार, मनेर महिनावां निवासी जितेंद्र कुमार का पुत्र सोनू कुमार है। इसके विरुद्ध मामल दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। इसके पूर्व में करीब 150 टिकट बिक्री कर चुके है। 3 कंप्यूटर 1 लैपटॉप 1 प्रिंटर 67500 नगद व 3 तत्काल रनिग टिकट के साथ गिरफ्तार हुआ। ●

रशिया-यूक्रेन युद्ध के संबंध में भारत को स्वयं का हित देखकर निर्णय लेने चाहिए : सेवानिवृत मेजर जनरल जगतवीर सिंह

● रीता सिंह

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सदैव भारत के पक्ष में ही भूमिका प्रस्तुत की है। संकटकाल में भारत की सहायता की है। कश्मीर सीमावाद, अनुच्छेद 370 के संबंध में भी भारत का समर्थन किया है। भारत को शस्त्र और अस्त्र दिए हैं। इसके विपरीत युक्रेन ने सदैव भारत के विरोध में भूमिका ली है। वर्तमान में युक्रेन पर भीषण आक्रमण हो रहे हैं तथा भारत पर युक्रेन का पक्ष लेने के लिए दबाव बन रहा है, तब भी सीधे वैसा नहीं कर सकते। युक्रेन में हमारे हजारों विद्यार्थी फंसे हुए हैं। उन्हें बचाना महत्त्वपूर्ण होने के कारण भारत को रशिया-युक्रेन युद्ध के संबंध में सावधानी बरतकर भूमिका लेनी चाहिए और भारत का हित देखकर ही अगले कदम उठाने चाहिए, ऐसा मत भारतीय सेना के सेवानिवृत्त मेजर जनरल जगतबीर सिंह ने व्यक्त किया। वे हिन्दू जनजागृति समिति द्वारा आयोजित 'रशिया-युक्रेन युद्ध' भारत पर क्या होगा परिणाम?' इस 'ऑनलाइन' विशेष समय भारतीय सेना के सेवानिवृत्त मेजर जनरल वी.के. सिंह ने कहा, रशिया पर नाटो (NATO) में सम्मिलित देशों ने कठोर आर्थिक प्रतिबंध लादे हैं और व्यापार से संबंधित बहिष्कार भी किया है। उसके प्रत्युत्तर स्वरूप रशिया के राष्ट्रपति पुतीन ने परमाणु आक्रमण करने की चेतावनी दी है। जिससे शत्रु राष्ट्र उन पर आक्रमण करने के लिए एकत्रित न आएं। जिस प्रकार पाकिस्तान भी भारत को पाक में घुसकर युद्ध करने पर परमाणु बम का उपयोग करने की धमकी देता रहता है। उसी प्रकार रशिया ने किया है। इस समय भारतीय सेना के सेवानिवृत्त कर्नल राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि, वर्तमान में चल रहे रशिया-युक्रेन युद्ध के कारण युद्ध सामग्री पर आनेवाला खर्च और उसके पश्चात पश्चिमी देशों द्वारा रशिया पर लादे गए प्रतिबंध के कारण रशिया को बडी मात्रा में आर्थिक हानि होनेवाली है। जातिगक स्तर पर रशिया की बडी हानि होनेवाली है। रशिया पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंध के कारण रशिया से भारत में आनेवाला 'एस 400' विमान तथा क्षेपणास्त्र विरोधी तंत्रज्ञान तथा अन्य युद्धसामग्री भारत को मिलने में कोई बाधा नहीं आएगी।

कदाचित युद्ध के कारण वह प्राप्त होने में थोडा विलंब होगा; परंतु प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी के कारण भारत की स्थिति जागतिक स्तर पर पहले की अपेक्षा बहुत अच्छी है। वे संतुलन रखकर भूमिका ले रहे हैं। रशिया और भारत में मित्रता है तथा कठिन काल में रशिया ने भारत की सहायता की है, यह भी भारत को ध्यान में रखना चाहिए। ●

सामाजिक कुव्यवस्था का शिकार खोता बचपन

● रीता सिंह

आज की भागम भाग जिंदगी में हर कोई हैरान ,परेशान है। अनचाही भौतिकता के प्रति अर्थ काम और पिपासा में आज के युवा लिप्त है।किसी के पास समय नही है हर कोई इस अंधी दौर लगाकर दौड़ता जा रहा है। यधपि मंजिल का पता नहीं, भौतिकता और विलासता को परम् सत्य मान कर आज के युवा और पोर्ड दोनो समाज से बिल्कुल अलग थलग हो चुके है। अपने बुजुर्गों से बात करना उन्हें अव्यवहारिक और दकियानूसी लगता है और बच्चों तो बिल्कुल मोबाइल गेम, काटून, नेटवर्क के माया काल के जंजाल में उलझता ही जा रहा है। जबकि इन दोनों पीढ़ियों काम व सेतु का युवा वर्ग का है, जो कि बिल्कुल अंधी दौड़ में बंध चुके है। जिससे समाजिक तानाबाना शीशे की तरह दरक रहा है, बुजुर्गो के पास बच्चों का बैठना उनका स्नेह और महत्व भरा भाव अब खिसशो और कहानियों में रह जायेगी। जिसका प्रतिकूल प्रभाव हमारे समाज को चुकाना होगा, बच्चों का खेल-कूद एक कैमरों में कैद हो कर मोबाइल और काटून नेट वर्क जुड़े रहना मानसिक बीमारी और अबसाद को जन्म दे रही है, जबकि बच्चों का

सही खेलकूद मैदान में हुआ करता था। जिससे शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक विकास होता था।

The present younger generation is motivated in a negative direction The internet and technical devices are misused by our young people. Proper direction is needed for complete transformations in the society. जीवन मे कर्तव्यों का महत्व आज के युवावर्ग भूलते जा रहे है ,आधुनिक काल का जीवन उन्हें बोझित से लगता है ,युवाओ का ज्ञान-विज्ञान ,धर्म-अध्यात्म और समाज के बारे में केवल इस कार्य की जानकारी बढ़ाने का बोझ ही नही है ।आज के युवा पीढ़ी अपने पथ से विचलित हो गए है, उन्हें ये पता ही नही की इसका परिणाम क्या होगा, इस भाग दौड़ में युवा पीढ़ी विरोध कर के गलत रास्ते पे चल रहे है, इनको सँभालना इतना आसान नही है, इनको खुद समझना होगा ,और सही विचारधारा के मार्ग पर चलना होगा,आदर्श व्यक्ति ही आदर्श मार्ग पर चल सकता है, यधपि युवक को इस चकाचोंध जिंदगी से परहेज करना होगा और अपनी जिंदगी मजबूर नही वल्कि मजबूत बनाना होगा। ●

रेल मुख्यालय में क्षेत्रीय रेल राजभाषा समिति की 73वीं बैठक

● रीता सिंह

मध्य रेल, मुख्यालय/हाजीपुर द्वारा क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 73वीं बैठक अनुपम शर्मा, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि पूर्व मध्य रेल पर राजभाषा का प्रचार-प्रसार निरंतर प्रगति के पथ पर है तथापि कई ऐसे मुद्दें हैं जिनपर हम आज की बैठक में चर्चा करेंगे. उन्होंने कहा कि पूर्व मध्य रेल "क" क्षेत्र में आता है और सभी हिंदी भाषा की जानकारी रखते हैं, आप सभी इस तथ्य से भी अवगत होंगे कि हिंदी हमारी बोलचाल की भाषा तो है ही, देश को संपर्क सूत्र में जोड़ने वाली हमारी राजभाषा भी है. भाषा का विकास और उसका संवर्द्धन एक गंभीर कार्य है और यह केवल आदेश-निर्देश आदि के बल पर ही संभव नहीं है, अपितु हम सभी को सरकारी दायित्व के साथ-साथ एक नागरिक के रूप में अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन भी करना होगा. रेल एक वाणिज्यिक प्रतिष्ठान है और इस देश की आम जनता से जुड़ने के लिए हमें उनकी भाषा में संवाद करना होगा. इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि हिंदी का प्रयोग संवैधानिक अनिवार्यता, राष्ट्रीय कर्तव्य के साथ-साथ हमारी जरूरत भी है. उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ●

सहकारिता आंदोलन के शिखर पुरूष स्व. तपेश्वर बाबू की 31वीं पुण्यतिथि संपन्न

● रीता सिंह

स्व. तपेश्वर बाबू जी की 31वीं पूण्यतिथि पर सहकारिता विभूति को सादर नमन। बाबू तपेश्वर सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी थे। वे वास्तव में शब्द के सही अर्थों में आरा भोजपुर बिहार के गौरव थे। बाबू साहेब द्वारा प्रदर्शित लड़ाई की भावना भोजपुर के अनुसार राजपुताना परंपरा और लोकाचार में एकता के मूल को दर्शाती है। जय राजपुताना, जय भवानी जय हिंद।

बताते चले कि महामहिम पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित करते हुए इंदु तपेश्वर सिंह महिला महाविद्यालय, विक्रमगंज, रोहतास में मनाई गई। माननीय अतिथि सांसदगण, विधायकगण, सम्मानित प्रचार्यगण, शिक्षकगण, प्रतिनिधिगण एवं नगरपरिषद सदस्य, उपस्थित तपेश्वरबाबू सहकारिता आंदोलन के शिखर पुरुष एवं महाविद्यालय संस्थान की 31 वीं पूण्यतिथि 27/02/2022 दिन रविवार को सम्पन हुआ। महाविद्यालय में प्रांगण में उपस्थित आदमकद प्रतिमा पर श्रद्धांजलि, फूल-माला से चढ़ाते हुए मनाई गई। उक्त समारोह माननीय जन प्रतिनिधि, पदाधिकारी एवं गणमान्य स्व० तपेश्वर बाबू की व्यक्तित्व, कृतिव्य तथा नारी शिक्षा की महत्ता पर विशेष बल दिए। सभा मे आये हुए अतिथियों से सभागार लबालब जान पड़ता था, मानो की वह फिर से लौट आये हो और जनता को सम्बोधन कर रहे हो। उनके ज्येष्ट पुत्र डॉ० अजय कुमार सिंह पूर्व एमएलसी विनीत भाव से सभा का सम्बोधन करते नही थकते। अपने पिता के बताए रास्ते पर चले और उन्होंने 31वीं पूण्यतिथि मनाये। सभा मे आये अतिथिगण महामहिम पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार सिंह, अरुण कुमार, विधायक काराकाट, माननीय श्री विजय मंडल, विधायक दिनारा श्री संतोष कुमार मिश्रा, विधायक श्री मुरारी प्रसाद गौतम, विधायक चेनारी राकेश कुमार गुप्ता, विधायक सासाराम नरेंद कुमार, पूर्व विधायक श्रीमति रिंकी सिंह, पूर्व मंत्री जय कुमार सिंह, सिदेश्वर नारायण सिंह, डॉ० ओम प्रकाश राय, डॉ० अनवर इमाम, परीक्षा नियंत्रण, पूर्व प्रचार्य डॉ० माधुरी सिंह, डॉ अजय सिंह, डॉ० गायत्री सिंह, पौत्र डॉ० आलोक सिंह पत्रकारगण, विक्रमगंज की जनता इत्यादि। ●

कुछ मंत्री भाजपा के सेहत के लिए हैं नुकशानदेह

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

मंत्रियों को नहीं झलकता है लोहा का टूटा हुआ पुल नौ महीना बाद भी देखने नहीं आया भाजपा में ऐसे ऐसे लोग हैं जिनमें दूर-दूर तक नहीं भाजपा का चरित्र है और नहीं है संस्कार। मंत्री कूड़े-कर्कट की तरह भरमार हैं। जिस तरह कूड़ा कर्कट सेहत के लिए नुकसानदेह होता है उसी तरह कुछ मंत्री भाजपा की सेहत के लिए नुकसानदेह है। पथ मंत्री नितिन नवीन, उपमुख्य मंत्री तारकिशोर, उप मुख्यमंत्री रेणु देवी आदि लोग बड़े-बड़े पद पर हैं परंतु बिहार के अधिकांश लोग चेहरा तक नहीं देखा है कि मंत्री पुरुष है या महिला। लगता है कि इन लोगों को ईमानदारी, संस्कार, मोदी द्वारा चलाई जा रही योजनाओं, पंडित दीनदयाल द्वारा बताई गई का रास्ता फिजूल दिखाई पड़ता है। इन लोगों का कार्य है नीतीश कुमार द्वारा दिया गया नारा जीरो टॉलरेंस और सुशासन का नारा लगवाते रहो, माला पहनते रहो, गमछा ओढ़ते रहो। फतुहा गोविंदपुर में 1884 का निर्मित पुल 20 मई 2021 को टूट गया था। निर्माण के कौन कहे आज तक देखने तक नहीं गए। भाजपा के लोग बाध्य होकर 27 मार्च को पूल के निकट सांकेतिक धरना देंगे इसके बावजूद मौनी बाबा बना रहा तो तथा 21 अप्रैल 2022 से आमरण अनशन करेंगे। कितना शर्मनाक है कि सत्ता धारी कार्यकर्ताओं को पुल निर्माण के लिए आमरण अनशन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। ऐसे स्थिति में मंत्री महोदय को ढकनी भर पानी में डूब मरना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसे लोगों को सुधरने एवं विकास के लिए लगभग 7 साल मौका दिया तथा लगभग 200 से ज्यादा योजनाएं दिया परंतु अधिकांश योजनाएं कागजों में ही सिमट कर रह गया है। प्रधानमंत्री कहते हैं कि भ्रष्टाचार दीमक के तरह खोखला कर रहा है बावजूद अधिकांश मंत्री मौनी बाबा बना हुआ है, सुनने को तैयार नहीं है। चर्चा पर विश्वास करें तो कमीशन के फेर में पुल निर्माण नहीं कराया जा रहा है। शायद लगता होगा कि फतुहा की जनता कमीशन लेने नहीं देगा। सदियों पुराना पुल निर्माण फिजूल मंत्री को समझ में आता है। ●

चौकीदारी व्यवस्था को दुरूस्त किया जाये

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

अंग्रेजो ने प्रत्येक मुहल्ले में चौकीदार की व्यवस्था किया था। चौकीदार की जिम्मेदारी थी रात्रिकालीन में पहरा देना। गांव में शांति व्यवस्था बनाए रखना। सप्ताह में एक बार गांव की वस्तु स्थिति से थाना को अवगत कराना। गांव में किसी के यहां अजनबी लोगों के आने पर नजर रखना तथा गांव में किसी तरह की घटना होने की आशंका से थाना को अवगत कराना। इतनी बड़ी जिम्मेदारी रखने वाले चौकीदार को शहर के बैंक, पोस्ट ऑफिस एवं सरकारी अधिकारी के निवास स्थान की देखरेख में लगा दी जाती है। क्या यही कारण विस्टन चर्चिल ने कहा था कि भारत अभी आजादी के काबिल नहीं है। आजादी के पूर्व ब्रिटेन में अंतिम बैठक हुआ था कि भारत को आजादी दी जाए या नहीं? विस्टन चर्चिल ने कहा था भारत आजादी के काबिल नहीं है, आजादी देने का मतलब है भारत को अपराधियों के हवाले कर देना। उन्होंने कहा कि अभी ठेकेदारी प्रथा नहीं है, अभी 80 साल के

लिए भवन, पुल आदि निर्माण किया जाता है वह सौ साल से भी ज्यादा टिकाउ होता है। आजादी के बाद ठेकेदारी प्रथा शुरू होगी वह भवन, पुल आदि निर्माण काल में ही ध्वस्त हो जायेगा। कुछ निर्माण के कुछ दिनों के बाद ध्वस्त हो जायेगा। आज मेरा एक चौकीदार से अपराधी में जितना भय होता है। इतना भय बड़े बड़े पुलिस अधिकारियों से नहीं होगा। लाशों की कतार सजेगी पुलिस भी मारी जाएगी। चारों तरफ हाहाकार मचेगी। भारत से गए हुए नेताओं ने कहा कि चाहे जो भी हो मुझे आजादी मिलनी चाहिए। आज विंस्टन चर्चिल की बातें सच साबित हो रही है। आज पुरा बिहार अपराध की नगरी बन चुकी है। भाजपा मीडिया प्रभारी डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह ने कहा कि चौकीदार की नियुक्ति नहीं होने के कारण ही गांव में हो रहे अपराधों की सही जानकारी थाने तक नहीं पहुंचती है इसलिए जरूरत इस बात की है कि उन्हें प्रत्येक गांव में कम से कम 2 चौकीदार की नियुक्ति की जाए। परिणाम यह होगा कि अपराधियों में भारी कमी आएगी अच्छे और बुरे की जानकारी थाने को मिलती रहेगी। ●

राजगीर को मिला जू सफारी का सौगात

मुख्यमंत्री ने 480 एकड़ क्षेत्र में नवनिर्मित जू सफारी को आम लोगों के लिये किया समर्पित
जू सफारी में जानवर खुले में विचरण करेंगे और पर्यटकों को वाहन में बिठाकर घुमाया जाएगा

● **मिथिलेश कुमार/ललन कुमार**

सूबे के नालन्दा जिला के राजगीर में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहारवासियों को नई सौगात दिया है। मुख्यमंत्री ने राजगीर में शिलापट्ट का अनावरण एवं फीता काटकर राजगीर में जू सफारी (वन्य प्राणी सफारी) का लोकार्पण किया। गौरतलब है कि वन्य प्राणी सफारी 480 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। सफारी के निर्माण में 176 करोड़ रुपये की लागत आयी है। राजगीर सफारी निर्माण में गुणवत्ता एवं उच्चस्तरीय पर्यटक सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया है और इस प्रकार की सफारी देश में 1-2 जगह पर ही उपलब्ध हैं। मुख्यमंत्री ने जू सफारी परिसर में स्थापित भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। वन्य प्राणी सफारी प्रांगण में लगी वन्य जीवों की प्रतिमा, टिकट काउंटर, व्याख्या केंद्र एवं कंट्रोल रूम का उद्घाटन कर मुख्यमंत्री ने इसका मुआयना भी किया। मुख्यमंत्री ने टिकट काउंटर, व्याख्या केंद्र, कंट्रोल रूम आदि में पर्यटकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं एवं गतिविधियों की पूरी जानकारी अधिकारियों से ली। कंट्रोल रूम में सी0सी0टीवी के जरिये जू सफारी में प्रदर्शित हो रही सभी वन्य प्राणियों एवं पर्यटकों की गतिविधियों का मुआयना करते हुये मुख्यमंत्री ने इनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने का निर्देश दिया। व्याख्या केंद्र में मानव के विकास क्रम और वन्य जीवों के जीवन चक्र से जुड़ी प्रतिमा एवं इस संबंध में एल0ई0डी0 स्क्रीन पर प्रदर्शित हो रही विशेष जानकारी के साथ-साथ वन्य प्राणी की विभिन्न प्रजातियों से मुख्यमंत्री अवगत हुए। 180 डिग्री थ्री-डी थियेटर में मुख्यमंत्री के समक्ष ''द ओसियन बॉयोस्कोप'' फिल्म प्रदर्शित की गई। राजगीर जू सफारी में पर्यटकों हेतु उपलब्ध सुविधाओं, भ्रमणीय वन्य क्षेत्र, बस सफारी में भ्रमण के दौरान सुरक्षा के लिहाज से पर्यटकों द्वारा बरती जाने वाली सावधानी, वन्य प्राणी की गतिविधि पर आधारित लघु फिल्म भी मुख्यमंत्री के समक्ष प्रदर्शित की गई। लोकार्पण के पश्चात् टिकट काउंटर से पहले विजिटर के तौर पर टिकट लेकर मुख्यमंत्री ने राजगीर जू-सफारी में परिचालित सफारी बस (पर्यटक वाहन) से जू सफारी का भ्रमण किया। मुख्यमंत्री राजगीर जू सफारी को विकसित करने में उत्कृष्ट योगदान देने वाले क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षक पटना श्री गोपाल सिंह, निदेशक राजगीर जू सफारी श्री हेमंत पाटिल, उप निदेशक राजगीर जू सफारी श्री अंबिका शरण सिन्हा, वन्य जीव विशेषज्ञ राजगीर जू सफारी डॉ0 डी0एन0 सिंह, पशु चिकित्सा

पदाधिकारी राजगीर जू सफारी श्री दिलीप कुमार जू बैठा सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी एवं वनरक्षियों को प्रशस्ति पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। प्रधान सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, श्री दीपक कुमार सिंह को स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका स्वागत किया। पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर जू सफारी के. उद्घाटन हुआ है, यह बड़ी खुशी की बात है। वर्ष 2016 में जू सफारी का शिलान्यास किया गया था। इसके बाद इसका डिजाइन बना और इसको लेकर विभाग काफी सक्रिय रहा। शिलान्यास के बाद निर्माणाधीन जू सफारी का हमें अनेक बार अंदर से देखने का मौका मिला है। उसी समय हमने कहा था कि नेचर सफारी जो यहां बन रहा है, उसके बगल में काफी वन क्षेत्र है इसलिए यहां जू सफारी भी बने। नेचर सफारी को काफी लोगों ने पसंद किया है। अब जू सफारी भी लोगों को काफी पसंद आयेगी। यह बहुत खुशी की बात है कि राजगीर जू सफारी में टिकट विंडों, कंट्रोल रुम, इटरप्रेटेशन सेंटर, 180 डिग्री थियेटर, ओरिएंटेशन हॉल आदि का निर्माण पूरा हो चुका है। यहां पर्यटकों के लिए फोटो एवं सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया है। पर्यटकों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी जरुरी काम किये गये हैं। बाघ, शेर, भालू, तेंदुआ और हिरण को यहां रखने का निर्णय हुआ है। हिरण यहां पहले से थे, जिन्हें हर्बीवोरस सफारी में रखा गया है। इन जानवरों के लिए पाँच अलग-अलग बड़े इन्क्लोजर (बाड़े) बनाए गए हैं जिनमें पर्यटक सुरक्षित वाहनों में बैठकर जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक वातावरण में नजदीक से देख सकेंगे। उन्होंने कहा कि जू सफारी बनाने का मकसद यह है कि यहां जानवर खुले में विचरण कर सकें और देखने वाले वाहन में

बैठकर इसका आनंद लें सकें। राजगीर जू सफारी में पर्यटकों के भ्रमण के लिए 20 वाहन खरीदे गये हैं। एक वाहन में 22 पर्यटक बैठकर भ्रमण कर सकते हैं। फिलहाल राजगीर जू सफारी में 2 बाघ, 7 शेर, 2 तेंदुआ, 2 भालू एवं 200 के करीब की संख्या में हिरण हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां पर जब नेचर सफारी बनाने की बात हुई तो हमने प्रधानमंत्री जी से इस संबंध में बात की थी। हमने कहा कि नेचर सफारी में शेर सफारी बन रहा है। बाहर से 6 शेर लाये गये हैं। प्रधानमंत्री जी की बड़ी कृपा है। मैं उनका सम्मान करता हूं और उन्हें धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मेरी बातों को सुना। तामिलनाडू से एक बाघ मिलने की उम्मीद है। महाराष्ट्र से भी वन्य जीवों को लाने के लिए बात हो रही है। जू सफारी में पांचों प्रकार के जानवरों की सुरक्षा, भोजन, आवासन एवं चिकित्सा का पूरा प्रबंध किया गया है। यहां इंट्री प्वाइंट बन गया है। हर्बीवोरस सफारी, लेपर्ड सफारी, टाइगर सफारी सहित पांचों जगहों पर इंट्री प्वाइंट बन गया है। जू सफारी के भ्रमण में करीब डेढ़ घंटे का समय लगेगा। अब पर्यटक यहां आकर जू सफारी का भ्रमण कर सकेंगे। यहां जो खाली जगह है उस पर वृक्षारोपण कराया जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां जो नेचर सफारी बना है, वहां तक जाने के लिये सोन भंडार और जरासंध के अखाड़े को पार करना पड़ता है। इसको ध्यान में रखते हुए जू सफारी की बाउंड्री के बगल से नेचर सफारी तक सुगमतापूर्वक आवागमन हेतु रास्ता बनाया जायेगा। सोन भंडार और जरासंध का अखाड़ा ऐतिहासिक स्थल है, जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक पहुचते हैं। जू सफारी के बगल से अच्छी बाउंड्री बनायी जायेगी ताकि आसानी से पर्यटक नेचर सफारी तक पहुंच सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां बना ग्लास स्काई वॉक भी काफी लोकप्रिय हो गया है जो देश में कहीं नहीं है। वर्ष 2009 के दिसंबर माह में हमने यहां 7 दिनों तक रहकर एक-एक जगहों का मुआयना किया था। घोड़ाकटोरा में ईको टूरिज्म को बढ़ावा दिया गया है। वहां भगवान बुद्ध की प्रतिमा लगवायी गई है। घोड़ाकटोरा प्रांगण में पर्यटकों के आवागमन हेतु ई-रिक्शा का परिचालन कराया गया है। इसके लिए यहां के टमटम चालकों को निःशुल्क ई-रिक्शा मुहैया कराया गया। यहां पार्क का भी निर्माण कराया गया है। वेणुवन में भगवान बुद्ध रहा करते थे, जिसे विकसित एवं विस्तारित किया गया है ताकि नई पीढ़ी के लोग यहां आकर इससे अवगत हो सकें। पांडू पोखर का भी सौंदर्याकरण किया गया है। यहां जो पंच पहाड़ी है उसका संरक्षण किया जा रहा है एवं यहां पर पौधारोपण का कार्य भी कराया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि

बिहार के बोधगया एवं गया के बाद सबसे ज्यादा पर्यटक राजगीर आते हैं। पूरे बिहार में पर्यटन को बढ़ावा देने का कार्य किया गया है। कोरोना काल के पहले तक प्रतिवर्ष बिहार में करीब 2 करोड़ ट्रक आते थे। उन्होंने कहा कि राजगीर, गया, बोधगया एवं नवादा में गंगा नदी का जल बारहों महीने घर-घर तक उपलब्ध कराने का कार्य बड़े पैमाने पर किया जा रहा है ताकि लोगों को जल संकट की स्थिति का सामना नहीं करना पड़े। नालंदा विश्वविद्यालय के लिए भी काम किया गया। बिहार में पहला अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर राजगीर में बनवाया गया इसे भूलियेगा मत। यह काफी लोकप्रिय हो गया है। अब देश के अन्य हिस्सों से भी लोग आकर यहां मीटिंग करते हैं। बिहार का दूसरा कन्वेंशन सेंटर पटना में सम्राट अशोक के नाम पर बनाया गया। अब बोधगया में बोधि सांस्कृतिक गृह का निर्माण किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बचपन से हम यहां कुंड में नहाने आते रहे हैं। राजगीर में पाँच समुदाय से जुड़े ऐतिहासिक स्थल हैं। हर धर्म के लोग यहां आते हैं। यहां पंच पहाड़ी के चारों तरफ जो साइक्लोपियन वॉल है, यह दुनिया में एक ही जगह है। विश्व धरोहर की सूची में नालंदा विश्वविद्यालय के बाद इसको शामिल कराने के लिए हमलोग प्रयासरत हैं। इसको लेकर केंद्र सरकार से भी अनुरोध किया गया है। उन्होंने कहा कि राजगीर का काफी विकास किया गया है। मेरा मकसद है कि यहां आकर नई पीढ़ी के लोगों को एक-एक चीजों का एहसास हो। राजगीर आकर लोग जू एवं नेचर सफारी का भ्रमण कर प्रकृति से जुड़ाव महसूस करेंगे। यहां 50 साल पहले विश्व शांति स्तूप बना था। वहां नये रोपवे का निर्माण कराया गया है। उन्होंने कहा कि पर्यटन को बढ़ावा मिलने से राजगीर का और विकास होगा। इससे बिहार का भी उत्थान होगा एवं देश को भी फायदा होगा। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री सह नालंदा जिले के प्रभारी मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी, मंत्री पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन श्री नीरज कुमार सिंह, सांसद श्री कौशलेंद्र कुमार, विधायक श्री कौशल किशोर, विधायक श्री प्रेम कुमार (मुखिया), प्रधान सचिव पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन श्री दीपक कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव सह प्रभारी सचिव नालंदा श्री अनुपम कुमार, आयुक्त पटना प्रमंडल श्री कुमार रवि, पुलिस महानिरीक्षक पटना श्री राकेश राठी, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, जिलाधिकारी नालंदा श्री शशांक शुभंकर, पुलिस अधीक्षक नालंदा श्री अशोक मिश्रा, निदेशक जू सफारी श्री हेमंत पाटिल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं वरीय अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात् मुख्यमंत्री ने राजगीर जू सफारी के एंट्री पॉइंट से नेचर सफारी तक सुगमतापूर्वक आवागमन हेतु प्रस्तावित रास्ते का स्थल निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने नेचर सफारी तक जाने वाले प्रस्तावित रास्ते के दोनों तरफ बाउंड्री वाल बनाने का अधिकारियों को निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि बाउंड्री वॉल की ऊंचाई इस प्रकार से होनी चाहिए ताकि कोई चाहकर भी बाउंड्री वॉल पार न कर सके। पर्यटक वन्यजीवों को करीब से देखने एवं प्रकृति की मनोरम घटा और वादियों का आनंद लेने के लिये देश ही नही विदेशी पर्यटक भी राजगीर का रुख करते हैं और जीवन का आनन्द प्राप्त करते है। ●

बुद्ध सर्किट से जुड़ने के बाबजूद नही हो सका क्षेत्र का विकास

● **मिथिलेश कुमार**

गया ज्ञान और मोक्ष की धरती रही है।किवदंती मान्यता है कि भगवान बुद्ध को बोधगया में महाबोधि बट वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी तथा ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने पूरे विश्व में अहिंसा और शांति का पैगाम दिया था। बिहार की राजधानी पटना के दक्षिणपूर्व में लगभग 110 किलोमीटर दूर स्थित बोधगया गया जिले से सटा एक छोटा शहर है। बोधगया में बोधि पेड़ के नीचे तपस्या कर रहे भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तभी से यह स्थल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्ष 2002 में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया। करीब पांच सौ ई.पू. में गौतम बुद्ध फाल्गु नदी के तट पर पहुंचे और बोधि पेड़ के नीचे तपस्या करने बैठे। तीन दिन और रात के तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद से वे बुद्ध के नाम से जाने गए। इसके बाद उन्होंने वहां 7 हफ्ते अलग अलग जगहों पर ध्यान करते हुए बिताया और फिर सारनाथ जा कर धर्म का प्रचार शुरू किया। बुद्ध के अनुयायिओं ने बाद में उस जगह पर जाना शुरू किया जहां बुद्ध ने वैशाख महीने में पुर्णिमा के दिन ज्ञान की प्रप्ति की थी। धीरे धीरे ये जगह बोधगया के नाम से जाना गया और ये दिन बुद्ध पुर्णिमा के नाम से जाना गया। लगभग 528 ई. पू. के वैशाख (अप्रैल-मई) महीने में कपिलवस्तु के राजकुमार गौतम ने सत्य की खोज में घर त्याग दिया। गौतम ज्ञान की खोज में निरंजना नदी के तट पर बसे एक छोटे से गांव उरुवेला आ गए। वह इसी गांव में एक पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान साधना करने लगे। एक दिन वह ध्यान में लीन थे कि गांव की ही एक लड़की सुजाता उनके लिए एक कटोरा खीर तथा शहद लेकर आई। इस भोजन को करने के बाद गौतम पुन: ध्यान में लीन हो गए। इसके कुछ दिनों बाद ही उनके अज्ञान का बादल छट गया और उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब वह राजकुमार सिद्धार्थ या तपस्वी गौतम नहीं थे बल्कि बुद्ध थे। बुद्ध जिसे सारी दुनिया को ज्ञान प्रदान करना था। ज्ञान प्राप्ति के बाद वे अगले सात सप्ताह तक उरुवेला के नजदीक ही रहे और चिंतन मनन किया। इसके बाद बुद्ध वाराणसी के निकट सारनाथ गए जहां उन्होंने अपने ज्ञान प्राप्ष्ति की घोषणा की। बुद्ध कुछ महीने बाद उरुवेला लौट गए। यहां उनके पांच मित्र अपने अनुयायियों के साथ उनसे मिलने आए और उनसे दीक्षित होने की प्रार्थना की। इन लोगों को दीक्षित करने के बाद बुद्ध राजगीर चले गए। इसके बुद्ध के उरुवेला वापस लौटने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद उरुवेला का नाम इतिहास के पन्नों में खो जाता है। इसके बाद यह गांव सम्बोधि, वैजरसना या महाबोधि नामों से जाना जाने लगा। बोधगया शब्द का उल्लेख 18 वीं शताब्दी से मिलने लगता है।

विश्वास किया जाता है कि महाबोधि मंदिर में स्थापित बुद्ध की मूर्त्ति संबंध स्वयं बुद्ध से है। कहा जाता है कि जब इस मंदिर का निर्माण किया जा रहा था तो इसमें बुद्ध की एक मूर्त्ति स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया था। लेकिन लंबे समय तक किसी ऐसे शिल्पकार को खोजा नहीं जा सका जो बुद्ध की आकर्षक मूर्त्ति बना सके। सहसा एक दिन एक व्यक्ति आया और उसे मूर्त्ति बनाने की इच्छा जाहिर की। लेकिन इसके लिए उसने कुछ शर्त्तें भी रखीं। उसकी शर्त्त थी कि उसे पत्थर का एक स्तम्भ तथा एक लैम्प दिया जाए। उसकी एक और शर्त्त यह भी थी इसके लिए उसे छ: महीने का समय दिया जाए तथा समय से पहले कोई मंदिर का दरवाजा न खोले। सभी शर्त्तें मान ली गई लेकिन व्यग्र गांव वासियों ने तय समय से चार दिन पहले ही मंदिर के दरवाजे को खोल दिया। मंदिर के अंदर एक बहुत ही सुंदर मूर्त्ति थी जिसका हर अंग आकर्षक था सिवाय छाती के। मूर्त्ति का छाती वाला भाग अभी पूर्ण रूप से तराशा नहीं गया था। कुछ समय बाद एक बौद्ध भिक्षु मंदिर के अंदर रहने लगा। एक बार बुद्ध उसके सपने में आए और बोले कि उन्होंने ही मूर्त्ति का निर्माण किया था। बुद्ध की यह मूर्त्ति बौद्ध जगत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त मूर्त्ति है। नालन्दा और विक्रमशिला के मंदिरों में भी इसी मूर्त्ति की प्रतिकृति को स्थापित किया गया है। प्राचीन डूंगेश्वरी गुफा मंदिर 12 किलोमीटर की दूरी पर गया के उत्तर पूर्व में स्थित हैं। इन गुफा मंदिरों को महाकाल गुफा मंदिरों के नाम से भी जाना जाता है। यह स्थान बौद्ध धर्म के लोगों के लिए उच्च श्रद्धा का धार्मिक स्थल है क्योंकि उनका मानना है कि भगवान गौतम बुद्ध ने बोध गया जाने से बहुत पहले इन गुफाओं में ध्यान लगाया था। यह गुफाएं काफी जटिल प्रतीत होती है और बौद्ध प्रतिमा को प्रदर्शित करती है। इन गुफा मंदिरों के अस्तित्व के पीछे एक दिलचस्प कहानी है, जिसमें कहा गया है कि गौतम बुद्ध अपनी तपस्या के दौरान, बेहद कमजोर और भूखे हो गए थे। उस समय, पास के गाँव की सुजाता नाम की महिला ने उन्हें जलपान कराया था। यह माना जाता है कि भगवान बुद्ध को यही से मध्यम मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ था। दो छोटे मंदिर इस घटना की याद में यहाँ बनाये गए है। मूलत: यह हिन्दू धर्म से जुड़ी गुफाएँ हैं जो हिन्दू देवी डुंगेश्वरी नाम से विख्यात है। वर्तमान समय में कोरोना के वजह से पर्यटकों का आगमन नही के बराबर हो रहा है। मंदिर के पुजारी चंदन पाठक ने बताया कि बीते दो बर्षो से कोरोना के कारण पर्यटकों

का आना जाना बंद है जिसके कारण यहां के स्थानीय लोगों और पूजा सामग्री बेचने वाले दुकानदारों पर पड़ी है।

पर्यटकों की सुरक्षा के लिये कोई पुलिस चौकी या स्थायी पोस्ट नही बनाया गया है। पहाड़ और जंगल होने के कारण अभी यह स्थान सुनसान है। इक्का दुक्का पर्यटक ही यहां आतें हैं। बिजली की व्यवस्था मंदिर परिसर क्षेत्र में है परन्तु पेयजल की व्यवस्था नही रहने के कारण पर्यटकों और बुद्ध के अनुयायियों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

श्री पाठक ने बताया कि यहां थाईलैंड, नेपाल, श्रीलंका, कम्बोडिया, भूटान सहित दर्जनों देशों के पर्यटक यहाँ आते हैं। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पूर्व इसी गुफा में तपस्या किया था इसके बाद उन्होंने बोध गया पहुंच ज्ञान की प्राप्ति कर बुद्ध भगवान बनें। सरकार के द्वारा क्षेत्र का विकास किया जाय तो आने वाले दिनों में पर्यटकों के लिये असीम सम्भावनाये होगी और क्षेत्र के लोगों को रोजगार भी उपलब्ध होगा। ●

वैभवों का खान कहा जाने वाला मठ

लड़ रहा अस्तित्व की लड़ाई

● राजेश प्रसाद/मनीष कुमार कमलिया

शैक्षणिक व धार्मिक आस्था का केन्द्र रहे प्रखंड मुख्यालय के बुधौली गांव में स्थित मठ वर्तमान समय में अपनी दुर्दशा पर रोने को विवश है। चोरो ने मठ से कई किमती आभुषण लुट लिया। इसके अधिकांश जमीनों पर ग्रामवासियों का अवैध कब्जा है। प्रशासनिक उपेक्षा से भवन की स्थिति दयनीय हो गई है। कभी शान हुआ करती थी, जहां दुर-दुर से बुद्विजीवियो एंव विद्वानों का जमावड़ा मठ में लगा रहता था आज खुद अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ रही है। वर्तमान में मठ का देख रेख महंथ यशवंतपुरी जी महाराज के द्वारा किया जा रहा है। जहां उनके सहयोग में गांव के कई सारे लोग लगे होते है। मठ में विभिन्न महथों के बीच 18 वर्षों से सेवा दें रहें साधुशरण सिंह पूर्व में मठ के शान-शौकत की चर्चा करते काफी उतेजीत दिखते है। अपने उम्र के ढ़लते दौर में भी मठ की पूर्ण सुरक्षा की गारंटी देते हुए बताते है कि मठ को सुरक्षित रखने में उनका भी अभूतपूर्व योगदान है। श्री सिंह की माने तो मठ का निर्माण महानिर्वाणी अखाड़ा सकसोहरा के महंथ गणपतपुरी के द्वारा किया गया था जहां इसे आकर्षक रूप दिया गया। भवन के चार फीट का निर्माण का काम महंथ लक्ष्मी नारायणपुरी ने की। महंथ दलवीर पुरी के द्वारा 12 बीघे का तालाब का निर्माण किया गया जहां देश के पवित्र नदियों का जल इस तालाब में डाले गये तालाब के समीप मंदिर का निर्माण तथा भवन के प्रथम तल्ला का पुर्ण निर्माण किया गया। वहीं महंथ दलवीरपुरी ने ही अपने कार्यकाल में योग्य प्रतिनिधि होने के आधार पर महंथ रामधनपुरी को मठाधीश बनाया गया जहां इनके अधीनस्थ दिऔरा, भडाजोर, महकार, सहित कई मौजे की खरीदारी की गई। 1961 में इनके देहान्त के बाद डॉ0 सूर्य प्रकाश नारायण पुरी मठ के स्वामी बने जो तत्कालिन गया जिले से सांसद थे।

इन्होंने लगभग 300 एकड़ जमीन एवं 5 लाख रूपये नगद देकर मगध विश्वविद्यालय की स्थापना की । इन्होंने ही बुधौली इंटर विद्यालय, कृष्ण मेमोरियल हॉल नवादा को भूमि प्रदान कर अस्तित्व में लाया। इनके उपरांत मठ के स्थिति दयनीय हो गई डॉ0 सूर्य प्रकाश नारायण पुरी ने मठ का देख रेख तत्कालिन सीओ रामेंन्द्र शर्मा को सोपा गया जिन्होंनें गरीबो और वंचितो के बीच मठ का लगभग 131 एकड़ जमीन बाट दिया गया। घटना को बताते हुए बिजली विभाग से सेवा निर्वित हो चुके साधु शरण सिंह की मानें तो वंचितो और गरीबों को मिलने वाले जमीन लोगों ने औने-पौने भावो में बेच दिए गये। मठ का देखरेख महंथ यशवंतपुरी के द्वारा किया गया। वहीं बुधौली मठ में ही रहकर इनके द्वारा विभिन्न मौजो का भी देखभाल किया जाता था। फिलहाल महंथ जी के बीमार होने से सारे काम वाधित है। श्री सिंह के माने तो बुधौली मठ के द्वारा लगभग 46 एकड़ की भूमी का लगान दिया जाता है जबकि मात्र 20 एकड़ भूमि पर ही मठ का कब्जा है। चोरो के उत्पात से मठ से कई किमती आभूषणों की चोरी लगातार होती रही है जबकि इसकी सुरक्षा में प्रशासन तंत्र विफल है जिसके कारण धार्मिक आस्था का केन्द्र रहने वाला मठ अपने अतीत को संजोने में भी असफल प्रतित हो रहा है। श्री सिंह की मानें तो मठ को धार्मिक न्यास वोर्ड, साधु समाज पटना के अधिनस्त करने के लिए महंथ यशवंतपुरी लगे है। स्थिति चाहें जो हो परंतु सभ्यता और सांस्कृतिक को संजोने वाला प्रखंड मुख्यालय का एक मात्र मठ अपनी दुर्दशा से खिन्न है। स्थिति यथावत रही तो वह दिन दुर नहीं जब लोग मठ के एतिहासिक धरोहर की जानकारी से अक्षुण्य रह जाऐगे। ●

बिहार योग विद्यालय मुंगेर

दुनियां में योग और आध्यात्म का अलख जगाता एक शहर!

● राजेश प्रसाद/मनीष कुमार कमलिया

दुनिया के इतिहास में महामारी और संक्रमण से उपजी मृत्यु की त्रासदी ने कई मौकों पर मानव सभ्यता के अपराजेय पराक्रम और अनियंत्रित और बेलगाम विकास-वैभव को चुनौती दी है। तकरीबन सौ साल पहले वर्ष 1918-20 का कालखंड स्पेनिश फ्लू से होने वाली भयावह इंसानी मौतों की एक मनहूस तारीख है! प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद युद्ध की विभीषिका झेल चुके देश और दुनिया के जिंदा और जख्मी सिपाही **''स्पेनिश फ्लू''** जैसी अदृश्य, रहस्यमयी और अज्ञात बीमारी से बेखबर अपने बैरकों और घरों की ओर लौट रहे थे। इस बीमारी के घातक संक्रमण और कहर से पूरी दुनिया में अमूमन पांच करोड़ों लोगों की जानें चली गई जो उस समय दुनिया की एक तिहाई आबादी थी। अंग्रेजों की दासत्व की शिकार अकेले गुलाम भारत में तकरीबन एक करोड़ अस्सी लाख लोग दुनिया से रुखसत हो गए जो पूरी दुनिया में सबसे अधिक थी। 49 वर्षीय गांधी (1918-20 में) भी स्पेनिश फ्लू से अछूते नहीं रहे और उनके पुत्रवधू गुलाब और पोते शांति असमय काल के ग्रास बन गए। हिंदी साहित्य सम्राट और कालजयी रचनाकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पत्नी और उनके परिवार के कई सदस्य इस संक्रमण से काल कलवित हो गए। परिवार के कई सदस्यों के असमय गुजर जाने से महारचनाकार निराला की रचनाओं में उनकी वेदना, तड़प और बेबसी साफ नजर आती है! कोरोना के मौजूदा संकट में अस्पतालों और श्मशानों में रोगियों और मृतकों की अंतहीन कतारें, ऑक्सीजन की किल्लत में रोगियों की उखड़ती सासें, शोकाकुल परिजनों की बदहवास हालात, नदियों में तैरती लावारिस लाशें, हर तरफ पसरी उदासी, मौत, खौफ और खामोशी का मंजर आज इतिहास की उसी घटना की पुनरावृति है! शायद ऐसे हीं खौफनाक वक्त में चौतरफा मुसीबतों और संकटों से घिरा एक आम आदमी योग, अध्यात्म और ईश्वर की शरण लेता है! दरअसल योग और अध्यात्म किसी विशेष धर्म-दर्शन की मीमांसा पर आधारित ईश्वर पाने का जरिया नही है, अपितु स्वस्थ जीवन-शैली और निरोग काया

पाने का सशक्त माध्यम है। बिहार में किऊल-भागलपुर रेल लाइन पर जमालपुर से तकरीबन सात मील दूर मुंगेर में गंगा दर्शन पर स्थित बिहार योग विद्यालय वर्ष 1963 से देश-दुनिया में योग और अध्यात्म की अलख जगा रहा है। हमारी सनातनी गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित यह योग संस्थान योग से जुड़े हर तरह के प्रचार-दुष्प्रचार-कारोबार से दूर आदमी को अध्यात्म और ईश्वर की दुनिया से एकाकार करता है। आज की यह किस्सागोई दुनिया के कई देशों में योग का पताका फहरा चुकी बिहार योग विद्यालय, मुंगेर को समर्पित है। अपने आध्यात्मिक और पौराणिक इतिहास को समेटे और गंगा के निश्चल और प्रवाहमान धारा के समानांतर बसा यह शहर और योग-केंद्र अपने वैभवशाली अतीत और विराट भविष्य की आवाज है। यह धरती इतिहास के सबसे बड़े योद्धा और दानवीर कर्ण की साधना और तपस्या की भूमि रही है। यह शहर शलाका पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम और माता सीता के वनवास खत्म होने पर अयोध्या लौटते वक्त उनकी शरण स्थली, पांडवों द्वारा संपन्न किए गए तंत्र-साधना तथा स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक चिंतन और अध्ययन का साक्षी रहा है। बिहार योग विद्यालय के संस्थापक स्वामी सत्यानंद सरस्वती के गुरु स्वामी शिवानंद सरस्वती ने मुंगेर में आए भूकंप के बाद वर्ष 1936 में राहत कार्य के सिलसिले में इस शहर से जुड़े रहे। योग और अध्यात्म की दुनिया के सिरमौर तथा पेशे से

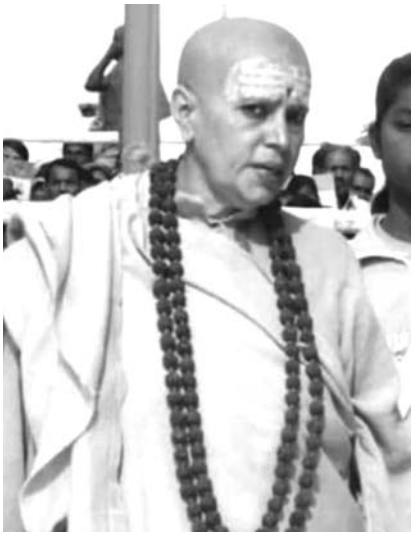

डॉक्टर स्वामी शिवानंद सरस्वती का जन्म 8 सितंबर 1887 को तमिलनाडु के तिरुनेवेली में हुआ था। मलय में 7 वर्षों की डॉक्टरी प्रैक्टिस के बाद वर्ष 1922 में भारत लौट आए और 1924 में उन्होंने स्वामी विश्वनंद सरस्वती से विधिवत दीक्षा ग्रहण करते हुए सन्यास जीवन में प्रवेश कर गए। समाज के बेहद, गरीब, लाचार, बेबस और निशक्त लोगों की निस्वार्थ सेवा उनके जीवन का मिशन बन गया। पाश्चात्य देशों से भिन्न हमारे देश की शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है। कालांतर में योग-दर्शन और संगीत जैसी विभिन्न विधाओं की शिक्षा परंपरा को इस देश में कई मनीषियों और गुरुओं ने समृद्ध किया। बिहार योग विद्यालय की संकल्पना और उद्देश्य इस मत और अवधारणा की बुनियाद है। अल्मोड़ा में जन्मे स्वामी सत्यानंद सरस्वती ने दशनामी परंपरा के अंतर्गत स्वामी शिवानंद सरस्वती से वर्ष 1947 में सन्यास ग्रहण किया और देश और दुनिया में जन-जन तक योग पहुंचाने के दीक्षा मंत्र के साथ उन्होंने 49 से अधिक देशों की यात्रा की। गुरु के इस मिशन और ध्येय को पूरा करने के लिए स्वामी सत्यानंद सरस्वती ने वर्ष 1963 में बिहार योग विद्यालय, मुंगेर की स्थापना की। वर्ष 1963 से 1983 तक उन्होंने दुनिया के कई देशों में योग का प्रचार-प्रसार और लाखों-लाख योग साधकों को प्रशिक्षित करते हुए कई योग केंद्र स्थापित किए। अनेक देशों के विविध मतों,जातियों और संप्रदायों के धर्मगुरुओं और आमजनों को उन्होंने योग-तंत्र-मंत्र-साधना की शिक्षा दी। योग-साधना और हमारी आध्यात्मिक परंपरा के प्रति उनकी तर्कसम्मत विवेचना, सम्यक दृष्टिकोण और प्रभावी शैली ने पूरी दुनिया में कई संप्रदायों के लोगों को उनका अनुयायी बना डाला। यौगिक क्रिया में ''योग निद्रा'' के जनक और प्रतिपादक तथा योग और तंत्र पर अस्सी से अधिक किताबों के लेखक स्वामी सत्यानंद सरस्वती की किताबें पूरे विश्व के कई विश्वविद्यालयों और स्कूलों में मानक पाठ्यपुस्तक (टेक्स्टबुक) के रूप में पढ़ाई जा रही हैं। उनकी 20 वर्षों की कठोर साधना और अथक प्रयास ने बिहार योग विद्यालय, मुंगेर को अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर सर्वोत्तम योग केंद्र के रूप में स्थापित कर दिया जो ''**सत्यानंद योग**'' के नाम से पूरी दुनिया में मशहूर हो गया। अंतरराष्ट्रीय जगत में योग के बारे में गुफाओं और कंदराओं में ऋषि-मुनियों द्वारा किए जाने वाले आसन की अवधारणा को उन्होंने महर्षि पतंजलि की योग साधना को विश्वव्यापी योग साधना और परंपरा के सिद्धांत में बदल डाला। सन्यास की उदात्त और महान परंपरा को शिरोधार्य करते हुए उन्होंने वर्ष 1983 में वैराग्य भाव से उस संस्थान का परित्याग कर दिया जिसकी उन्होंने नींव रखी थी और कालांतर में 1989 में रिखियापीठ(देवघर) की स्थापना की। समय-समय पर बिहार योग विद्यालय, मुंगेर में योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन और असाध्य तथा जटिल बीमारियों का शास्त्र-सम्मत योग साधना से पूर्णरूपेण उपचार एवं दुनिया में हर जगह ठुकराए जा चुके रोगियों में प्राण का संचार इसे दुनिया के किसी भी योग संस्थान से अलग करती है। बेहद तुच्छ और मामूली धनराशि(टोकन मनी) पर यहां के आवासीय योग कार्यक्रम जीवन में समग्रता, निरोगी काया और कठोर अनुशासन का पाठ पढ़ाती है। शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली, श्वसन तंत्र पाचन तंत्र, तंत्रिका तंत्र तथा मनोवैज्ञानिक सुदृढ़ता के लिए आयोजित होने वाले योग-साधना पाठ्यक्रम योग की दुनिया की सर्वोत्तम साधना प्रणाली है। किसी भी योग कार्यक्रम में बहुत बड़े पैमाने पर पाश्चात्य देशों के कई योग साधकों, शिक्षकों और कॉरपोरेट वर्ल्ड के बेताज बादशाहों द्वारा प्राणायाम- आसन-मुद्रा-बंध का विधिवत प्रशिक्षण और मंत्र साधना हैरत में डाल देता है! आश्रम की सधी जीवन-शैली और कठोर दिनचर्या सिद्धहस्त योग साधना की बुनियादी जरूरत है। एक विशेष ताल-लय और अटूट समर्पण के साथ मंत्रोच्चारण एक दिव्य और अलौकिक शक्ति का अहसास कराता है। ''आश्रम जीवन, योग और सत्संग कार्यक्रम'' के अंतर्गत दो बार मैंने योग के रहस्य और इसके आध्यात्मिक पहलू को गहराई से महसूस किया जो शब्दातीत है! आद्य गुरु शंकराचार्य की दशनामी परंपरा से दीक्षित, स्वामी सत्यानंद की गुरु परंपरा और उनसे मिली दिव्य-शक्ति से ओतप्रोत,तेईस भाषाओं के ज्ञाता और दुनिया के तकरीबन सौ से अधिक देशों में योग पीठ को स्थापित कर चुके पद्मभूषण स्वामी निरंजनानंद योग और अध्यात्म की दुनिया के सिद्ध पुरुष हैं और फिलहाल बिहार योग स्कूल के परमाचार्य हैं। मात्र 11 साल की उम्र में लंदन में चिकित्सकों के सम्मेलन में बायोफिडिक प्रणाली पर अपने विचारोत्तेजक भाषण में सबको चौका देने वाले स्वामी निरंजनानंद नासा द्वारा चुने गए उन 500 वैज्ञानिकों के दल में शामिल है जो दूसरे ग्रह पर मनुष्य के अस्तित्व से जुड़ी थ्योरी क्वांटम फिजिक्स और योग-अध्यात्म के संबंधों का अध्ययन कर रहे हैं। कोरोना से देश और दुनिया में होने वाली अनियंत्रित और क्रमवार मौतों ने एक बार फिर हमें थर्रा दिया है! घरों में सिमटे रहने को अभिशप्त और हर हमेशा अज्ञात भय तथा चिंता में जीने की विवशता ने हमे योग और अध्यात्म की दुनिया की ओर रूख करने को बाध्य किया है। शायद यही कारण है कि तकलीफों और मुश्किलों के समंदर में डूबा यह देश आज फिर हमें अपने प्राचीन योग-दर्शन और अध्यात्म की ओर प्रेरित कर रहा है। किस्सा अभी जारी है! ●

नारदीगंज प्रखंड को आदर्श विकसित प्रखंड बनाना हमारी प्राथमिकता होगी : अमरेश मिश्रा

राजगीर और बोधगया मार्ग पर स्थित नारदीगंज प्रखंड कई ऐतिहासिक धरोहरों से सुसज्जित है, ग्राम हंडिया का सूर्य मंदिर ओडो का मां बागेश्वरी और नागस्थान, धनिया मां पहाड़ी का शिव मंदिर, हरीनारायणपुर ग्राम का प्राचीन गढ़ और जियत पोखर द्वापर कालीन और ऐतिहासिक है, वही मधुबन का गर्म पानी का कुंड भी है, ए सारे स्थल जो सदियों से ऐतिहासिक पौराणिक, और धार्मिक स्थल के रूप में जाना जाता है, लेकिन इन पौराणिक स्थल आज भी विकास से उपेक्षित है, अगर इन पौराणिक स्थलों को बुद्ध सर्किट से, पर्यटक स्थल से जोड़ दिया जाए, तो जहां सरकार का राजस्व भी अधिक बढ़ेगा, वही नारदीगंज प्रखंड का भी नाम राष्ट्रीय स्तर पर भी जाना जाएगा, अभी नारदीगंज प्रखंड में एक कर्मठ ऊर्जावान, आत्मविश्वास, अनुभव के साथ ही प्रशासनिक दक्षता से परिपूर्ण है,और अपने कठिन मेहनत से कार्य करने वाले युवा सोच के प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा है, जो रजौली, और देव जैसे प्रखंडों में भी प्रखंड विकास पदाधिकारी का पद पर ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी को निर्वहन किए हैं, नारदीगंज प्रखंड इनके लिए एक चुनौतीपूर्ण प्रखंड होगा, क्योंकि नारदीगंज प्रखंड जहां बुद्ध सर्किट पर बसा हुआ है, वही कितने ग्रामों में भी विकास की गंगा नहीं वह पाई है, इन पौराणिक स्थलों का विकास मे उनकी भूमिका क्या होगी, पलायन आदि समस्याओं पर इनका फोकस क्या होगा, भारत सरकार और बिहार सरकार की योजनाएं आम जनता तक पारदर्शी तरीके से कैसे पहुंचे, बिचौलियों से मुक्त प्रखंड कैसे हो, इस पर हम रूबरू होते हैं, नारदीगंज प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी **अमरेश मिश्रा** से खास मुलाकात कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। प्रस्तुत है **अरविंद मिश्रा** की एक रिपोर्ट :-

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से पूछे, बता तेरी रजा क्या है'।

इन पंक्तियों को सच पूछा जाए तो इसका श्रेय जाता है नारदीगंज प्रखंड के काफी ऊर्जावान, दृढ़ संकल्पित, जुनून के पक्के, जिम्मेदारी के साथ अपने प्रशासनिक कार्यों को एक चुनौती के रूप में पूरा करने का जज्बा रखने वाले नारदीगंज प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा जी में हैं, 2021 में नारदीगंज का पदभार संभालने के बाद नारदीगंज प्रखंड को आदर्श , समृद्ध, विकसित प्रखंड कैसे बने इसके लिए दिन रात मेहनत कर रहे हैं, पहले प्रखंड कार्यालय में काफी कु-व्यवस्थाएं थी, अराजकता का माहौल बना हुआ था, अनुशासन तो था ही नहीं, प्रखंड अंतर्गत पदाधिकारी हो, या कर्मचारी, सिर्फ खानापूर्ति ही कार्यालय का कार्य करते थे, और कार्यालय अपने मन मुताबिक कार्यालय आते थे, नहीं आने पर भी कोई पूछने वाला नहीं था, लेकिन अपने प्रशासनिक दक्षता और विपरीत परिस्थितियों में चलते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा भी यह दिखा दिया की अनुशासन क्या है, और सभी पदाधिकारी जनता के हित के लिए काम करते हैं, तो उनको समय पर कार्यालय आना ही होगा, भले ही काफी विरोधाभास सहना पड़ा, लेकिन धुन के पक्के प्रखंड विकास पदाधिकारी के दृढ़ इरादे के आगे, सभी पदाधिकारियों को टीम वर्क में काम करना मजबूरी हो गया, फिर पंचायत चुनाव काफी शांतिपूर्ण चुनाव इनके नेतृत्व में हुआ,

जनता की समस्याओं को ऑन द स्पॉट करने की भावना है, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, मातृत्व लाभ, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, जन वितरण प्रणाली से मिलने वाली लाभ, इंदिरा आवास आदि जन उपयोगी योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंचे, इसके लिए सदैव तत्पर रहते हैं, समय-समय पर स्वयं विद्यालय का निरीक्षण करना, इंदिरा आवास से मिली शिकायतों पर स्वयं जाकर जांच करना, और प्रखंड स्तर पर कोई भी जनता की शिकायतें आती हो उसे निष्पादन करना उनकी प्राथमिकता है, सबसे बड़ी बात सूचना के अधिकार के तहत जितने भी सूचनाएं की मांग की जाती है,, प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा सूचनाएं उपलब्ध करवा दिया जाता है, नहीं तो जिस विभाग की सूचनाएं हो, उक्त विभाग के पदाधिकारी के यहां ट्रांसफर कर दिया जाता है।

प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा आगे बताते हैं कि, नारदीगंज प्रखंड राजगीर बोधगया मार्ग पर स्थित है, साथ ही इस प्रखंड के कई ग्रामों में, प्राचीन कालीन ऐतिहासिक मंदिर है, ऐतिहासिक धरोहरों से सुसज्जित कई स्थल है,जैसे हंडिया, का सूर्य मंदिर, धनिया मां पहाड़ी का शिव मंदिर, मधुबन का गर्म जल कुंड, ओरो का प्राचीन मां बागेश्वरी का मंदिर और नाग स्थान, कहूआरा पंचायत के हरीनारायणपुर ग्राम के जीयत पोखर, ऐतिहासिक और पुरातत्व स्थलों से भरा पड़ा है, और मेरा भरसक प्रयास रहेगा इन सारे धार्मिक को पौराणिक स्थलों के विकास के लिए, पर्यटन से जोड़ने के लिए, एक रिपोर्ट तैयार कर वरीय पदाधिकारियों के पास भेज रहा हूं, ताकि नारदीगंज प्रखंड भी पर्यटक स्थल से जुड़ जाए, इसके अलावा बल गंगा से पश्चिम बसे हुए महादलित ग्रामों में सीतारामपुर, सुंदरबन, गोपाल नगर जनकपुर रूस बीघा, विजयनगर, आदि ग्रामों के विकास के लिए ठोस योजना बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि इन क्षेत्रों में पहले आजीविका का मुख्य साधन पत्थर तोड़ कर जीवन यापन करना था, लेकिन विगत 20 वर्षों से सरकार के दिशा निर्देश के आलोक में पत्थर नहीं टूटने की वजह से ग्रामीणों को रोजगार के अभाव में जूझना पड़ रहा है, यहां इन ग्रामों में रोजगार गारंटी योजना का लाभ, साथ ही श्रमिक कार्ड, आयुष्मान कार्ड, आदि का लाभ अधिक से अधिक दिया जाएगा, ताकि किसी का पलायन नहीं हो, सीतारामपुर ग्राम में पानी की समस्याओं पर उन्होंने कहा की, इस संदर्भ में नवादा के जिलाधिकारी महोदय और कार्यपालक अभियंता को भी पत्र लिखकर वस्तुस्थिति से अवगत करवा कर यथा शीघ्र पानी की समस्याओं को समाधान करवाने का प्रयास करूंगा,आगे उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र का विकास तभी संभव होता है जब जिले के आदरणीय जिलाधिकारी सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों का, और जनप्रतिनिधियों का सहयोग होता है,

और इस मामले में हम सौभाग्यशाली हैं कि नवादा के जिलाधिकारी आदरणीय यशपाल मीणा सर का काफी सहयोग रहता है, एक अभिभावक की तरह मुझे सदा मार्गदर्शन मिलता है,आदरणीय जिलाधिकारी महोदय भी सदैव चाहते हैं, नवादा जिला भी हर क्षेत्र में विकसित और समृद्ध हो, उसके लिए स्वयं भी काफी कार्य करते हैं, आगे प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि सरकार की योजनाओं को पारदर्शी तरीके से जनता तक पहुंचाने के लिए लगातार पहल की जा रही है, इसके लिए हम लोग दृढ़ संकल्पित हैं, आरटीआई का कानून का उद्देश्य भ्रष्टाचार के कानून पर लगाम लगाना है, कोई भी व्यक्ति को कभी किसी भी कठिनाई हो तो अपनी बात आकर रख सकते हैं, प्रखंड स्तर पर काम करने वाले पदाधिकारी और कर्मचारी हो सब एक संयुक्त परिवार के रूप में हैं, हर की कार्यक्षमता अलग अलग होती है, कुछ लोग अपेक्षा से आगे बढ़कर काम करते हैं, जिनका जैसा फॉर्मेंस होगा, उनकी सर्विस बुक में उसी आधार पर बनेगी, हमें जनता का फीडबैक जरूरी है, नारदीगंज प्रखंड काफी ख्याति प्राप्त प्रखंड है इस की गरिमा बनी रहे, और नारदीगंज प्रखंड सभी के सहयोग से आदर्श समृद्ध प्रखंड हो, यहां भी देश विदेश से देशी विदेशी पर्यटक भी इन पवित्र स्थलों को देखें, नारदीगंज का स्वर्णिम इतिहास बने, इसके लिए हम सभी को मिलजुल कर कार्य करने की आवश्यकता है, अपने ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित रखना सभी की जिम्मेदारी है, आगे विकास की गंगा कितनी बहती है यह तो कहा नहीं जा सकता है, लेकिन एक युवा कर्मठ और न्याय प्रिय प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा में कुछ नया करने का जज्बा जरूर दिल में है। उन पर एक पंक्ति ने बहुत कुछ कह दिया, 'पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिन राहों में बिखरे शूल न हो, नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, जब धारा ही विपरीत ना हो।●

टहनी गिरने से बाइक सवार की मौत

● अब्दुल कय्यूम

अररिया रानीगंज मार्ग एन एच 327 पर वाजोखर के पास मंगलवार को एक पेड़ काटने के दौरान टहनी गिर जाने से बाइक सवार संतोष भगत की मौत हो गई। मृतक सुपौल का रहने वाला बताया गया हैं। जो वर्तमान में अररिया के शिवपुरी मोहल्ले में रहता था। इस के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क को जाम कर प्रदर्शन किया। इस दौरान आक्रोशित लोगों ने सड़क के किनारे रह रहे खानाबदोस के घरों को भी आग के हवाले कर दिया। सूचना पर अररिया एसडीओ शैलेश चंद्र दिवाकर व एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने घटना स्थल पर पहुच कर लोगो को समझा बुझा कर जाम तोड़वाया। तथा अग्निशामक वाहन को बुलाकर आग को बुझाया। मिली जानकारी के अनुसार सुपौल निवासी संतोष कुमार भगत अररिया में रहकर हलवाई का दुकान चलाता था। शिवपुरी में भाड़े के मकान में रहकर हलवाई का काम करता था। मंगलवार को वह अपनी बाइक से अररिया से अपने घर सुपौल जा रहा था। इसी क्रम में राजोखर के समीप पेड़ की टहनी सिर पर गिरने से घटना स्थल पर ही उनकी मौत हो गयी। बताया गया कि कुछ लोग पेड़ की टहनी काट रहे थे। अचानक टहनी गिर गयी। घटना की सूचना उनके परिजनों को मिलते ही घटना स्थल पर पहुच कर अररिया रानीगंज मार्ग को जाम कर प्रदर्शन करने लगे। इस दौरान आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क के किनारे रह रहे खानाबदोश के झोपड़ी को भी आग के हवाले कर दिया। मौके पर पहुंचे पुलिस पदाधिकारी शाहिद खान ने आग को बुझाने के लिए कमर कस ली और खुद बाल्टी में पानी लेकर आग को बुझाने लगे। अपने अधिकारी को आग बुझाता देख पुलिसकर्मी भी साथ में आग बुझाने में जुट गए बाद में दमकल के द्वारा आग पर काबू पाया जा सका। घटना की सूचना पर एसडीओ शैलेश चंद्र दिवाकर व एसडीपीओ पुष्कर कुमार घटना स्थल कर आक्रोशित लोगों को समझा बुझाकर प्रदर्शन को छोड़वाया। मृतक संतोष भगत के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं। मृतक की बहन ने रोते-रोते बताया कि मेरा भाई अकेला कमाने वाला था। अब छोटे-छोटे बच्चों को कौन देखेगा, हमें इंसाफ चाहिए और जिन लोगों की वजह से मेरे भाई की जान गई है उस पर सख्त कार्रवाई की जाए। ग्रामीणों ने खानाबदोस को यहां जल्द से जल्द खाली कराने की मांग की।●

आक्रोशित ग्रामीणों को समझते बुझाते एसडीओ व एसडीपीओ

दोस्त ने ही दोस्त की गला रेतकर कर दी हत्या

● अब्दुल कय्यूम

अररिया जिला के जोकीहाट के महलगांव थाना क्षेत्र के प्रसादपुर पंचायत के डुमरिया गांव में चुनावी रंजिश व आपसी विवाद को लेकर एक दोस्त ने अन्य साथियों के साथ मिलकर एक 30 वर्षीय युवक तारिक अनवर की गला रेत कर हत्या कर दी, इस के बाद शव को परमान नदी में फेंक दिया। घटना 15 फरवरी की बताई गई हैं। इस मामले को लेकर मृतक के पिता मोहम्मद इकबाल ने महलगांव थाना में 16 फरवरी को अपने पुत्र के अपहरण का मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने मामले के शीघ्र उद्भेदन करते हुए घटना में शामिल दो व्यक्ति को गिरफ्तार किया तथा उनके बताए गए चिन्हित जगह पर अपहृत युवक की लाश मसूरिया गाँव के पास परमान नदी में 17 फरवरी को तारिक के शव को भी बरामद किया गया। शव मिलते ही महलगांव क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। सभी लोग परमान नदी के पास पहुच गए। मृतक के शव को देखते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मौके पर पहुचे एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने स्थिति का जायजा लेते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिये सदर अस्पताल भेज दिया। जबकि पुलिस ने मृतक के बाईक को पूर्णिया जिले के जलालगढ थाना क्षेत्र के पीपरपांती गांव से लावारिश हालत में बरामद किया था। घटना के संबंध में एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने बताया कि मृतक के पिता मोहम्मद इकबाल के बयान के आधार पर बताया कि तारिक को 15 फरवरी की शाम मोबाइल पर किसी से बात कर रहा था। थोड़ी देर मे वह अपना बाईक बीआर 39-9055 पर सवार होकर घर से निकला। रात भर खोजे कुछ पता नहीं चला। सुबह मोबाइल किए। रिंग भी हुआ। इस के बाद उन्होंने महलगांव थाना में पुत्र के अपहरण का मामला दर्ज कराया। मामला दर्ज होते ही पुलिस ने त्वरित करवाई करते हुए शक के आधार पर दो व्यक्ति इस्तियाक व इम्तियाज को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार व्यक्ति इम्तियाज से सघन पूछ ताछ की गई तो उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। तथा बताया कि इस मामले का मास्टर माइंड इमरान था। उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर तारिक की गला रेत कर हत्या कर दिया था। तथा शव को परमान नदी में फेंक दिया था। पुलिस ने उनके बताए गए जगह परमान नदी से तारिक के शव को स्थानीय गोताखोर की मदद से बाहर निकाला गया। एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने बताया कि महलगांव पुलिस के द्वारा मामले का 24 घंटा में उदभेदन के लिये प्रशस्ति पत्र के लिये अररिया एसपी को लिखेंगे।●

हंगामेदार रही पंचायत समिति की बैठक

● अब्दुल कय्यूम

अररिया जिला के पलासी प्रखंड में 28 फरवरी को प्रखंड मुख्यालय स्थित सभा गार में पंचायत समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रमुख चिंता देवी ने की। बैठक में इंदिरा आवास, खाद्य आपूर्ति, मनरेगा, शिक्षा, बिजली, बाल विकास, जनवितरण, स्वस्थ्य विभाग,अंचल, कृषि सहित अन्य मुद्दों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। इस क्रम में पीएम आवास में सूची से कटे हुए नाम को फिर से जोड़ने का प्रस्ताव लिया गया। इस क्रम में राशनकार्ड बनाने में हो रही परेशानी, शिक्षा को बेहतर बनाने, मनरेगा में लेबर का पैसा दूसरे के खाते में जाने पर हंगामा हुआ। इस क्रम में मुखियो ने इस व्यवस्था को दुरुस्त करने का भी प्रस्ताव सदन में लिया गया। सदन में शिक्षको की उपस्थिति पर जोड़, एमडीएम संचालन पर जोड़ दिया गया। इस क्रम में डीलर द्वारा कम अनाज देने का भी मुद्दा छाया रहा। बैठक में मुखिया रूबी शोएब, मोहम्मद रागिब, मोहम्मद आदिल सहित अन्य मुखियो ने पंचायत के आरटीपीएस कार्यालय डोंगल उपलब्ध के कराने की मांग सदन में जोरदार पूर्वक उठाया। बैठक में बाल विकास की समीक्षा के क्रम में वॉचर पास करने में हो रही अबैध उगाही का भी मुद्दा छाया रहा। मुखियो ने शिविर लगाकर वॉचर पास करने की मांग सदन में रखी। कई। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने एजेंडा संबंधित विभाग के पदाधिकारियों के अनुपस्थित रहने पर शोकॉज पूछने का भी प्रस्ताव लिया गया। इस के अलावे अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई। बैठक में बीपीआरओ सह कार्यपालक पदाधिकारी भोलानाथ रॉय, बीईओ प्रतिमा कुमारी, एलएस जानकी देवी, रूपेश कुमार, बीपीएम धनंजय कुमार, उप प्रमुख मोहम्मद ताहिर, मुखिया मुर्शीद आलम, रूबी शोएब, मोहम्मद रागिब, मोहम्मद आदिल रेजा, कृपानंद सिंह सरदार, प्रभू चंद्र विश्वाश, राम प्रसाद चौधरी, महजबी खातुन, सुषमा कुमारी, तंजीला खातून, समद अली, राजू कुमार यादव, मसर्रत, मुखिया प्रतिनिधि मोहम्मद नासिर, जितेंद्र मल्लिक, मोहम्मद सोहराब आलम, पंकज मंडल आदि मौजूद थे। ●

आपराधिक तत्वों पर पैनी नजर रखने का एस.पी. का निर्देश

● अब्दुल कय्यूम

अररिया एसपी अशोक कुमार सिंह ने जोकीहाट व बैरगाछी ओपी का निरीक्षण किया। एसपी श्री सिंह के थाना पहुँचते ही पुलिस कर्मियों ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देकर सम्मानित किया। निरीक्षण के क्रम में एसपी अशोक कुमार सिंह ने जोकीहाट थाना पहुँच कर विभिन्न कांडों से संबंधित पंजियो का अवलोकन किया। तथा लंबित कांडों की समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में एसपी अशोक कुमार सिंह सभी पुलिस कर्मियों को डायरी को अधतन करने, तथा अपराध नियंत्रण करने, गश्ती दल को तेज करने का भी निर्देश दिए। निरीक्षण के क्रम में एसपी अशोक कुमार सिंह ने न्यायालय से जुड़े मामलों को शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया। इस के अलावे शराब तस्करों पर लगाम लगाने, वाहन चेकिंग करने व फरार आरोपियों को गिरफ्तार करने का निर्देश थानेदार घनश्याम कुमार व अन्य पुलिस कर्मियों को दिये। एसपी श्री सिंह ने सभी होम गार्ड के जवानों को चौक चौराहो पर विशेष नजर रखने, आपराधिक गतिविधि वाले व्यक्तियों पर पैनी नजर रखने का निर्देश दिए। एसपी ने पुलिस सप्ताह के मौके पर बैरगाछी ओपी का निरीक्षण किया । इस क्रम में उन्होंने पुलिस परिसर में मनरेगा योजना के तहत वृक्षारोपण करते हुए थानेदार मेनका रानी को कई आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर एसडीपीओ पुष्कर कुमार, सर्किल इंस्पेक्टर विश्वजीत सिंह, एस आई ऋषि राज,तौकीर अहमद आदि मौजूद थे। ●

आर्थिक हल युवाओं के बल के तहत शिविर का आयोजन

● अब्दुल कय्यूम

अररिया जिला के पलासी प्रखंड मुख्यालय स्थित चहटपुर पंचायत भवन जोगजान भाग व पकरी पंचायत भवन में मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना के तहत आर्थिक हल युवाओं को बल योजना के तहत शिविर का का आयोजन किया गया। शिविर का उदघाटन मुखिया रूबी शोएब व मुखिया संगिता मल्लिक ने की। शिविर में करीब 230 छात्रों ने अपना अपना आवेदन जमा किया। इस अवसर पर जिला निबंधन परामर्श केंद्र अररिया से आये सुपरवाइजर आईटी बख्शी रत्नेश राज ने बताया कि इस शिविर का मुख्य उद्देश्य युवाओं को आत्म निर्भर बनाना हैं बताया कि इस कार्यक्रम के तहत कुशल युवा प्रोग्राम के तहत कंप्यूटर प्रशिक्षण, स्वयं सहायता भत्ता, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड के तहत छात्रों को एक हजार भत्ता, उच्च शिक्षा के लिये ऋण दिया जायेगा। इस शिविर में अंकित कुमार, धीरज कुमार, राकेश आनंद, पूर्व मुखिया शोएब आलम, मनीष कुमार, प्रशांत कुमार आदि मौजूद थे। शिविर में मुखिया रूबी शोएब ने बताया कि शिविर में करीब 50 छात्रों ने अपना अपना आवेदन जमा किया। ●

शराब तस्करों पर पैनी नजर रखने का एसडीपीओ ने दिया निर्देश

● अब्दुल कय्यूम

अररिया एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने पलासी थाना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने कर विभिन्न कांडों से संबंधित पंजियो का अवलोकन किया। तथा लंबित कांडों की समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में एसडीपीओ श्री कुमार ने सभी पुलिस कर्मियों को डायरी को अधतन करने, तथा अपराध नियंत्रण करने, गश्ती दल को तेज करने का भी निर्देश दिए। निरीक्षण के क्रम में एसडीपीओ श्री कुमार ने न्यायालय से जुड़े मामलों को शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया। इस के अलावे शराब तस्करों पर लगाम लगाने, वाहन चेकिंग करने व फरार आरोपियों को गिरफ्तार करने का निर्देश थानेदार शिव पूजन कुमार व अन्य पुलिस कर्मियों को दिये। एसडीपीओ ने सभी पुलिस कर्मियों को चौक चौराहो पर विशेष नजर रखने, आपराधिक गतिविधि वाले व्यक्तियों पर पैनी नजर रखने, शराब तस्करों पर लगाम कसने के शख्त निर्देश दिए। इस क्रम में उन्होंने लंबित मामलों को जल्द से जल्द निष्पादन करने का भी निर्देश दिए। इस अवसर पर थानेदार शिव पूजन कुमार के अलावे अन्य पुलिस कर्मी मौजूद थे। ●

उत्कृष्ट कार्य के लिए महिलाओं को किया गया सम्मानित

● धर्मेन्द्र सिंह

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डीएम डॉ आदित्य प्रकाश तथा अन्य अतिथियों का स्वागत गान के द्वारा स्वागत किया गया। स्वागत गान का गायन बालिका उच्च विद्यालय की बालिकाओं के द्वारा किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि जिलाधिकारी डॉ आदित्य प्रकाश ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। सभी अतिथियों ने अपने संबोधन में नारी शक्ति और लैंगिक समानता को इंगित किया। डीडीसी, श्री मनन राम ने ग्रामीण विकास विभाग सहित अन्य क्षेत्र में महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बताते हुए महिला दिवस की शुभकामनाएं दी। अपर समाहर्त्ता, श्री ब्रजेश कुमार ने अपने संबोधन में इस वर्ष की थीम जेंडर इक्वालिटी टुडे फॉर ए सस्टेनेबल टूमोरो पर विचार प्रकट किए। साथ ही, संयुक्त राष्ट्र द्वारा महिला दिवस पर निर्धारित तीन रंग पर्पल, हरा और सफेद के महत्व को बताया। नारी शक्ति और महत्व पर प्रकाश डाला। पुलिस अधीक्षक, डॉ इनामुल हक मेंगनु ने अपने संबोधन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज नारी शक्ति स्वयं के साथ हमारी सुरक्षा भी दे रही हैं। पुलिस बल में महिला प्रतिनिधित्व को बतलाते हुए महिला के आत्मनिर्भरता पर बल दिया। डीएम डॉ आदित्य प्रकाश ने नारीत्व के उत्सव की याद दिलाता अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दुनिया महिला के बिना नहीं चल सकती है। महिलाओं के महत्व को बताते हुए कहा कि एक महिला अपने कार्य को बिना निम्न व उच्च समझे बखूबी निभाती है, चाहे वो घरेलू कार्य, मातृत्व कार्य से लेकर कोई भी अन्य कार्य हो। उन्होंने पिछले कोविड महामारी में महिलाकर्मियों अर्थात एएनएम, आशा कार्यकर्ता के कार्यों की सराहना की तथा पुनः वैक्सिनेशन कार्य में उनके योगदान को रेखांकित किया। महिला आत्मनिर्भरता पर अपनी बात रखते हुए सरकार प्रायोजित विभिन्न योजनाओं को गिनाया और इसका लाभ लेने हेतु कहा। जिला के अनुभव को साझा कर पिछले सभी निर्वाचन में महिलाओं के बढ़ चढ़ कर भागीदारी, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में कार्य, लैंगिक समानता पर विचार प्रकट किए तथा बताया कि किशनगंज जिले में जेंडर इक्वालिटी पर लोगो को जागरूक होकर कार्य करना होगा। किसी क्षेत्र में प्रशासन वहा की जनता का प्रतिबिंब होता है। जिलाधिकारी ने अपने संबोधन में जिलांतर्गत महिलाओं के उत्थान, महिला विशेष के उत्कृष्ट कार्य को विस्तृत रूप से बताया। उल्लेखनीय है कि कला, संस्कृति एवम युवा विभाग (सांस्कृतिक कार्य निदेशालय) बिहार, पटना से प्राप्त निदेशालोक में एक दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किशनगंज जिला प्रशासन के द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम में नारी सशक्तिकरण हेतु एक स्थाई कल के लिए लैंगिक समानता की थीम पर कार्यक्रम में विभिन्न प्रस्तुति हुई। जन शिक्षा साक्षरता के कला जत्था मंच द्वारा बिटिया बहादुर नाटक के माध्यम से बेटी के जन्म लेने, दहेज प्रथा, बाल विवाह और इन कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। इनकी भावुक प्रस्तुति ने उपस्थित दर्शकों का मनमोह लिया। इसके अतिरिक्त आईसीडीएस, शिक्षा विभाग के कर्मियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के द्वारा नारी के अबला से सबला बनने को ओर आकर्षित किया गया। जिला कला एवम संस्कृति पदाधिकारी रणजीत कुमार ने बताया कि टाउन हॉल आयोजित कार्यक्रम में जिले से आधिकाधिक महिलाओं की सहभागिता रही। जिलाधिकारी के द्वारा समारोह में आईसीडीएस से प्रत्येक प्रखंड के 5 उत्कृष्ट कर्मी को प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो तथा रू50000/- का डमी चेक उनको टीम को प्रदान किया गया। इसी प्रकार, पिछले दिनों माननीय मुख्यमंत्री की समाज सुधार यात्रा के दौरान प्रस्तुति देने वाली दो जीविका दीदी को सम्मानित किया गया। साथ ही, सामाजिक सुरक्षा कोषांग द्वारा अंतर्जातीय विवाह, निःशक्त जन विवाह के लाभार्थियों के एक लाख की सावधि जमा का डमी प्रमाण पत्र उपलब्ध करवाया गया। शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु बालिका उच्च विद्यालय और महिला कॉलेज को प्राचार्या को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में डीपीआरओ रंजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में जिला प्रशासन के समस्त पदाधिकारी, सचिव इंडियन रेडक्रास, विभिन्न विभागीय कर्मियों, आम जन, सभी क्षेत्र की महिलाओं, मीडिया प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।●

प्रभारी जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने प्रशस्ति पत्र देकर महिलाओं को किया सम्मानित

बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना के निर्देशानुसार अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर व्यवहार न्यायालय, किशनगंज के सभागार में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, किशनगंज के द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र से डॉ० उर्मिला कुमारी महिला चिकित्सा पदाधिकारी सदर अस्पताल किशनगंज, समाज सेविका रचना कुमारी, सीमा देवी, परा विधिक स्वंय सेविका जिला विधिक सेवा प्राधिकार, किशनगंज, पुष्पलता कुमारी थानाध्यक्ष महिला थाना किशनगंज, पूनम कुमारी अवर निरीक्षक, महिला थाना किशनगंज एवं कुमारी अनुष्का रानी, अवर निरीक्षक महिला थाना किशनगंज, शिक्षा के क्षेत्र से कुमारी गुड्डी, मधु श्रद्धा, पूर्णिमा कुमारी, मीना पाण्डेय, बॉबी दास, कुमारी नीलम सिन्हा, मीना वर्मा, स्नेहा जायसवाल, मधुश्री, तृप्ति चटर्जी, एवं योग शिक्षिका कविता साहा, तथा खेल के क्षेत्र से रोजी बेगम को अजीत कुमार सिंह, प्रभारी जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार, किशनगंज एवं रजनीश रंजन, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार, किशनगंज के द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

डीएम ने दवा पिलाकर सघन इन्द्रधनुष अभियान की शुरूआत की

● धर्मेन्द्र सिंह

सघन मिशन इंद्रधनुष 4.0 कार्यक्रम के तहत टीकाकरण के 100 प्रतिशत आच्छादन की प्राप्ति को लेकर किशनगंज जिले के सभी प्रखंडों में चयनित कुल 730 सत्र स्थलों पर 2335 गर्भवती महिलाओं एवं 13305 जन्म से पांच वर्ष तक के बच्चों का विभिन्न जानलेवा बीमारियों से बचाव हेतु नि:शुल्क टीकाकरण किया जाना है। इसका विधिवत उद्घाटन जिला पदाधिकारी, डॉ आदित्य प्रकाश ने शहर के वार्ड संख्या 31 (खगड़ा) स्थित कुष्ठ कोलोनी में बच्ची को पोलियो की खुराक पिलाकर किया। जिला पदाधिकारी ने बताया कि मिशन इंद्रधनुष से बच्चों में होने वाली 7 प्रमुख बीमारियों तपेदिक, पोलियोमाइलाइटिस, हेपेटाइटिस बी, डिप्थीरिया, पर्टुसिस, टेटनस और खसरा का खतरा कम होगा। इसमें खसरा रूबेला, रोटावायरस, हिमोफिलस इन्फ्लूएंजा टाइप-बी और पोलियो के खिलाफ टीकों को शामिल करने के बाद इन टीकों की संख्या 12 हो गई है। अभियान की सफलता के लिये चिन्हित सत्र स्थानों पर घर-घर घूमकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों का सर्वे कर लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसे लेकर संबंधित सभी चिकित्सा पदाधिकारियों, स्वास्थ्य कर्मियों, आंगनबाड़ी, आशा, एएनएम का प्रशिक्षण पूरा कर लिया गया है। सत्र के निर्धारण में कम आच्छादन वाले टीकाकरण सत्र व ऐसे जगहों को चिह्नित किया गया है। जहां बीते छह माह के दौरान कम से कम दो बार नियमित टीकाकरण सत्र संचालित नहीं हो सके हैं। ईंट भट्ठा, दूर-दराज के ग्रामीण इलाके, मलिन बस्तियां सहित अन्य स्थानों पर सत्र संचालन को प्राथमिकता दी गयी है। इस अभियान में अन्य विभागों का भी सहयोग लिया जाएगा। साथ ही, जिला स्तरीय स्वास्थ्य विभाग सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों के बीच प्रखंडों का विभाजन कर सघन अनुश्रवण एवं पर्यवेक्षण का दायित्व दिया गया है। अभियान की सफलता के लिये सभी प्रखंडों में प्रशिक्षित कर कार्य योजना एवं कम्युनिकेशन प्लान तैयार की गई है।

प्रत्येक कार्य दिवस को संध्याकालीन बैठक कर कार्य प्रगति की समीक्षा की जाएगी। सेशनवार सभी जरूरी लॉजिस्टिक की उपलब्धता सुनिश्चित कराने व टीकाकरण सत्रों की साज-सज्जा को लेकर संबंधित अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिये गये हैं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सिविल सर्जन डॉ कौशल किशोर, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ देवेंद्र कुमार, डीपीएम डॉ मुनाजीम, डीपीओ कविप्रिया, एसएमओ डॉ संजीव प्रतव, डिटीएल प्रशनजीत प्रामाणिक, एसएमसी एजाज अफजल आदि मौजूद थे।

☞ **जागरूकता को ले चलाया जा रहा अभियान :-** जिला पदाधिकारी डॉ आदित्य प्रकाश ने कहा कि जनसाधारण में अभियान के प्रति जागरूक करने हेतु विशेष संचार योजना बनाया गया है। साथ ही, विभिन्न प्रचार माध्यमों का सहयोग लिया जा रहा है। गाँव से जिला स्तर पर लगातार लोगों को जागरूक करने हेतु प्रचार प्रसार की गतिविधियाँ सतत जारी है। उन्होंने बताया की हर हालत में सर्वे रजिस्टर एंव ड्यू लिस्ट सभी सभी सत्रो पर शत-प्रतिशत अद्यतन होना चाहिए। बताया गया कि शत प्रतिशत बच्चे एवं गर्भवती का टीकाकरण कराया जाएगा, कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी पदाधिकारीयो के द्वारा सतत निरीक्षण करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

☞ **नियमित टीकाकरण को बढ़ावा देना अभियान का उद्देश्य :-** जिला प्रतिरक्षण पदाधिकरी डॉ. देवेन्द्र कुमार ने बताया कि वैश्विक महामारी के इस दौर में नियमित टीकाकरण की प्रक्रिया प्रभावित हुई है। इसमें सुधार के लिये विशेष प्रयास की जरूरत है। उन्होंने बताया कि नियमित टीकाकरण कार्यक्रम के तहत टीकाकरण से वंचित दो वर्ष तक के सभी बच्चों व सभी गर्भवती महिलाओं तक टीकाकरण की पहुंच सुनिश्चित कराना मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि मिशन इन्द्रधनुष का दूसरा चरण 04 अप्रैल व तीसरा चरण 02 मई से शुरू होगा। गौरतलब है कि नियमित टीकाकरण के मामले में फिलहाल जिले की उपलब्धि 60 फीसदी के करीब है। 02 वर्ष उम्र तक के बच्चे व गर्भवती महिलाओं को मिशन इंद्रधनुष अभियान के तहत इसे 100 फीसद तक ले जाने का प्रयास किया जायेगा। ●

सख्ती के बावजूद यातायात नियम का हो रहा उलंघन

● धर्मेन्द्र सिंह

परिवहन विभाग के सख्ती के बावजूद जिला में यातायात नियम का उल्लंघन रूक नहीं रहा है। खासकर ओवरलोड वाहनों के परिचालन पर अंकुश लगता नहीं दिखता है। विभाग के कार्रवाई के बाद भी शहर से लेकर एनएच तक ओवरलोड वाहनों का परिचालन जारी है। विभाग के अधिकारियों द्वारा कार्रवाई में जुर्माना राशि वसूलने के बाद भी ओवरलोड वाहनों का परिचालन धड़ल्ले से हो रहा है। परिवहन विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 में अप्रैल से लेकर जनवरी तक दस माह में सिर्फ ओवरलोड वाहनों से 56 लाख 40 हजार का जुर्माना राशि वसूली किया गया। आर्थिक दंड के बावजूद ऐसे ओवरलोड वाहनों के परिचालन पर रोक नहीं लग पा रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि ओवरलोड वाहन चालक जुर्माना की राशि से कई गुणा मुनाफा ओवरलोडिग के कमा रहे हैं, जिसका जुर्माना के बाद भी कोई असर वाहन संचालकों पर नहीं दिख रहा है। परिवहन विभाग के आंकड़े पर गौर करें तो पिछले दस माह में विभाग ने यातायात नियम का उल्लंघन करने वाले विभिन्न क्षमता वाले 406 वाहनों से 97 लाख सात हजार रुपये जुर्माना वसूला गया है। इसमें सबसे अधिक कार्रवाई ओवरलोड वाहनों पर ही हुई है। इसके अलावा बिना परमिट, बिना निबंधन, बिना बीमा, बिना डीएल, बिना प्रदूषण प्रमाण पत्र, व अन्य अपराध मामलों में वाहनों से भी जुर्माना किया गया है। बिना परमिट के 16 वाहनों से 80 हजार, बिना बीमा के 34 वाहनों से 68 हजार रुपये, बिना डीएल के 21 वाहनों से 1 लाख 05 हजार रुपये, बिना प्रदूषण सर्टिफिकेट के पांच वाहनों से 05 हजार एवं अन्य अपराध में 255 वाहनों से 37 लाख 59 हजार 300 रुपये जुर्माना वसूला जा चूका है। परिवहन विभाग के द्वारा लगातार वाहनों के खिलाफ जांच अभियान चलाया जा रहा है। वहीं इस वित्तीय वर्ष के 31 मार्च तक जुर्माना की आकड़ा डेढ़ करोड़ पार होने की संभावना है। परिवहन विभाग के अधिकारी लगातार सड़कों पर वाहनों के जांच अभियान चलाने में जुटे हुए हैं। ओवरलोड वाहनों से दस माह में वसूली गयी जुर्माना राशि :-

माह	-	जुर्माना राशि
अप्रैल	-	9 लाख 74 हजार
मई	-	11 लाख 57 हजार
जून	-	पांच लाख 14 हजार
जुलाई	-	दो लाख 39 हजार
अगस्त	-	नौ लाख 30 हजार
सितंबर	-	चार लाख 85 हजार
अक्टूबर	-	दो लाख 47 हजार
नवंबर	-	एक लाख 13 हजार
दिसंबर	-	दो लाख 75 हजार
जनवरी	-	सात लाख दो हजार

जिला परिवहन पदाधिकारी किशनगंज रामा शंकर ने जानकारी देते हुए बताया कि वित्तीय वर्ष 2021-22 में जो राजस्व वसूली का लक्ष्य था उसे पूरा कर लिया जाएगा। सड़कों पर चलने वाले ओवरलोडिग वाहनों पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसके अलावा बिना कागजात के वाहनों पर भी परिवहन विभाग के विशेष नजर है ऐसे वाहनों पर कार्रवाई के लिए विभाग के द्वारा सड़कों पर जांच अभियान लगातार चलाया जा रहा है। खासकर नेशनल हाईवे और स्टेट हाईवे पर भी विशेष नजर रखा जा रहा है। ●

एस.पी. के निर्देश पर शराब के विरुद्ध समकालीन अभियान

एस.पी. डॉ एनामुल हक मेंगनु के निर्देश पर कोचाधामन थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह के नेतृत्व में धनपूरा पुलिस पीकेट को इन दिनों भारी सफलताऐं मिल रही है। इस कड़ी में दिनांक-04.03.2022 को जब थानाध्यक्ष कोचाधामन सुमन कुमार सिंह, परीक्ष्यमान पु०अ०नि० राजू उर्फ जितेंद्र कुमार, एएसआई सह धनपूरा पुलिस पीकेट प्रभारी बी पी सिंह, सशस्त्र बलों सहित वाहन चेकिंग में लगे थे। उसी समय एक महिन्द्रा पीकअप WB19H-3304 काफी तेज गति से बहादुरगंज की ओर निकलना चाहा। पर चेकिंग में लगे पुलिस पदाधिकारियों और सशस्त्र बलों ने उसे रोक कर उसमें सवार से पूछताछ की, जहाँ से कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। फलत: पीकअप पर सवार राहुल शर्मा, पिता बिजय कुमार शर्मा, सा०-बोकारो वार्ड नं०-59, थाना-हरला, जिला-बोकारो (झारखंड) को गिरफ्त में लेकर पीकअप की तलाशी ली गई। तो बॉसों के नीचे विदेशी शराब से भरे कार्टून मिले। जिसकी जॉच के बाद कार्टूनों में रखे बोतलों से 522 लीटर शराब को बरामद किया गया। जहाँ राहुल शर्मा को विधिवत गिरफ्तार कर पीकअप को जप्त किया गया। बताते चलें कि राहुल शर्मा के मुताबिक शराब उत्तर दिनाजपूर से लाद कर फारबिसगंज ले जाया जा रहा था। कोचाधामन पुलिस इस संवंध में आगे की कार्यवाहियों में लगी है। **रिपोर्ट :- धर्मेन्द्र सिंह**

उपमुख्यमंत्री के हाथों सेनसेजा का उद्घाटन

● धर्मेन्द्र सिंह

नगर के हृदय स्थल पूरब पाली रोड में बाल मंदिर स्कूल के निकट आज एक बड़े प्रोजेक्ट सेनसेजा का भव्य उदघाटन बिहार के माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री तार किशोर प्रसाद के हाथों किया गया जिस में किशनगंज जिला एवं आस पास के गणमान्य लोगों ने शिरकत की और इसे किशनगंज जिले की एक बड़ी उपलब्धि बताई। उप-मुख्यमंत्री श्री तार किशोर प्रसाद ने इस प्रोजेक्ट के उदघाटन को किशनगंज जिला के लिये लाभदायक बताया और कहा कि बिहार तेजी से विकास की ओर आगे बढ रहा है और किशनगंज जिला में विकास की काफी संभावनाएं हैं। इस अवसर पर भाजपा नेता पूर्व एमएलसी एवं माता गुजरी मेमोरियल मेडिकल कालेज सह लाइंस सेवा केन्द्र के डायरेक्टर डाक्टर दिलिप कुमार जयसवाल ने कहा कि किशनगंज बदल रहा है। उन्होंने कहा कि सही मायनों में यहाँ विकास की काफी संभावनाएं हैं। श्री जयसवाल ने कहा कि आने वाले 10वर्षों में पुरे बिहार में किशनगंज जिला सबसे अच्छा जिला बन जायेगा। एसपीएसआर डेवेलपर कम्पनी के डेवेलपर श्री

संजय कुमार लम्बोरिया ने इस प्रोजेक्ट की जानकारी दी और बताया कि साढे सात बीघा जमीन पर तैयार हो रहे इस प्रोजेक्ट में 144 फ्लेट, जी प्लस सिक्स का मल्टीप्लेक्स मॉल, 50 कमरे का होटल एवं बेसमेंट, ग्राउन्ड फ्लोर व स्केंड फ्लोर में 50 शॉप इत्यादि होंगे। उक्त कंपनी के पार्टनर श्री पवन अग्रवाल ने कहा कि रोजमर्रा की जरूरतों की सारी चीजों के लिए जिन्हें सिलीगुड़ी या बड़े शहरों में जाना पडता था उन्हें अब इसके निर्माण के बाद बाहर जाना नहीं पडेगा उन्होंने कहा कि पांच वर्षों में निर्माण कार्य पूरा कर लिया जायेगा। यहाँ उपस्थित लोगों में, डाक्टर सुब्रत प्रसाद, डाक्टर मोहन लाल जैन, डाक्टर मनीष कुमार, विधान पार्षद डॉ दिलीप कुमार जायसवाल, पूर्व नप अध्यक्ष त्रिलोक चंद जैन, पूर्व विधायक सिकंदर सिंह, डेवलपर संजय लोमबारिया और पवन अग्रवाल, डॉ भरत प्रसाद, डॉ सचिन प्रसाद, डॉ शालिनी प्रसाद, डॉ निधि प्रसाद, हिमांशी मित्तल, मानव साहा, विमल मित्तल, पंडित किशनजी उपाध्याय, समाजसेवी विपिन बिहारी, वार्ड पार्षद श्म्सुज्म्मा उर्फ पप्पू, सुबोध माहेश्वरी, डॉ एम एल जैन, डॉ अतुल वैध, हरिराम अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष सुशांत गोप, मनोज दुग्गड़ और मसरूर आलम इत्यादि के नाम शामिल हैं। ●

सीमावर्ती थानों के थानाध्यक्ष बरतेंगे चौकसी : एस.पी.

● धर्मेन्द्र सिंह

थानाध्यक्ष प्रत्येक दिन चेकिंग अभियान चलाएंगे। नेपाल सीमा से सटे थानाध्यक्ष एसएसबी से समन्वय स्थापित कर सीमा क्षेत्रों में गश्ती करेंगे। वही पर्व में माहौल बिगाड़ने वाले कि मंशा रखने वालों पर कड़ी कार्रवाई करेंगे। ऐसे लोगों की गतिविधियों पर भी ध्यान रखें। यह निर्देश एसपी डॉक्टर इनामुल हक मेगनु मंगलवार को अपने कार्यालय में आयोजित क्राइम मीटिंग में थानाध्यक्षों को दे रहे थे। एसपी डॉक्टर मेगनु ने कहा कि होली पर्व में शराब के तस्कर किशनगंज के रास्ते शराब खपाने की फिराक में होंगे। ऐसे शराब तस्करों पर कार्रवाई को लेकर सीमा पर विशेष वाहन जांच अभियान चलाए। चेक पोस्टों में प्रत्येक दिन वाहन चेकिंग अभियान चलाएं। चेक पोस्ट से गुजरने वाले सभी वाहनों की जांच करेंगे। वही होली पर्व में हुड़दंगियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पर्व को शान्तिपूर्ण वातावरण में मनाए जाने को लेकर थानाध्यक्ष अपने अपने थाना क्षेत्र में सतर्कता बरतते हुए सुरक्षा के इंतजाम करेंगे। एसपी ने कहा कि पुलिस का काम बोलना चाहिये। कुछ थानाध्यक्ष बेहतर कार्य कर रहे हैं। लेकिन कुछ थानाध्यक्ष लापरवाही भी बरत रहे हैं।

ऐसे थानाध्यक्ष अपनी कार्यशैली में सुधार लाएं। एसपी ने लंबित कांडों के निष्पादन का निर्देश दिया। इसके लिए एक माह की समय सीमा निर्धारित की गई है। एसपी ने कहा कि बच्चों व महिलाओं पर हो रहे अपराध पर अंकुश लगाया जाना है। विधि व्यवस्था के मद्देनजर संबंधित क्षेत्र के थानाध्यक्ष विशेष रूप से सतर्क रहेंगे। चेक पोस्टों में हर आने जाने वाले वाहन की जांच करें। क्राइम मीटिंग में एसडीपीओ अनवर जावेद अंसारी, डीएसपी मुख्यालय अजीत प्रताप सिंह चौहान, सदर थानाध्यक्ष सतीश कुमार हिमांशू, ठाकुरगंज थानाध्यक्ष मोहन कुमार, ठाकुरगंज सर्किल इंस्पेक्टर सुनील कुमार पासवान, बहादुरगंज सर्किल इंस्पेक्टर अमर प्रसाद सिंह, दिघलबैंक थानाध्यक्ष सुनील कुमार, कोचाधामन थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह, पहाड़कट्टा थानाध्यक्ष आरिज अहकाम, कुर्लीकोर्ट थानाध्यक्ष बेदानंद कुमार, बहादुरगंज थानाध्यक्ष संजय कुमार, पौआखाली थानाध्यक्ष इकबाल अहमद खां, गलगलिया थानाध्यक्ष नीरज कुमार निराला, पोठिया थानाध्यक्ष कुंदन कुमार, टेढ़ागाछ थानाध्यक्ष तरुण कुमार तरुणेश आदि मौजूद थे। ●

20 सूत्री मांगों के समर्थन में टाउन हॉल के सामने धरना प्रदर्शन

● धर्मेन्द्र सिंह

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तीन प्रखंडों की सेविका सहायिका ने 20 सूत्री मांगों के समर्थन में टाउन हॉल के सामने धरना प्रदर्शन किया। महज 10 मीटर की दूरी पर टाउन हॉल में डीएम एसपी सहित जिले के सभी वरीय अधिकारी अंतरराष्ट्रीय दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित थे। सेविका सहायिका द्वारा नारेबाजी से कार्यक्रम पर भी प्रभाव पड़ा। नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी एवं बाल संरक्षण पदाधिकारी ने सेविका सहायिका द्वारा लगाए गए ध्वनि विस्तारक यंत्र को बन्द करने का अनुरोध किया, जिसे सेविकाओं ने नहीं माना। इस मौके पर आंगनबाड़ी संयुक्त संघर्ष समिति के जिला महासचिव फारुख आलम ने कहा कि प्रदेश नेतृत्व के द्वारा पूर्व से निर्धारित कार्यक्रम जारी रहेगा। आगामी 28 एवं 29 को जिले के सभी आंगनबाड़ी केंद्र को बन्द रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार अगर मांगे नहीं मानी तो आंदोलन और तेज होगा। कार्यकारी जिला अध्यक्ष गौशिया परवीन ने कहा कि सेविका सहायिका की भूमिका को सरकार द्वारा अनदेखी किया जा रहा है, जबकि कोरोना काल हो या सरकार की अन्य योजना सेविका सहायिका जान की परवाह किए बगैर अपने दायित्व को अंजाम देती रही है।

☞ **इन मांगों के लेकर प्रदर्शन :-** सेविका शबीना आजमी ने कहा कि आंगनवाड़ी सेविका सहायिका की सरकारी कर्मी का दर्जा, मानदेय बढ़ाने, हड़ताल अवधि की राशि देने, महिला पर्यवेक्षिका के पद पर प्रोन्नत करने, अवकाश प्राप्ति के बाद पेंशन देने, कार्य अवधि चार घंटा करने, बिना भौतिक सत्यापन के पोषाहार राशि की वसूली पर रोक लगाने सहित 20 सूत्री मांग सरकार के सामने रखी गयी है। इस अवसर पर विधि सलाहकार अधिवक्ता जय किशन प्रसाद, महिनूर बेगम, उषा देवी सहित सैकड़ों की संख्या में सेविका सहायिका उपस्थित थी। ●

सांसद व मंडल रेल प्रबंधक ने स्वचालित सीढ़ी का किया उद्घाटन

● धर्मेन्द्र सिंह

पूर्वोत्तर राज्य को जोड़ने वाली बिहार के सीमावर्ती जिला किशनगंज रेलवे स्टेशन में सांसद डॉ. मोहम्मद जावेद एवं मंडल रेल प्रबंधक कर्नल शुभेंदु कुमार चौधरी ने संयुक्त रूप से स्वचालित सीढ़ी एवं लिफ्ट का उद्घाटन फीता काटकर किया। मौके पर सांसद डॉ. जावेद ने कहा कि भारतीय रेलवे मंत्रालय से यहां के असहाय लोगों के सुविधा के लिए की गई मांग स्वचालित सीढ़ी एवं लिफ्ट आज पूर्ण हुआ है जिसका शुभारंभ हुआ। उन्होंने कहा कि यहां के रेलवे स्टेशन के लिए कई ट्रेनों के ठहराव एवं स्टेशन पर मुलभूत यात्री सुविधाओं की मांग भी रेल मंत्रालय से की गयी है। जिसमे कुछ तो पूरी हुई है कुछ लंबित भी है। रेलवे स्टेशन पर सुरक्षा एवं बंद डिस्पले टावर मामले के सवाल पर मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि यहा स्टेशन परिसर में लगें कुल छह सीसीटीवी कैमरे में दो बंद पड़े है उसे बदलकर दूसरी लग जाएगी। उन्होंने कहा कि प्लेट फार्म पर बंद सभी डिस्पले टावर बहुत पुरानी हो गयी थी इसी खराब है। अब उसे भी बदल कर नए लगवा दिया जाएगा। उद्घाटन समारोह के बाद सासंद डॉ. जावेद एवं मंडल रेल प्रबंधक के टीम के साथ पूरे रेलवे स्टेशन पर विकास कार्यों का बरीकी से निरीक्षण किया। इस समारोह में सदर कांग्रेस विधायक इजाहरूल हुसैन एवं भाजपा के उप सचेतक विधान परिषद डॉ. दिलीप जायसवाल आंमत्रित थे किन्तु अनुपस्थित रहें और उनके ओर से कांग्रेस विधायक प्रतिनिधि अवसार हुसैन, नेता इमाम अली चिन्टु एवं भाजपा नेता में प्रमुख राजेश गुप्ता, जय किशन प्रसाद कुशवाहा इत्यादि समारोह में उपस्थित रहें। मौके पर संजीव पुष्कर विद्युत मंडल अभियंता, सीनियर डीएन कोऑर्डिनेशन भारत भूषण दीक्षित सहायक मंडल अभियंता किशनगंज अभय मोहन ठाकुर, सीनियर डीसीएम कटिहार राजेश रंजन सीनियर सेक्शन इंजीनियर कार्य मिथिलेश चौधरी सीनियर सेक्शन इंजीनियर इलेक्ट्रिसिटी अनवर अंसारी इत्यादि बड़ी संख्या में अन्य प्रमुख उपस्थित थे। ●

स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर

● **प्रो० रामजीवन साहू**

रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि – '' जाकी रही भावना, जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी'' अर्थात भारत को लोगों ने जिस रूप में देखा वह उसी रूप में भारत के बारे में कहा जिन देशों ने संसार में शिक्षा देने के कार्य को देखा, उसने इसे विश्वगुरु कहा। कुछ देश इसे धन–धान्य से परिपूर्ण देखा इस रूप में उसने इसे सोने की चिड़िया कहा। कुछ देश देखा कि यह ज्ञान देने में लगा हुआ है तो उसे भारत कहा। कुछ देश यह मानते हैं कि यहाँ श्रेष्ठ लोग रहते हैं इसलिए इसे आर्यावर्त कहा और कुछ देशों ने देखा कि यहाँ हिन्दू रहते हैं, इसलिए उसने इसे हिन्दुस्तान कहा। भारत को सोने की चिड़िया मानना, इस देश के लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ। फलस्वरुप कुछ देश इसे लूटने के ध्येय से भारत का पता लगाने लगा कि यह देश कहाँ है? आज के जितना, आज से 3000 वर्ष पूर्व विज्ञान इतना उन्नत नहीं था जो तुरंत पता लगा ले कि भारत कहाँ है फलस्वरुप 8 जुलाई 1497 में एक पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा नाम का व्यक्ति भारत के खोज में निकल पड़ा। 20 मई 1498 को वह भारत के कालीकट के समुद्र के तट पर पहुँचां भारत का पता लगने के बाद विदेशी आक्रांताओं ने सर्वप्रथम व्यापार करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया उसके बाद शासन करने का ध्येय बनाया। लगभग 11 विदेशी आक्रांताओं ने इस देश पर आक्रमण किया। 550 ई0 पू0 सर्वप्रथम ईरान का हखमनी वंश का साईरस ने भारत पर आक्रमण किया। उसके बाद 354 ईसा पूर्व यूनान का सिकंदर, 123 ईसा पूर्व शक, 60 ई0 पू0 कुषाण, 5 ई0 में हूण, 711 ई0 में अरब ईरानी, 1001 ई0 में तुर्क, 1175 ई0 में गोर तुर्क, 1206 ई0 में गुलाम वंश, 1290 ई0 में खिलजी वंश, 1525 ई0 में मुगल अफगान और 1637 ई0 में अंग्रेजों ने भारत पर आक्रमण किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में 565 से अधिक छोटे–बड़े राजा थे। इन्हीं कुछ राजाओं को हराकर विदेशियों ने भारत में शासन किया।

संपूर्ण भारत पर किसी विदेशी ने शासन नहीं कर सका। विदेशी शासन होने के बाद भारतीयों ने पराधीनता कभी स्वीकार नहीं किया। इतना ही नहीं परकीयों को कभी शांति से शासन करने नहीं दिया। लोगों की मानसिकता थी कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। ''वंदे मातरम'' का जयघोष करते हुए सतत संघर्ष करते रहे। लाखों लोग इसके लिए बलिदान हो गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए लोगों में इतनी भूख थी कि अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने भी एक बार कहा था कि यदि हम अहिंसा में विश्वास भी करते हैं तो भी हमारे लिए यह उचित नहीं होगा कि हम कार्यरता से कमजोरों की रक्षा के लिए मना कर दे। मैं साँप को गले लगा सकता हूँ परंतु वह किसी को काटना चाहता है तो मैं उसे मारना पसंद करूंगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांतिकारियों का दो दल बन गया। एक वह दल था जिन्हें भरोसा था कि स्वतंत्रता शस्त्र के बल पर प्राप्त होगा तो दूसरे का विश्वास था कि स्वतंत्रता सत्य अहिंसा के आधार पर मिलेगा। दोनों दलों की संघर्ष और आंदोलन नें ब्रिटिश सरकार को झकझोर दिया। फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 ई0 को आधी रात को भारत खंडित होकर स्वाधीन हो गया।

2007 ई0 में तत्कालीन भारत सरकार ने 1857 ई0 को भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम घोषित किया और इसे पर 150वाँ प्रथम युद्ध के रूप में मनाया। इस घोषणा से कुछ राष्ट्रभक्तों और कई संगठनों को घोर आपत्ति ही नहीं बल्कि उन्होंने सोचा कि 1857 ई0 की पूर्व जिन जिन क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो गए उनका यह घोर अपमान है आपको बता दूं देश की स्वतंत्रता के लिए लोगों ने कब से बलिदान होने प्रारंभ सर्वप्रथम 1741 ई0 में त्रावणकोर (केरल) में मार्तंड वर्मा ने ,उसके बाद 1763 ई0 में बंगाल में सन्यासी विद्रोह, 1772 ई0 में मराठा युद्ध, 1796 ई0 में कितूर (कर्नाटक) में रायण्णा के साथ युद्ध हुआ। उसके बाद 1763 ई0 में सन्यासी विद्रोह, 1809 ई0 में मणिपुर टिकेन्द्र के साथ युद्ध, 1856 में संथाल क्रांति हुई जिसमें 15 से 20000 क्रांतिकारी शहीद हो गये। इन सभी संग्राम को किस श्रेणी में रखा जाएगा ? इन तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का कहना बिल्कुल निराधार है इसलिए सच्चे राष्ट्र भक्तों और कुछ संगठनों ने 15 अगस्त 2021 से स्वतंत्रता के 75वें को अमृत महोत्सव के रूप में मनाना प्रारंभ कर दी है। यह स्वतंत्रता किसी एक व्यक्ति एक दल या एक संगठन के कारण नहीं मिली बल्कि भारत के मजदूरों, कर्मचारियों, किसानों, विद्यार्थियों ,शिक्षकों,प्राध्यापकों,साधु–संतों, महिलाओं, साहित्यकारों, उद्योगपतियों,व्यापारियों कलाकारों,ठेकेदारों, पत्रकारों,चिंतकों, चिकित्सकों, अधिवक्ताओं, पंडित वैज्ञानिकों राजनेताओं, राजभक्तों, सफाई कर्मियों, अमीर–गरीब के सामूहिक त्याग तपस्या और संघर्ष के कारण हम स्वाधीन हुए हैं। अमृत महोत्सव के अवसर पर कुछ सदस्यों ने निबंध प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, तिरंगा यात्रा, संगोष्ठी, कूट प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम करने का योजना बनाए हैं। यह कार्यक्रम देश के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्तियों तक पहुंचे। इसके लिए वे सारे प्रयोग किए जाएंगे। भारत को स्वाधीनता प्राप्त किए 75 वर्ष हो चुके हैं। परंतु स्वतंत्रता अभी नहीं मिली है इसलिए राष्ट्र भक्तों का चिंतन बना है कि अब हम स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर जाना है। स्वाधीनता और स्वतंत्रता में अंतर है स्वाधीनता व्यक्ति को उसके अधिकार, विश्वास, अपने आप को अभिव्यक्त करने और बंधनों से मुक्त होने तथा अपने अनुसार जिंदगी को चुनने की शक्ति देता है परंतु स्वतंत्रता को राजनीतिक, सामाजिक और नागरिक स्वतंत्रता आनंद लेने के लिए स्वतंत्र होने की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है।

स्वतंत्रता के लिए स्व का भाव जागृत होना आवश्यक है, तभी हमारा शासन तंत्र अच्छा होगा, अर्थतंत्र अच्छा होगा, वाणिज्य तंत्र अच्छा होगा, शिक्षा तंत्र अच्छा होगा, प्रशासन तंत्र अच्छा होगा, न्याय तंत्र अच्छा होगा, विदेश नीति अच्छी होगी साथ ही स्वधर्म भी राष्ट्र के विकास में सहायक सिद्ध होगा। दुनिया का सबसे प्रसिद्ध धर्म ग्रंथ श्रीमद् भागवत गीता के अध्याय 3 और श्लोक 35 में कहा गया है कि–

J:;kULoèkeks foxq.k% ijèkekRLouf"Brkr~
Lo/kes fuèkua J:;% ijèkeks Hk;kog%AA

अर्थात अच्छी प्रकार आचरण में लाए हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है। अतः किसी भी परिस्थिति में अपना धर्म को नहीं त्यागना चाहिए। सिख धर्म के दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह के चारों पुत्र अमर सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह को औरंगजेब ने दीवार में चुनवा दिया लेकिन वे अपने धर्म को नहीं छोड़े। भारत के ये पहला व्यक्ति है जिनकी तीन–तीन पीढ़ी धर्म रक्षार्थ अपने आपको बलिदान कर दिए। अतः किसी भी परिस्थिति में अपना धर्म नहीं त्यागना चाहिए। ●

स्वास्थ्य केन्द्रों में भवन तथा कर्मियों की कमी

● विकाश कुमार/संतोष कुमार मिश्रा

कोरोना जैसी महामारी के बाद भी सरकार की निंद नही खुल रही है। आज भी स्वास्थ्य व्यवस्था बहुत बेहतर नही हुआ है। ग्रामीण या शहरी क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र में सुविधाओं की बहुत कमी है। सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों की असमान व्यवस्था से मरीजों को इलाज में परेशानी हो रही है। सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं में वृद्वि की बात तो करती है लेकिन आज भी मरीज सुविध ाओं से बंचीत है। सबसे ज्याद कमी है तो डॉक्टरो तथा फोर्थ ग्रेड कर्मीयों की। जिसमें स्पेशलिस्ट डॉक्टर तथा परामेडिकल्स के सबसे ज्यादा कमी है। वर्ष 2017-18 से अब तक 11250 भर्तियां हुई है। जब कि बिहार में आधे से ज्यादा पद खाली है। वही स्वास्थ्य केन्द्रों में भवन का भी बहुत बड़ा समस्या है। भवन कि कमी के कारण मरीजों की भिड़ लगी रहती है। स्वास्थ्य मंत्री के योजनाये खोखले साबित हो रहे है।

राजेन्द्र नगर अतिविशिष्ट नेत्र अस्पताल के निर्देशक डॉक्टर हरीशचंद्र ओझा जो कि साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र राजेन्द्र नगर पटना के सुपरीटेन्डेन्ट भी है। डॉक्टर हरीशचंद्र ओझा का कहना है कि यहॉ पर दो अस्पताल है। एक सीएससी राजन्द्र नगर पटना तथा दूसरा राजेन्द्रनगर अतिविशिष्ट नेत्र अस्पताल। ये अतिविशिष्ट नेत्र अस्पताल का स्वायत होना है। इसके लिए सरकार के अस्तर पर प्रक्रिया चल रही है, ड्राफ तैयार हो गया है, फाईनेंस डिपार्टमेंट में चला गया है। वहॉ पर ड्राफ एप्रूव्ह होने के बाद कैबिनेट से पास हो जायेगा। उसके बाद ऑल इंडिया लेबल पर बिज्ञापन होगा। वही डॉ झा का कहन है कि फंड कि कोई कमी नही है, कोरोना के कारण थोड़ा देर हो गया। क्योकि पूर्व में ये आइसोलेशन सेन्टर बना हुआ था। सारे लोग चिंतित भी थे और व्यस्थ्त भी थे। लेकिन मुझे अंदाज है कि 6 महीने के अंदर ये बिहार के लिए काफी ही बढ़ीया अस्पताल के रूप में ख्याती होगी तथा आम लोगो का उपचार सस्ते में होगा। कैबिनेट से पास होने के बाद पैसे कि कोई कमी नही होगी। यहॉ पर 8 डॉक्टर है जिसमें एक निर्देशक का है जो कि उस पद पर डॉ हरीशचंद्र ओझा है सीएससी राजेनद्र नगर में 5 डॉक्टर है जिसमें 2 डॉक्टर को नेत्र अस्पताल में प्रतिनियूक्त किया गया है और ये राजेन्द्रनगर आई हॉस्पीटल में काम कर रहे है। इधर हाल के दिनो में दो पी0जी0 किये हुई लड़कीयॉ जिनका 3 साल का कॉन्ट्रैक्ट है। यह एक सरकार कि पॅलीसी है कि जो पीजी करेगा उसे 3 साल काम

करना है उसके तहत ये लोग आये है और मुख्यत: भेजने का मकसद यह है कि बढ़ीयॉ से इनलोगों को ट्रेनिंग दिया जाये जो आगे चल कर बेहतर चिक्तिसा दे सके। यहॉ पर करीब 23 प्रकार की दवा उपलब्ध है। वही डॉ ओझा का कहना है कि जिस तरह से यह अस्पताल बना है उस तरह से यहॉ डॉक्टरों का बहुत कमी है, एएनएम तथा फोर्थ ग्रेड कर्मी की भी कमी है। लेबोरेटरी, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड इन सारी चीजों का शरू होना किसी अस्पताल के लिए, वहॉ के मरीजों के लिए बहुत जरूरी है। इन सभी के लिए कर्मी आ जाये साथ ही साथ कम से कम 5 डॉक्टर आ जाये तो काफी लाभ होगा। यहॉ पर करीब 100 से 150 तक ऑख के मरीज प्रतिदिन आते है वही ओपीडी में करीब 30 से 35 मरीज प्रतिदिन आते है। नौबतपुर प्रभारी चिकित्सा पदाधि कारी रीना देवी का कहना है कि यहॉ ओपीडी कि व्यवस्था है जहॉ 100 से 150 मरीज देखें जाते है। इमरजेंसी में भी 15 से 20 मरीज आ जाते है। यहॉ पर रोड एक्सीडेंट बहुत ज्यादा होते है। उसमें भी करीब 2 से 5 आ ही जाते है। प्रसव मरीज करीब 8 से 10 प्रतिदिन आ ही जाते है। यहॉ पर नौ डॉक्टर हैं एमबीबीएस और स्पेशलिस्ट मिला कर यहॉ पर रेफरल और पीएचसी दोनो अस्पताल है, रेफरल में 4 डॉक्टर तथा पीएचसी में 5 डॉक्टर है। जिसमें पेडियाट्रिक्स, सर्जन, गाइनकालजी सभी तरह के डॉक्टर हैं जिससे मेरे यहॉ बंध्याकरण, ऑपरेशन तथा प्रसव होता है, प्रसव करीब 200 से 250 महीने में हो जाता है। यहॉ पर कमी है तो भवन की जबकी जमीन कि कमी नही है। परन्तु भवन के कमी के कारण काफी परेशानी होती है। तथा फोर्थ ग्रेड कर्मी की बहुत कमी है। जो कि ड्रेसर हुआ, ओटी असिस्टेंट ये सभी नही है जिसके कारण सारा काम एएनएम से ही कराना पड़ता है। एएनएम को ही सारा काम सिखाना पड़ा है। फोर्थ ग्रेड की बहुत कमी होने कारण बहुत दिक्कत होता है। जैसे कोरोना का सेंपल भेजते है तो ले जाने के लिए चाहीए फोर्थ ग्रेड तो लैब टेक्नीशियन को जाना पड़ता है। उनलोगो को यहॉ जॉच भी करना पड़ता है और जाकर सेंपल भी पहुँचाना पड़ता है। तो एचआर की कमी तो है ही। दवा करीब 30 से 35 प्रकार कि उपलब्ध है।

दुलहीनबाजार प्रभारी चिकित्सा पदाधि कारी सावित्री कुमारी का कहना है कि मेरा स्वास्थ्य केन्द्र बहुत छोटा है। सिर्फ पीएससी में मात्र 4 डॉक्टर है। परन्तु एडीसनल पीएससी मिला कर 12 डॉक्टर है। जिसमें 8 एमबीबीएस और 4 आयुष डॉक्टर है। यहॉ पर सबसे ज्यादा कमी है तो जगह की जिस हिसाब से मरीज है उस हिसाब से जगह नही है। और हमें बढ़ने का भी जगह नही है। कैंपस में कुछ है ही नही कि जगह हो जिसे डेवलप किया जा सके ऐसा कुछ भी नही है। ये पहले उपस्वास्थ्य केन्द्र था, ये पहले बिक्रम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के साथ जुड़ा हुआ था, ये जो भवन है जिस पर आज भी अतिरिक्त स्वास्थ्य केन्द्र दुलहीनबाजार लिखा हुआ ह। जिसे बिक्रम से अलग करके प्रथिमिक स्वास्थ्य केन्द्र बना दिया गया है। जगह के कमी के कारण बहुत समस्या हो रही है। यहॉ प्रतिदिन करीब 100 मरीज आते है। जब कोरोना नही था तो करीब 150 तक प्रतिदिन मरीज आते थे। प्रस्व मरीज कि संख्या करीब 100 से 125 महीने में आ जाते है। दवा यहॉ पर उपलब्ध है। वही सावित्री कुमारी का कहना है कि यहॉ पर राजनीति दबाव बहुत ज्यादा है। यहॉ पर राजनेता चाहते है प्रेसर बनाना जिससे हमें काम करने में दिक्कत होती है। दूसरा प्रॉब्लम है एम्बुलेंस है, एम्बुलेंस हमारे कंट्रोल में नही है और उसमें कभी कहेगा कि तेल नही है एम्बुलेंस है और बिना तेल के रहेगा तो कैसे काम चलेगा। ये सब जेनबिन प्रॉब्लम है। जिससे दिक्क्त होती है। ●

उदवंतनगर के बीबीगंज ग्रामीण बैंक से 13 लाख की लूट

● गुड्डू कुमार सिंह

भोजपुर के गजराजगंज ओपी क्षेत्र के बीबीगंज बाजार स्थित ग्रामीण बैंक में हुई लूट मामले में चार अज्ञात लूटेरों के खिलाफ प्राथमिकि दर्ज कराई गई है। पुलिस द्वारा प्राथमिकि दर्ज कर लूटेरों की पहचान करने और गिरफ्तारी में जूट गई है। उधर बैंक लूट की पुरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस लूटेरों की पहचान करने में जूटी है। कैमरे में देखा जा रहा है कि चार संख्या में लूटेरे गमछे से मुंह बांधे हुये हैं और बैंक के अंदर घूसने के साथ एक आदमी को पिस्तौल के बट से मारते हैं और पिस्तौल दिखा कर सभी को डराते हैं। सभी ग्राहकों के साथ बैंक कर्मियों को एक जगह कोने में कर देते हैं। दो लूटेरे कैस काउंटर पर जाते हैं और महिला बैंक कर्मी को डराकर काउंटर में रखे करीब बारह लाख 96 हजार 469 रुपये झोले में रख आराम से निकल जाते हैं। घटना की सूचना मिलने पर पहले गजराजगंज ओपी प्रभारी चंदन कुमार बैंक पहुंचे थे और एसपी को सूचना दी थी। सूचना मिलते ही एसपी बिनय तिवारी व एएसपी हिमांशू सहित करीब आधा दर्जन थानों की पुलिस पहुंची थी। एसपी ने काफी देर तक छान-बीन की और बैंक कर्मियों से पुछ-ताछ की थी। मामले में देर रात बैंक के शाखा प्रबंधक सुधांशू कुमार द्वारा लिखित आवेदन देकर चार अज्ञात लूटेरों के खिलाफ थाने में मामला दर्ज कराया गया।

☞ **लूटेरों के भागने के बाद बजा था बैंक का शायरन** :--बीबीगंज बैंक में लूट के दौरान किसी बैंक कर्मी की हिम्मत नहीं हुई की बैंक का शायरन बजा सके। लेकिन लूटेरों के बैंक के गेट पर निकलते ही एक महिला बैंक कर्मी द्वारा शायरन बजाया गया। हालांकि तब तक सभी लूटेरे रुपये लेकर बैंक से बाहर निकल चुके थे और जब तक कोई कुछ कर पाता सभी अपाची बाईक पर सवार हो आरा की ओर भाग चुके थे।

☞ **जाते समय छीन ली महिला बैंक कर्मी की मोबाईल** :- बीबीगंज बैंक में लूट की घटना को अंजाम देने के बाद लूटेरों ने कैस काउंटर पर बैठी महिला बैंक कर्मी का मोबाईल छीन लिये और अपने साथ लेकर चले गये। लूटेरे बैंक से जाते समय बैंक का एक कमप्यूटर भी पटक कर तोड़ दिये थे। बैंक कर्मियों के साथ मारपीट भी कि ये थे। हालांकि कोई भी बैंक कर्मी या ग्राहक के जख्मी होने की जानकारी नहीं है।

☞ **लूट के अगले दिन बैंक में रही सामान्य स्थिति** :- बीबीगंज स्थित ग्रामीण बैंक में रोज की तरह मंगलवार को स्थिति सामान्य थी। रोज की तरह कई ग्राहक बैंक में जमा-निकासी करने पहुंचे थे। हालांकि बैंक कर्मियों के अंदर सोमवार की घटना साफ तौर पर देखी जा रही थी। बैंक में आने-जाने वाले हर एक लोग पर नजर रखी जा रही थी।

☞ **ओपी प्रभारी घटना के अगले दिन खुद पहुंचे बैंक** :- गजराजगंज ओपी प्रभारी चंदन कुमार बीबीगंज स्थित ग्रामीण बैंक में लूट की घटना के अगले दिन मंगलवार को खुद बैंक पहुंचे। बैंक में पहले एक चौकीदार की ड्यूटी रहती थी। लेकिन घटना के अगले दिन दो चौकीदारों को ड्यिूटी पर लगा दिया गया। साथ ही ओपी प्रभारी ने बैंक मैनेजर के साथ बैंक की सुरक्षा को लेकर कई बिन्दुओं पर चर्चा की और कई दिशा निर्देश भी दिया।

लंबे इंतजार के बाद यूक्रेन से अपने घर पहुंचा राकेश

● गुड्डू कुमार सिंह

भोजपुर के उदवंतनगर प्रखंड के नवादाबेन गांव का रहने वाला राकेश कुमार सिंह मंगलवार की देर शाम लंबे इंतजार के बाद यूक्रेन से अपने गांव नवादाबेन पहुंच गया। राकेश के घर पहुंचते ही उसकी मां राधिका देवी सहित उसके दिव्यांग पिता और दो छोटी बहनों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा और सभी उसके गले से लिपट कर खुशी के आंशू रोने लगे। बता दें कि नवादाबेन निवासी मिथलेश सिंह का एकलौता पुत्र राकेश बीते 6 साल पहले मेडिकल की पढाई करने यूक्रेन गया था। यूक्रेन के खारकीव शहर में स्थित मेडिकल कॉलेज में वह पढाई कर रहा था। अब महज दो महिने की पढाई बची थी और मुख्य परीक्षा देने के साथ ही डिग्री लेकर वापस घर आने वाला था कि अचानक दो देशों के बीच जंग छिड़ गई। रुस ने यूक्रेन पर हमला कर दिया। इसमें यूक्रेन में पढाई कर रहे सभी भारतीय छात्रों को वापस अपने देश लौटना पड़ा। अपने घर वापसी के लिये भी कई तरह की परेशानियों का

सामना करना पड़ा। बीते लगभग 15 दिनों से चल रही लड़ाई के बीच कई छात्र तो पहले ही अपने घर पहुंच गये थे। लेकिन राकेश को अपने घर वापसी के लिये करीब 15 दिनों का लंबा इंतजार करना पड़ा। दोपहर करीब चार बजे पटना एयरपोर्ट से विशेष वाहन से राकेश को उसके घर तक पहुंचाया गया।

☞ **माता पिता का एकलौता पुत्र है राकेश** :-नवादाबेन का राकेश अपने माता-पिता का एकलौता पुत्र है और उसके पिता की करीब दो साल पहले एक दुर्घटना में रीढ की हड्डी टुट गई थी। तब से वे चल-फिर नहीं सकते और बिस्तर पर पड़े रहते हैं। उधर राकेश की दो छोटी बहने निकी और खुशबू की शादी करनी बाकी है। दोनों इंटर और बीए की छात्रा हैं। राकेश की पढाई पुरी होने की आस में उसके माता-पिता समय काट रहे थे। लेकिन उन्हें अभी और इंतजार करना पड़ेगा। कारण की पढाई अभी पुरी नहीं हुई है। राकेश को अभी मेडिकल की डिग्री नहीं मिली है।

☞ **राकेश के पहुंचते ही गांव के लोग पहुंचे उसके घर** :- यूक्रेन से राकेश के घर पहुंचते ही उसके गांव के लोग और राकेश के कई दोस्त जो उसके आने का इंतजार कर रहे थे। सभी लोग राकेश से मिलने पहुंचे थे। सभी ने राकेश के उसकी घर वापसी पर भगवान का शुक्रिया किया। राकेश के आने पर उसके घर खुशी का माहौल था। गांव के कई लोग उससे मिलने और उसे देखने राकेश के घर पहुंच रहे थे।●

विदेशी शराब के साथ तस्कर गिरफ्तार

भोजपुर जिले के चरपोखरी थाना क्षेत्र के सेमराव दुलौर टोला गांव के एक शराब तस्कर को 20 लीटर विदेशी शराब के साथ गिरफ्तार कर चरपोखरी पुलिस ने जेल भेज दिया। गिरफ्तार अभियुक्त बुटेश्वर सिंह का पुत्र संतोष कुमार बताया जा रहा है।गिरफ्तार शराब तस्कर को कई थानों की पुलिस तलाश कर रही थी। इसके ऊपर चरपोखरी गड़हनी एवम उदवंतनगर थाना में प्राथमिकी दर्ज था। चरपोखरी थाना प्रभारी प्रशान्त कुमार ने बताया कि गुरुवार की संध्या नियमित रूटीन के तहत गश्ती लगा रही थी उस दौरान गुप्त सूचना मिली कि अभियुक्त शराब के साथ उदवंतनगर के तरफ से आ रहा है। जिसके बाद शसस्त्र बल के सहयोग से अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी के दौरान विदेशी शराब किंगफिशर स्ट्रांग 40 पीस फ्रूटी बरामद की गई। गहन पूछताछ के बाद गिरफ्तार अभियुक्त ने अपने सहयोगी शराब कारोबारियों का नाम पता बताया। जिसके बाद पुलिस ने शराब तस्करों के कई ठिकानों पर छापेमारी की जहां तस्कर फरार हो गए। थाना क्षेत्र के गड़हनी बिचली पट्टी गांव में पुलिस ने उपेन्द्र साह के पुत्र बिट्टू कुमार के घर से छापेमारी के दौरान लगभग 22 लीटर विदेशी शराब बरामद किया।थाना प्रभारी ने बताया कि गड़हनी बिचली पट्टी निवासी उपेन्द्र साह के पुत्र बिट्टू कुमार बरनी गांव निवासी चन्द्रभूषण सिंह के पुत्र कल्लू कुमार उर्फ विक्रांत चरपोखरी गांव निवासी अंगद साह के पुत्र ऋषि कुमार साह नगराव गांव निवासी उमेश दुबे के पुत्र रितेश दुबे एवम हरियाणा के गुरुद्वार जाट सुमित एंड कंपनी के खिलाफ मध निषेध के तहत एफआईआर दर्ज किया गया है। ● **रिपोर्ट :-गुड्डू कुमार सिंह**

शोभा का वस्तु बना नगर पंचायत गड़हनी का सामुदायिक शौचालय

गड़हनी भोजपुर जिले के गड़हनी प्रखंड क्षेत्र के गड़हनी को नगर पंचायत का दर्जा मिलने के बाद लोगों को सुविधा के नाम पर महज कुछ खास इलाको में सफाई कर्मियों द्वारा झाड़ू लगाया जाता है। जबकि नप क्षेत्र के कई इलाकों में आज तक कर्मियों द्वारा न तो झाड़ू लगाया जाता है न ही नालियों का सफाई किया जाता है। साफ सफाई के नाम पर महीना में लाखों रुपया की निकासी कर लिया जाता है। गड़हनी बनास नदी पुल के सटे बने सामुदायिक शौचालय वर्षो से शोभा का वस्तु बना है। लाखों रुपया खर्च कर सामुदायिक शौचालय का निर्माण करवाया गया है लेकिन आज तक उसमें ताला बंद रहने के कारण उसका उपयोग शुरू नहीं हो पाया है। वहीं फुटपाथी दुकानदार शौचालय के सामने ही अपना दुकान लगाकर बैठ जाते हैं। ग्रामीणों ने बताया कि ताला बंद रहने के चलते बाजार आये लोगों को शौच जाने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है खासकर महिलाओं युवतियों को ज्यादा परेशानी होती है।●

रिपोर्ट :-गुड्डू कुमार सिंह

नशा मुक्ति अभियान को गति देने के बहाने शिक्षकों की गरिमा कम कर रही सरकार : नन्दजी सिंह

● गुड्डू कुमार सिंह

28 जनवरी को अपर मुख्य सचिव के द्वारा बिहार राज्य के सभी विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्यों शिक्षको को आदेश निर्गत किया गया है कि चोरी छिपे शराब पीने वाले या उसकी आपूर्ति करने वाले लोगों की पहचान कर मद्य निषेध विभाग को सूचना देने का काम करें। इस आदेश का गडहनी शिक्षक सह जिला प्राथमिक शिक्षक संघ के सचिव नन्द जी सिंह ने विरोध जताया है। उक्त आदेश पर संघ के प्रखण्ड शिक्षक शिक्षकेतर कर्मियों ने कहा कि बिहार सरकार इन शराब माफियाओं से शिक्षकों का जान जोखिम में डाल दिया है। जिससे शिक्षकों की जान पर खतरा उत्पन्न हो गया है। साथ ही शिक्षकों की गरिमा भी धूमिल की जा रही है। बिहार सरकार एक राजनीति के तहत शिक्षकों को परेशान करने का काम कर रही है। सभी कर्मी का काम करने का एक दायरा होता है। शिक्षकों को सरकार उस दायरे में काम करने दें। जो काम मद्य निषेध और पुलिस विभाग का है वैसे काम शिक्षकों से नहीं करायें। जिला प्राथमिक शिक्षक संघ इस तुगलकी फरमान का घोर विरोध करता है। वहीं जिला सचिव ने कहा कि एक तरफ बिहार सरकार शराबबंदी को लेकर सभी शिक्षकों को कड़े आदेश से गैर शैक्षणिक कार्यों में लगाकर शैक्षणिक व्यवस्था पर ग्रहण लगा रही है वहीं दूसरी तरफ से सरकारी व्यवस्था को अंगूठा दिखाते हुए खुले बाजार में मादक पदार्थों जैसे गांजा भांग हीरोइन चरस आदि बिक रहा है यहां तक कि गांजा पीने के लिए गोगो जैसे पेपर हर चाय और पान की दुकानों पर खुलेआम बिक रहा है जिसका सेवन कर युवा पीढ़ी अपने मानसिक संतुलन को बर्बाद कर पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था को अशांत कर दिया है। जिला प्राथमिक शिक्षक संघ की मांग है की सरकार शराब के साथ साथ पूर्ण नशाबंदी कानून लागू कर सख्ती से पालन करें।●

जिलाधिकारी ने किया वाहन वितरण

● गुड्डू कुमार सिंह

मुख्यमंत्री मत्स्य विकास योजना अंतर्गत जिले के अति पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति संवर्ग के मत्स्य कृषकों एवं विक्रेताओं को मत्स्य विपणन कार्य हेतु वाहन का वितरण जिलाधिकारी भोजपुर के हाथों किया गया। विदित हो कि मुख्यमंत्री मत्स्य विकास योजना पूरे राज्य में एक साथ क्रियान्वित है जिनमें कई अवयव मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए समाहित किए गए हैं जिसमें प्रमुखता से तालाब का निर्माण मत्स्य बीज हैचरी का निर्माण ट्यूबेल एवं पंप सेट बने हुए तालाब में उन्नत बीज एवं उर्वरक को उपलब्ध कराने की योजना के साथ-साथ मत्स्य विपणन हेतु वाहनों का वितरण कार्य किया जाता है। आज के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मत्स्य पालकों के द्वारा स्वच्छ वातावरण में ग्राहकों को मछलियों की उपलब्धता सुनिश्चित कराना है

जिससे आम जनता को मछलियों की उपलब्धता सुलभ हो पाए। वाहनों का वितरण करते हुए जिलाधिकारी ने सभी लाभुकों से उनका परिचय एवं प्राप्त वाहन के उपयोग से संबंधित जानकारी ली गई, उनके द्वारा इस कारोबार को एक ऊंचे मुकाम तक ले जाने के लिए सभी लाभुकों को प्रेरित किया गया। जिलाधिकारी ने मत्स्य विपणन हेतु किए गए वाहन वितरण के कार्यक्रम पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की तथा जिला मत्स्य पदाधिकारी को निर्देशित किया कि सरकार के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने का विशेष कार्यक्रम किया जाए तथा अपने क्षेत्रीय पदाधिकारियों को इस कार्य के लिए आज से ही लगा दिया जाए । व्यापक प्रचार प्रसार के लिए समाचार पत्रों के माध्यम से इसकी सूचना आम जनता तक पहुंचाई जाए जिससे आम जनता खासकर बेरोजगार नवयुवक इस कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लें एवं अपना रोजगार स्वयं प्रारंभ कर पाए।●

भोजपुर पुलिस ने चोरी के 60 मोबाइल उनके मालिकों को सौंपा

● गुड्डू कुमार सिंह

पुलिस ने चोरी, छिनतई, लूट और गुम हुए मोबाइल बरामदगी कर मोबाइल धारकों को सुपुर्द कर दिया है। इनके लिए एसपी की ओर से स्पेशल टीम गठित की गयी है। जिला प्रशासन की ओर से लगातार अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के 6वे चरण में आज 60 मोबाईलों की बरामदगी की गयी है। पुलिस ऑफिस में सभी मोबाइल उनके धारकों को सौंप दिए गए। एसपी विनय तिवारी ने बताया कि मोबाइल चोरी,छिनतई की बढ़ रही घटनाओं को देखते हुए बरामदगी को लेकर एक टीम गठित की गयी है। टीम सभी थानों में दर्ज मोबाइल चोरी की घटना की जानकारी एकत्रित कर बरामदगी में जुट जाती है। इसके बाद टीम वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान के जरिए मोबाइल को खोज रही है। इस क्रम में टीम की ओर से 6वें चरण में अब तक अलग-अलग क्षेत्रों से 60 मोबाइल बरामद किये गये हैं। बरामद मोबाइल के

स्वामित्व का सत्यापन करने के बाद धारकों को सौंप दिया गया।●

शिकायत पर विद्यालय पहुचे अगिआंव विधायक

● गुड्डू कुमार सिंह

अभिभावको के शिकायत पर अगिआंव विधायक मनोज मंजिल बुधवार की देर शाम प्रखण्ड मुख्यालय स्थित कस्तूरबा गाँधी विद्यालय गडहनी पहुंच विद्यालय का किया औचक निरीक्षण साथ ही छात्राओं की समस्याओ को सुना। विधायक ने बताया कि विद्यालय मे 100 छात्राओं का नामांकन दर्ज है लेकिन मात्र 35

छात्राएं ही मौजूद थी। उन्होने कहा कि विद्यालय के छः सात और आठ वीं क्लास की छात्राओं को हिन्दी भी अच्छे ढंग से पढने नही आ रही है। वहीं सामान्य जोड़ घटाव की बात की जाये तो परिणाम संतोषजनक नही मिला। छात्राओं के प्रति पढाई की कोई गुणवत्ता ही नही पाई गई।

वहीं उन्होने कहा कि निरीक्षण दल ने पाया कि विद्यालय मे तीन शिक्षक और एक वार्डन के पद सृजित है लेकिन मात्र एक शिक्षक और एक प्रभारी वार्डन ही नियुक्त है। विद्यालय मे शिक्षको की नियुक्ति और मूलभूत सुविधाओ का अभाव पाया गया साथ ही विद्यालय की चारदीवारी भी जर्जर है। ●

छात्रावास के भवन पर बना डॉ. अम्बेडकर का आकर्षक पोर्टेट

● गुड्डू कुमार सिंह

शहर के कतीरा मोड़ स्थित अंबेडकर कल्याण छात्रावास के भवन पर बाबा साहब डॉ भीम राव अंबेडकर का भव्य पोर्टेट ग्राफिक्स बनाया गया। जो आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। छात्रावास के तीन मंजिला भवन पर भारत रत्न संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर की 30 फिट ऊँची पोर्टेट बनायी गयी है। जिला कल्याण पदाधिकारी रवि प्रकाश ने बताया कि कतीरा मोड़ स्थित अम्बेडकर छात्रावास की मरम्मती और रंगाई-पोताई कराने के बाद डॉ अम्बेडकर की पोर्टेट बनवाई गई है। मिराकी कम्पनी के 6 कलाकारों ने मिलकर पोर्टेट को बनाया है। इन कलाकारों में सुनील कुमार, अरिश शर्मा, स्वेता शर्मा, रंजन कुमार, जय कुमार व अमन कुमार प्रमुख हैं। वहीं अन्य छात्रावास के भवनों पर भी डॉ अंबेडकर का ग्राफिक्स पोर्टेट बनवाया जा रहा है। अंबेडकर छात्रावास में रहने वाले छात्रों में इस पोर्टेट के बनने से काफी खुशी देखी जा रही है। उन छात्रों का कहना है कि वे सभी अपने कमरों में डॉ अंबेडकर की प्रतिमा लगा कर रखते हैं। अब इतने बड़े ग्राफिक्स पोर्टेट के बनने से हर

वक्त उन्हें बेहतर महसूस होता रहेगा। ●

किसानों की लगी लाइन पर गड़हनी थानाध्यक्ष ने कराया लाठीचार्ज

● गुड्डू कुमार सिंह

यूरिया खाद आने की खबर मिलते ही मंगलवार की सुबह किसानो की एक अच्छी खासी भीड गडहनी थाना पर उमड पडी और देखते ही देखते एक लम्बी लाइन खडी हो गई। एक एक करके किसानो का पूर्जा थाना मे बने काउन्टर से काटा गया। अहले सुबह से देर शाम तक भूखे प्यासे किसान अपने नम्बर की प्रतिक्षा मे लाइन मे खडे रहे। बहुत से किसान पूर्जा कटवाने मे सफल भी रहे और कुछ किसानो को पुलिस का कोपभाजन का शिकार भी होना पडा। बिस्कोमान मैनेजर अपनी सुविधा के लिए थाना के माध्यम से पूर्जा कटवाने की ब्यवस्था कर दी। किसानो का कहना है कि थाना पर पूर्जा कटवाओ और बिस्कोमान से खाद उठाओ ऐसे मे डेढ किलोमीटर का फासला होने से हम सभी को काफी परेशानी भी उठानी पडी। वहीं सिहार बरघारा लभुआनी गडहनी के कुछ किसानो ने बताया कि हमलोग लाइन मे खडे थे भीड अधिक थी लाइन तितर बितर हो रही थी इसी बीच लाइन को लेकर थानाध्यक्ष संतोष रजक द्वारा लाठीचार्ज करा दिया गया जिससे कुछेक किसान चोटिल हो गए। वहीं लभुआनी निवासी किसान सह पूर्व सैनिक राम दयाल सिंह व गडहनी के रहने वाले किसान सह समाजिक कार्यकर्ता अक्षयवट ओझा ने थानाध्यक्ष को दबंगई और मनमानी को लेकर आरा सर्किट हाउस मे कृषि मंत्री से मिल किसानो के साथ हो रहे अत्याचार, खाद की समस्या और थानाध्यक्ष के रवैये को लेकर शिकायत की। ●

अश्रु

अश्रु क्या है तू क्या जाने?
आंसू की कीमत ना पहचाने
जब शब्द हृदय में चुभता है,
तब भेद हृदय की नदियां को
चक्षु से नीर निकलता है।

जब दिल में उम्मीदें जागे
जब ख्वाब अधूरे पूरे हो
ठोकर खा खा कर चलना हो,
खुद ही उठना और संभालना हो
तब भेद हृदय की नदियां को
चक्षु से नीर निकलता है।
जब कोई खुशी का मौसम हो
और शाम भी थोड़ी ऑसम हो
मिलने की आस लिए बैठे,

जब प्रियतम बिछड़े मिलते हो
तब भेद हृदय की नदियां को
चक्षु से नीर निकलता है।
जब छोड़ के कोई जाता है
दिल तोड़ के कोई जाता है
अपना-अपना ना हो करके,
मुंह मोड़ के कोई जाता है
तब भेद हृदय की नदियां को
चक्षु से नीर निकलता है।

अश्रु का कोई वक्त नहीं
बिन बोले ही आ जाता हैं
तपती हृदय की ज्वाला भी,
शीतल सी ठंड कर देती है
तब भेद हृदय की नदियां को
चक्षु से नीर निकलता है।

प्रस्तुतिः- पूजा भूषण झा
वैशाली, बिहार।

ग्राम कचहरी का स्वरूप धरातल पर दिखना चाहिए : सरपंच

● मणिभूषण तिवारी/अभिषेक कुमार सिंह

भोजपुर के चरपोखरी प्रखण्ड के ग्राम पंचायत कोयह से दूसरी बार सरपंच पद के लिए आम चुनाव 2021 में विजयी प्रतिमा कुमारी ने एक प्रश्न के जवाब में बताया कि ग्राम कचहरी का अपना स्वरूप पूरी तरह से धरातल पर दिखना चाहिए। सिर्फ कुर्सी, टेबुल और कम्प्युटर से ढ़ांचागत ग्राम कचहरी नहीं बनता। सभी ग्राम कचहरी में बायोमेट्री मशीन से सभी कर्मचारी न्यायमित्र, न्याय सचिव, सरपंच, उपसरपंच एवं पंचों की हाजिरी लगनी चाहिए। साथ ही सरकार के द्वारा सुरक्षा की भी पूर्ण व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि किसी असमाजिक तत्वों का दबाब नहीं रहे। मैं अपने ग्राम कचहरी के बारे में बता दूं कि 2016 से ही हमारे ग्राम कचहरी में न्यायमित्र और न्याय सचिव नहीं है। ग्राम कचहरी का संचालन अल्प अंश के आधार पर होता चला आया है। अगर पी.पी.एल. सूचि में सुधार के नाम जोड़ने की प्रक्रिया व्यवस्था में काफी समस्या है। आज भी कई ऐसे गरीब परिवार हैं जिनका ना तो जॉब कार्ड बना है और ना ही आधार। कई ऐसे गरीब मजदूर किसान हैं, जिनकों सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। सरकार की मंशा है कि सभी लाभुकों को, जो उसका वाजिब हकदार हैं, सरकारी योजनाओं का उसे पूरा लाभ मिले, परन्तु कई लोग जानकारी के आभाव में सरकारी योजनाओं का लाभ लेने से वंचित रह जाते हैं। इसके लिए

ग्राम पंचायत के सभी प्रतिनिधियों को मिलकर कार्य करना चाहिए ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंच सके। कुछ चंद लोगों ने सरकारी योजनाओं का बंदरबांट करके सरकार की मंशा पर पानी फेर रहे है। उस पर लगाम लगाना चाहिए ताकि एक स्वच्छ एवं खुशहाल समाज का निर्माण किया जा सकता है। ग्राम कचहरी के वास्तविक स्वरूप नहीं होने के कारण आज थाना और कोर्ट-कचहरी पर अनावश्यक केश का दबाब बढ़ते जा रहा है। मैं आपके केवल सच पत्रिका के माध्यम से सरकार से आग्रह कर रही हूं कि ग्राम कचहरी को और सशक्त बनाया जाये ताकि थाना और कोर्ट-कचहरी के दबाब को कम किया जा सके। त्रिस्तरीय पंचायत प्रतिनिधियों के वेतन की अगर बात की जाये तो ये साफ हो जाता है कि इसके बारे में सरकार की मंशा ठीक नहीं है, क्योंकि दैनिक मजदूर या फिर मनरेगा मजदूर के बराबर भी पंचायत प्रतिनिधियों को वेतन नहीं मिलता है। अगर मैं मनरेगा मजदूरों की बात करूं तो कई मजदूर ऐसे हैं जिनकों उनका मजदूरी का पैसा लेने के लिए घूस देना पड़ता है। ऐसे में विकास का पहिया कैसे चलेगा, ये सोचना काफी चिंताजनक है। अगर मैं शराबबंदी की बात करूं तो ये नशाखुरानी गिरोह भी इसी समाज के अंग हैं। इनको चिन्हित कर बैंक से लोन दिलवाकर उन्हें कौशल विकास के माध्यम से प्रशिक्षित करवाकर समाज की मुख्यधारा में लाकर समाज को नशाखोरी से बचाया जा सकता है, तभी स्वस्थ्य समाज का निर्माण संभव हो सकेगा। अन्यथा कई पुलिसकर्मी अफसर एवं नेता शराब के कारोबारियों को फायदा पहुंचाने में लगे रहेंगे। सीधी से बात है, 'न रहेगा बांस, ना बजेगी बांसुरी'। जब गलत तरीके से पैसा कमाने वाले लोगों को सही काम तलाशने में परेशानी ना हो और सही काम से उनका जिविकोपार्जन होने लगे तो वो गलत काम नहीं के बराबर करेंगे और ना ही उसमें उनका परिवार या समाज साथ देगा।●

जीविका ने लाखों परिवारों को सहारा दिया

● मणिभूषण तिवारी/अभिषेक कुमार सिंह

चरपोखरी, भोजपुर से लिये गये डाटा के अनुसार इस ब्लॉक से कुल जीविका समूहों की संख्या 1045 है। इन समूहों की अगर बात करें तो समूह से आने वाले गरीब परिवार के महिलाओं को माइक्रो फाइनेंस के अंतर्गत बैंक लोन दिलाया गया है, जिससे की अनेक परिवारों को उनके खेती-बारी एवं पशुपालन में काफी मदद मिली है। दूसरा कम्युनिटी फाईनेंस है, जिसके द्वारा जीविका परियोजना राशि मुहैया करवाती है। एक गांव में 10-12 समूह खोलवाने का संकूल स्तरीय संघ का निर्माण करवाया गया। अगर स्ट्रक्चर की बात की जाये नगरी कलस्टर ए में सावित्री जीविका समूह कार्य करती हैं। सीएलएफ मेनैनी में ग्राम संगठनों की संख्या 76 की है। तीसरा कम्युनिटी बेस्ट ऑर्गेनाइजेशन के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों का गठन करवाया जात है तथा परियोजना कि ओर से रेकरींग फंड एवं इनिशियल कैपिटिलाइजेशन फंड ग्राम संगठन को मुहैया करवाई जाती है। इसमें 4 तरह के फंड सम्माहित रहते हैं-1. हेल्थ रिस्क फंड 2. फूड सिक्योरिटी फंड 3. स्टेवलिस्मेंट फंड और 4. वैराइटी डिडक्शन फंड। इससे जीविकोपार्जन की शुरूआत होती है। ये परियोजना 2018 में शुरू की गई है। एसजेवाई के द्वारा वर्क प्रोफाइल के हिसाब से सेकेंड टर्म में 50000 (पचास हजार) तक लोन दिलाने का प्रावधान है। मैं आपको जानकारी के लिए बता दूं कि वैसे परिवार जो शराब और ताड़ी के व्यवसाय से कालांतर में जुड़े रहे हैं और उनके महीने की आमदनी 5000 (पांच हजार) से कम हो, वैसे परिवारों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। अगर सत्यापन के समय जांच टीम को फॉर्म में दिये आवेदन का डाटा सही पाया गया तो बेशक जीविका समूह वैसे परिवारों को जीविकोपार्जन का सहारा बन जाता है। एक ग्राम संगठन में एक संगठन से प्रति महिला परिवार को 10000 (दस हजार) का लोन शुरूआत में देने का प्रावधान है।●

सिमुलतला विद्यालय प्रवेश परीक्षा में भोजपुर के छात्र ने लहराया परचम

● मणिभूषण तिवारी/अभिषेक कुमार सिंह

भोजपुर के चरपोखरी प्रखण्ड अंतर्गत इंहौर गांव के उत्तम गुप्ता ने छः क्लास के लिए सिमुलतला आवासीय विद्यालय, जमुई के प्रवेश परीक्षा 2022 में बिहार के टॉप लिस्ट में दूसरे स्थान पर अपना कब्जा जमाया जबकि पहले स्थान पर आदित्या कमल और आकर्ष शर्मा रहे। आदित्या कमल एवं आकर्ष को परीक्षा परिणाम में कुल 291 अंक प्राप्त हुए एवं उत्तम गुप्ता ने दूसरे स्थान पर 290 अंक प्राप्त कर भोजपुर का गौरव बढ़ाया। केवल सच प्रतिनिधि से मुलाकात के दौरान उत्तम ने बताया कि मैं पुलिस अधिकारी बनना चाहता हूं। उत्तम के पिता मंटू कुमार गुप्ता से पूछे जाने पर उन्होंने इस बाबत बताया कि मेरा बेटा जो भी पढ़ना चाहता है, उसमें मेरा पूरा सहयोग रहेगा। उत्तम जिस विद्यालय में पूर्व से पढ़ते आ रहा है, वह विद्यालय महुआबाग आवासीय विद्यालय अरवल के नाम से जाना जाता है। उत्तम ने अरवल स्थित महुआबाग विद्यालय के बारे में बताया कि वहां पढ़ाई में कोई ढ़ील नहीं दी जाती है। वहां पर खेलकूद की अच्छी व्यवस्था है, परन्तु खाने-पीने की व्यवस्था सही नहीं है। लेकिन क्या करेंगे पढ़ना है तो कष्ट तो सहना ही पड़ेगा। आवास के बारे में बताया कि आवासीय परिसर में जगह कम एवं छात्रों की संख्या ज्यादा है। उत्तम ने अपने टीचर के साथ फोटो शेयर करते हुए बताया कि वहां की शिक्षा प्रणाली काफी सुदृढ़ है

तभी तो हम सफल हो पाते हैं। ●

दे दनादन कैनवास मैच का आयोजन किया गया

● मंटू कुमार

नोखा नगर परिषद के पंश्चिम पंट्टी फील्ड पर देदनादन कैनवास मैच का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन समाजिक कार्यकर्ता धनजी सिंह ने किया मुख्य अतिथि के रुप मे नोखा कार्यपालक पदाधिकारी अमित कुमार ने किया मौके पर उपस्थित राजेंद्र कुमार सिंह गुलाम मोहम्मद रामेश चौहान अवधेश चौहान मुन्ना मंसुरी विजय सेठ ब्रिज बिहारी गुप्त जेई अंकुर गगन एस आई चंद्र शेखर शर्मा एस आई शैलेन्द्र कुमार ने बैलून उड़ाकर किया। इसके बाद पहले लीग मैच का टॉस हुआ। जिसमें नोनसारी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का निर्णय लिया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी भलुआडी की टीम ने निर्धारित 6 ओवर में 8 विकेट खोकर 40 रन का स्कोर खड़ा किया। जबाब में खेलने उतरी नोनसारी 1विकेट खोकर 42 रन असानी बना लिया जिसमे नोनसारी ने 9बिकेट से लीग जीतकर क्वाटर फाइनल में अपनी जगह पक्की की। इस मैच में 13 बॉल पर 27 रन व दो विकेट लेने वाले नोनसारी के अंकित कुमार को मैन ऑफ द मैच दिया गया। मैच में एम्पायर की भूमिका कुन्दन कुमार अमित कुमार ने निभाया यह टूर्नामेंट मैच में 16 टीम भाग लिया है दे दनादन के अध्यक्ष दानिश खान ने बताया कि हर मैच 6 ओभर का सेमीफाइनल मैच 10 ओभर का होगा सभी मै मैन आफ द मैच आकर्षण गिफ्ट दिया जाएगा मैच का कार्यकर्ता दानिश खान टना कुमार चंदन कुमार गोबिंद कुमार छोटु सिंह बेलाल कलाम साबीर उपस्थित थे।●

किसानों की जरूरतों को पूरा करने में स्थानीय एजेंसियां निभा रही भूमिका

● मंटू कुमार

रेटेशन रोड स्थित सोनालिका ट्रैक्टर एजेंसी का उद्घाटन युवा जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार ने किया। इस मौके पर युवा जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय संस्थान व एजेंसियां महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। किसानों को स्थानीय स्तर पर ही कृषि उपकरण,ट्रैक्टर आदि मुहैया होने से उन्हें बाहर जाने की परेशानियों से निजात भी मिल सकेगा। उद्घाटन के मौके पर पहुंचे पहले ग्राहक के रूप में रामजी पांडे को प्रोपराइटर विजय कुमार द्वारा उपहारस्वरूप एंड्रॉयड मोबाइल फोन भी प्रदान किया गया। मौके पर पवनसुत इंटरप्राइजेज के निदेशक विजय कुमार, पवनसुत राईस मिल प्रोपराइटर महेंद्र कुमार, देवेंद्र मिश्रा, सुमंत पांडे, अनुज गुप्ता आदि मौजूद थे। ●

विश्व इतिहास की धरोहर उपेक्षा का शिकार क्यों?

● बिन्ध्याचल सिंह

भारत की तकदीर का फैसला करने वाला बक्सर का ऐतिहासिक कतकौली का युद्ध स्थल मैदान आज भी उपेक्षित है जबकि बक्सर मार्च–1991 में जिला के रूप में बिहार के मानचित्र पर आया। भारतीय समाज की राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूपरेखा को बदलने वाले सन् 1764 ईस्वी के अति महत्वपूर्ण संग्रम की युद्धस्थली कतकौली का मैदान संपूर्ण विश्व इतिहास की अन्यतम धरोहर होने के बावजूद आज तक पूर्णतया उपेक्षित हो रही है। ऐतिहासिक युद्ध स्थल वर्तमान में बक्सर नगर से सटे जासो कतकौली, अहिरौली आदि गॉवो के आस–पास के क्षेत्रों मे लडा गया था। भारतीय इतिहास में मील के पत्थर के रूप में स्थापित यह अतिमहत्वपूर्ण युद्ध–23 अक्टुबर 1764ई0 को हेक्टर मुनरों के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा और अवध के नवाब शुजाउदौला मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय एवं बंगाल के नवाब मीरकासिम की संयुक्त सेना के बीच लडा गया। इतिहासकारो के अनुसार कलकता के पास कासीम बाजार के युद्ध में अंग्रेजो से हारकर बंगाल के नवाब शुजाउदौला से सहायता प्राप्त करने के लिए पटना से होते हुए इलाहाबाद पहुँचा। संयोग से तब मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय भी इलाहाबाद में ही मौजुद था। मीर कासिम द्वारा सहायता मांगे जाने पर शुजाउदौला और शाह आलम दोनो ही अंग्रेजो के खिलाफ लडने को तैयार हो गये। तीनो की सम्मलित सेना ने अग्रेजों से टक्कर लेने के लिए पटना की ओर प्रस्थान कर दिया। इस बीच अंग्रेजो को इसकी सूचना मिलने पर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना भी हेक्टर मुनरों के नेतृत्व में बक्सर आ पहुँची। बक्सर के पास ही दोनो सेनाओ के बीच कतकौली मैदान में घमासान लडाई हुई। कहा जाता है कि इस लडाई में भारतीय सेना से लगभग डेढ लाख सैनिक थे जबकि अंग्रेजो के पास मात्र दस हजार सैनिक थे। इस संदर्भ में बक्सर के वरीय अधिवक्ता सह साहित्यकार रामेश्वर प्रसाद वर्मा का कहना है कि कुछ इतिहासकारों ने भारतीय फौजो में सैनिको की संख्या लगभग–50000 तथा अंग्रेजो सैनिको की संख्या लगभग–4072 बताई गई। महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीयो के मुकाबले अंग्रेजो के पास आधुनिक हथियार और तोपे थी। जबकि भारतीय सैनिको के पास तलवार तीर तथा अन्य पांरपरिक हथियारो के सहारे ही अंग्रेजो से लडना चाहते थें। ईस्ट इडिया कम्पनी की सुसज्जित और संगठित सेना से सामना होते ही भारतीय सैनिक चारो तरफ भागने लगे। तोप का गोला की बौछार के सामने भारतीय सेना बौनी साबित हुई। हांलाकि लडाई में मीर कासिम बहादुरी से लडा, लेकिन अंततः उसे पराजित होना पडा। लगभग 25000 या उससे अधिक भारतीय सैनिक इस लडाई में मारे गये और अनेक सैनिक भागने के दौरान गंगा नदी में डुबकर मर गये। इसके विपरित मात्र एक हजार अंग्रेज सैनिक इस युद्ध में मारे गये। हांलाकि अंग्रेजो के मुताबिक उनके सैनिक मात्र–874 सैनिक इस युद्ध में मारे गये। दोनो तरफ के हजारो सैनिको की इस लडाई का फैसला महज साढे तीन घंटे में हो गया। भारतीय फौज इस युद्ध में बुरी तरह से हार गई और भारतीय शासकों को अग्रेजों के साथ हुई संधि की अपमानजक शर्तो को मानने के लिए बाध्य होना पडा। श्री वर्मा आगे बताते हैं कि इस युद्ध के महत्व का अंदाजा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि इस युद्ध में विजय से अंग्रेजों को मुगलों का एकमात्र विकल्प और तत्कालीन भारत में सर्वोच्य शक्ति के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया। भारतीय इतिहास के अन्यतम स्थान रखने वाले इस युद्ध में अनेक शोध हो चुके है। आज भी अनेक विद्वान और छात्र इस युद्ध के विभित्र पहलुओ पर शोध कर रहे है। साहित्यकार प्रो0 कमल बिहारी सिह का कहना है कि इस युद्ध में विजय के बाद अंग्रेजो को बंगाल, बिहार और उडीसा के राज्य में दीवानी मिल गयी थी। डॉ0 ईश्वरी प्रसाद युद्ध के परिणामो को विवचेना करते हुए लिखते है कि अब कम्पनी के बल व्यापरिक संस्थान ही रही, बल्कि उसके हाथ में राजस्व शक्ति भी आ गयी। निश्चय ही इस युद्ध ने भारत में अंग्रेजों की स्थिति सुदृढ कर दी। कई दृश्टियो से यह युद्ध प्लासी के युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण था। इस युद्ध के द्वारा अंग्रेज समूचे बंगाल सूबे के स्वामी बन गये और अवध का नवाब शुजाउदौला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय उनके हाथ के खिलौना मात्र बन गये। इतना महत्वपूर्ण स्मारक स्थल होने के बावजुद इसकी उपेक्षा शर्मसार करने वाली है। इसके बारे में आगे बताते हुये श्री वर्मा ने कहा कि भारत के भाग्य में बडा परिवर्तन लाने वाले इस युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी गवाह वह मैदान जहॉ की लडाई लडी गयी। जिला मुख्यालय से लगभग 3–4 किमी0 दूर है। अग्रेजो ने विजय के उसी मैदान में एक स्मारक रौजा का निर्माण कराया था। यह स्मारक स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग–84 के दक्षिण दिशा में स्थित है। यह स्मारक सिकुडकर बहुत छोटा हो गया है। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्रम के वक्त आजादी के दीवानो ने अंग्रेजो की विजयी के प्रतीक चिन्ह इस स्मारक को तोड दिया था। परन्तु स्मारक के पत्थर आज भी पडे हुए है। स्मारक के निर्माण के लिए चुनार की कम्पनी ने पत्थर आपुर्ति की थी। स्मारक के चारो तरफ लगे पत्थरों पर चार भाषाओ अंग्रेजी, हिन्दू , उर्द् तथा बंगाला में भारतीय फौज पर अंग्रेजो की जीत का वर्णन उत्कीर्ण था। स्मारक के चारों कोनो पर चार मीनों बनायी गयी थी। बाद में स्थानीय लोगो ने अंग्रेजो के खिलाफ आक्रोशित होकर इस स्मारक को ध्वस्त कर दिये परन्तु इसके अवशेष वही पडे हुए हैं। अब इसी स्मारक को संपूर्ण युद्ध के मैदान के रूप में रेखाकिंत किया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि युद्ध का विस्तार कर किलोमीटर के दायरे में था। स्मारक सिकुडकर बहुत छोटा हो गया है। स्मारक परिसर में झाडी उग चुकी है। स्मारक से तरकीबन सौ मीटर की दूरी पर पुरब दिशा में दो मजारें है, जिनके बारे में कहा जाता है कि ये शुजाउदौला के सैनिक अब्दुला गुलाम और अब्दुला कादिर की है। स्थानीय कतकौली गॉव के लोग बताते है कि उक्त शहीदो का सालाना उर्स प्रत्येक साल हिजारी के ग्यारहवें महीने की सतरहवें तारीख को मनाया जाता है। एक ग्रमीण ने बताया कि पहले उर्स के मौके पर कव्वाली और बडे जलसे का आयोजन किया जाता था पर अब यह आयोजन धीरे–धीरे सिमटता जा रहा है। मजार के बगल में एक कुआ होने की बात लोग कहते है। जो अब भर चुका है और अतिक्रमण के दायरे में दफन भी हो चुका है। लोगों का कहना है कि कुँए में भारतीय सैनिको की लाशे और हथियार भी दफनाया गया है। कतकौली गॉव के लोग बताते है कि बहुत पहले ही कुँए की खुदाई की योजना बनी पर उस पर अमल नही हो सका। शहर के बुद्धिजीवी और आस–पास के ग्रामीण इस ऐतिहासिक धरोहर को सौदर्यीकरण कर पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किये जाने की जरूरत पर जोर देते है। ग्रामीणो के अनुसार बहुत पहले तत्कालीन राज्यपाल डॉक्टर ए0आर0किदवई यहॉ आये थे उस वक्त स्मारक का थोडा सौदर्यीकरण किया गया था। बाद में तत्कालिन राज्य सांसद नागेन्द्र नाथ ओझा की निधि से थोडा सौदर्यीकरण का कार्य हुआ था।●

क्या मुख्यमंत्रियों ने ही बिहार को बिमारू राज्य बना दिया?

● ललन कुमार प्रसाद

आज देश में बेरोजगारी की समस्या इतनी विकराल हो गई है कि पीउन (चपरासी) और सिक्युरिटी गार्ड के 100-200 पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं, जिनकी न्यूनत्तम योग्यता पांचवी या सातवीं पास होती है, तो लाखों में आवेदन आ जाते हैं। उनमें काफी संख्या में ऐसे आवेदनकर्ता होते हैं, जो बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम, एम.ए., एम.ए.सी., एम.कॉम, बी.एड., एम.एड., बी.बी.ए., एम.बी.ए, बी.सी.ए., एम.सी.ए. और इंजीनियर भी होते हैं। इसलिए साक्षात्कार के समय भारी भीड़ जमा हो जाने से बेरोजगार युवकों की भीड़ नियंत्रण के बाहर हो जाती है और भारी हंगामा मच जाता है। ये बेरोजगार युवाओं में व्याप्त निराशा और हताशा का परिणाम है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए किसी बड़े खतरे से कम नहीं है। वैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बेरोजगारी की विकराल समस्या से काफी व्यवहारिक और कारगर तरीके से निपटने का प्रयास कर रहे हैं, वरना आज की तारीख में भारत देश का क्या होता?

इस आलेख में बिहार के उस हिस्से की चर्चा की जा रही है, जो नवम्बर 2000 में बिहार का हिस्सा बना रहा। बिहार के उस हिस्से की बात नहीं की जा रही है, जो नवम्बर 2000 में बिहार से अलग होकर नये बने झारखण्ड राज्य का हिस्सा बन गया। किसी भी राज्य की समृद्धि के लिए उस राज्य में पर्याप्त संख्या में उद्योग तथा उन्नत शिक्षण संस्थानों का होना अनिवार्य है। यहां पर पहले उद्योगों के बारे में चर्चा करेंगे, फिर शिक्षा पर चर्चा करेंगे।

आजादी से पहले बिहार की गिनती देश के समृद्ध राज्यों में होती थी, लेकिन आजादी के बाद देश के गरीब और बिमारू राज्य में होने लगी। वैसे भी अधिकतर राजनेता डकैत ही होते हैं, क्योंकि जनता की सेवा करने के नाम पर अपने परिवार को अधिकाधिक समृद्ध बनाने के लिए आम जनता की संपत्ति को लूटते हैं और भविष्य में इस काम को जारी रखने के लिए राज्य की सत्ता पर अपनी और अपने परिवार जनों को कब्जा बनाये रखते हैं। अर्थात् लोकतंत्र को परिवारतंत्र में तब्दील कर देते हैं। इस रोग से देश के हर राज्य के ज्यादातर नेतागण थोड़ा-बहुत ग्रस्त हो गये हैं। जैसे-उत्तर प्रदेश के मुलायम सिंह यादव का परिवार और महाराष्ट्र के उद्धव ठाकरे का परिवार, लेकिन इस मामले में बिहार शिखर पर है। जैसे-लालू प्रसाद यादव का परिवार और रामविलास पासवान का परिवार। इसलिए चुनाव के समय वोट देते समय जनता को राजनेताओं द्वारा रचे गये इस षड्यंत्र को अपने जेहन में रखना चाहिए, वरना भारत देश को हर तरह से बर्बाद कर देने से कोई नहीं रोक सकता। इस मामले में राष्ट्रीय स्तर पर नेहरू- गांधी परिवार शिखर पर है। यही कारण है कि भारत देश बहुत अधिक पिछड़ गया है। देश के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि वर्ष 2014 में भारत के मुखिया नरेन्द्र मोदी बन गये, वरना आज की तारीख में देश गर्त में चला गया होता।

अधिकतर नेतागण, जिन्हे दो जून के लिए रोटी जुटाना मुश्किल होता था, आज अरबों-खरबों में खेल रहे हैं। आम जनता की संपत्ति लूटकर अरबों-खरबों का मालिक बन गये हैं। इस कुटिल काम में अधिकतर सरकारी मुलाजिमों की बराबर की हिस्सेदारी होती है। लेकिन जब नेतागण चुनाव में वोट मांगने के लिए जनता के सामने जाते हैं तो एकदम से नादान बच्चों की तरह मासूम और निरीह बनकर नौटंकी करने लगते हैं कि हम आपकी खुशहाली और समृद्धि को लेकर दिन-रात इतने चिंतित रहते हैं कि मरे जा रहे हैं। जनता की खुशहाली और समृद्धि ही हमारी असली धरोहर है। चुनाव के समय मतदाताओं के समक्ष उनसे कहते हैं कि बस आप मुझे अपना कीमती वोट देकर जिता दीजिए, बदले में आपके जीवन को खुशहाल बनाने के लिए हम हर तरह की सुख-सुविधाओं को लाकर आपके चरणों में रख देंगे। मसलन एक राजनेता, जिन्हें आप सभी पाठक अच्छी तरह से जानते हैं। उनके बोलने का लहजा बहुत ही मनोरंजक होता है। वे कहते हैं कि मेरे जीते जी आपको बिजली, पानी की कोई दिक्कत नहीं होगी, जबकि उनके शासनकाल में बिहार में बिजली की भारी किल्लत थी। सूबे के सभी सड़कों को हेमा मालिनी की गाल की तक चिकना बनवा दूंगा, जबकि उनके शासनकाल में

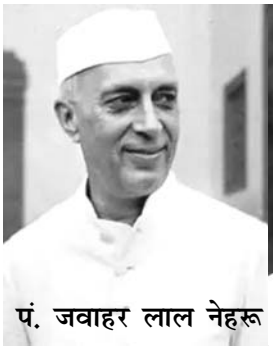

पं. जवाहर लाल नेहरू

इंदिरा गांधी

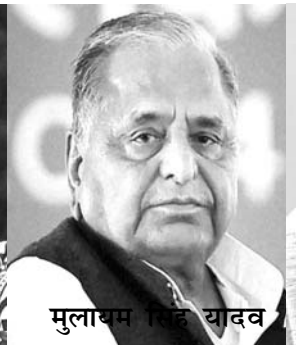

मुलायम सिंह यादव

उद्धव ठाकरे

लालू प्रसाद यादव

सड़कों की भारी कमी थी और जो सड़के थी, वह गड्ढ़ों से भरी-पटी होती थी। लेकिन उनके और उनकी पत्नी ने पन्द्रह सालों के शासन के बाद जब नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री बने तो बिहार में बिजली की हालत बहुत सुधर गयी और सूबे में सड़कों का जाल बिछा दिया गया। किन्तु उद्योगों की भारी कमी के चलते इनके शासनकाल में बेरोजगारी की समस्या पहले से भी बद्दतर हो गयी है। खाली दिमाग शैतान का कारखाना होता है। इसलिए बेरोजगार युवाओं ने अपराध को ही अपना व्यवसाय बना लिया है।

1947 में जब देश आजाद हुआ था तो उस समय चीनी उद्योग के मामले में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद बिहार देश में तीसरे पायदान पर था, जो धीरे-धीरे बिहार सरकार की लापरवाही के चलते बंद होती चली गयी। अब बिहार में महज आठ सुगर फैक्ट्रियां बची है, जो चालू अवस्था में है। लेकिन पहले जैसी अच्छी अवस्था में नहीं है, क्योंकि पहले के मुकाबले इन सुगर फैक्ट्रियों में काफी कम चीनी का उत्पादन हो रहा है। आजादी के समय बिहार में 28 सुगर फैक्ट्रियां थी, जिनमें से 20 चीनी फैक्ट्रियों के बंद होने के चलते 20 टाउनशीप का अवसान हो गया है और बिहार देश के समृद्ध राज्य से बिमारू राज्य में तब्दील हो गया। वर्ष 1964 में बरौनी तेल शोधक (रिफाइनरी) कारखाने के रूप में बेगूसराय टाउनशीप स्थापित हुआ। उसके बाद बरौनी में फर्टीलाइजर कारखाने की स्थापना हुई, जो दशकों तक बंद पड़ी रही। नरेन्द्र मोदी सरकार की प्रयास से इसे पुन: चालू करने के लिए आईओसीएल, एनटीपीसी, कोल इंडिया और एचएफसीएल का संयुक्त उपक्रम हिन्दुस्तान उर्वरक रसायन लिमिटेड (हर्ल) बनाया गया

और 8388 करोड़ रूपये आवंटित किये गये। 17 फरवरी 2019 को इस प्रोजेक्ट का काम शुरू किया गया। फिलहाल 95% काम पूरा हो चुका है। इसी साल जून में बरौनी उर्वरक कारखाना में उत्पादन शुरू हो जायेगा। इस कारखाने से प्रतिदिन 2200 मीट्रिक टन अमोनिया और 3850 मीट्रिक टन नीमकोटेड यूरिया का उत्पादन होगा। इस कारखाने में कई हजार लोगों को सीधे नौकरी मिल गयी है।

अगर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 2005 में अपने द्वारा किये गये वादे को निभाते तो आज बिहार में कुल 42 सुगर फैक्ट्रियां चालू अवस्था में होती। पहले के 28 सुगर फैक्ट्री तथा 16 नये सुगर फैक्ट्री। अकेले चम्पारण जिले (पूर्वी चम्पारण और पश्चिमी चम्पारण) में 9 सुगर फैक्ट्रियां थी और चम्पारण की भूमि कि मिट्टी देश में सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी मानी जाती है। इन 28 सुगर फैक्ट्रियों में से 15 सुगर फैक्ट्रियां सरकारी थी। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि बिहार कितना समृद्ध राज्य था और चम्पारण कितना समृद्ध जिला। अंग्रेज कितने दूरदर्शी थी। उन्होंने चम्पारण को देश का सर्वाधिक समृद्ध औद्योगिक जिला बना दिया। उक्त 28 सुगर फैक्ट्रियों से बिहार में चीनी का जितना उत्पादन होता, उससे आज पूरा देश की जरूरत पूरी हो जाती। लेकिन आज बिहार की गिनती देश के एक गरीब और बिमारू राज्य में की जाती है। रोजी-रोटी के जुगाड़ में बिहार के लाखों लोगों को गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि राज्यों में मेहनत मजदूरी करने की नौबत नहीं आती, उनका

नरेन्द्र मोदी

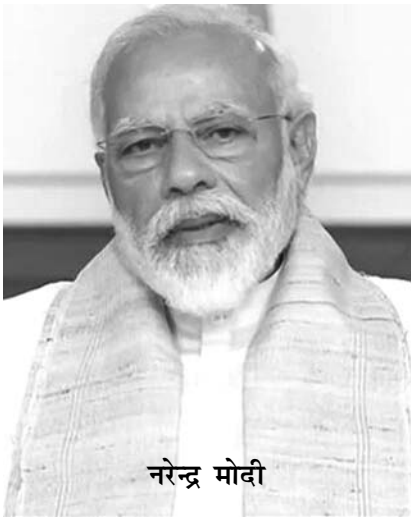

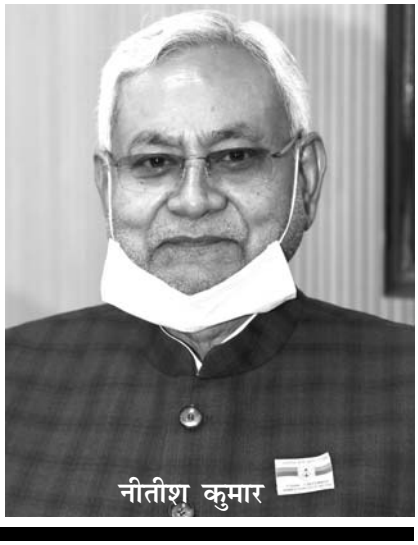

नीतीश कुमार

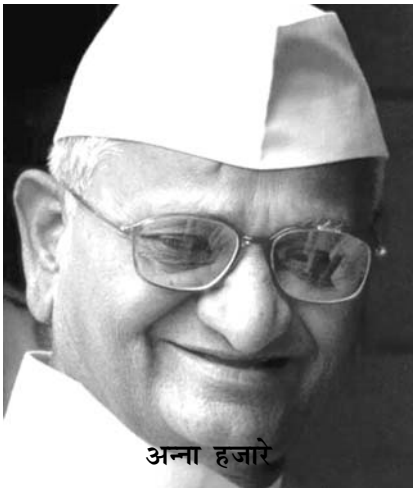
अन्ना हजारे

अरविन्द केजरीवाल

कन्हैया कुमार

मेहनत बिहार के उत्थान में लगता। आज बिहार में बेरोजगारी की समस्या इतना विकराल रूप धारण नहीं करती और लाचारी में लाखों की संख्या में युवा नशाखोरी और अपराध को व्यवसाय नहीं बनाते। पिछले साल मार्च में दिल्ली में लॉकडाउन के चलते लाखों बिहारी मजदूरों की नौकरी चली गयी थी, तो मुसिबत की घड़ी में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने उन मजदूरों को हो रही बिजली और पानी की आपूर्ति बंद कराकर उन्हें दिल्ली से जबर्दस्ती भगा दिया था या यूं कहिए कि निकाल दिया था। ऐसी क्रूरता तो इंसान नहीं, शैतान ही कर सकता है। जबकि दिल्ली के उत्थान में लाखों बिहारी मजदूर दशकों से अपना खून-पसीना बहाते आ रहे हैं। अरविन्द केजरीवाल कुर्सी के लिए कुछ भी कर सकते हैं और कुछ भी उलटा-सीधा काम किया भी है। सुविख्यात समाजसेवी अन्ना हजारे ने जिस अरविन्द केजरीवाल को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाने में सर्वाधिक अहम भूमिका निभाया था, उसी अन्ना हजारे को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठते ही केजरीवाल ने ठेंगा दिखा दिया। जेएनयू के तत्कालिन अध्यक्ष कन्हैया कुमार जब अफजल गुरू के समर्थन में देश को टुकड़े-टुकड़े करने का नारा लगा रहे थे, तो अरविन्द केजरीवाल ने जेएनयू के कैंपस में जाकर जेएनयू छात्रसंघ के देशद्रोही नेताओं का पुरजोर समर्थन किया था। जब सीएए को लेकर दिल्ली के शाहीनबाग में सार्वजनिक रास्ता रोककर सीएए विरोधी आन्दोलन चल रहा था तो अरविन्द केजरीवाल ने उस आन्दोलन का जोरदार समर्थन किया था।

किसी भी राज्य के उत्थान में उद्योगों की कितनी अहम भूमिका होती हैं, इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि नवम्बर 2000 में बिहार के विभाजन के बाद बिहार देश के बिमारू राज्य से देश के भिखारी राज्य में तब्दील हो गया, क्योंकि जमशेदपुर स्थित टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी, टाटा मोर्टस कंपनी सहित बिहार के 99% कारखाने झारखण्ड का हिस्सा बन गये। इसका श्रेय बिहार के तत्कालिन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को जाता है, जिन्होंने सत्ता में बने रहने के लिए बिहार का बंटवारा कर बिहार के करीब 40% हिस्से को बिहार से अलग कर नया झारखण्ड राज्य बनवा दिया। उद्योग के साथ सारे के सारे खनिज भंडार झारखण्ड के हिस्से में पड़ गये। सभी जानते हैं कि नवम्बर 2000 में बना झारखण्ड एक रत्नगर्भा राज्य है। इस तरह लालू प्रसाद यादव ने बिहारियों के हांथों में भीख मांगने के लिए कटोरा थमवा दिया। लालू प्रसाद यादव ने सत्ता में बने रहने के लिए बिहारियों की पीठ में खंजर घोंप दिया। उन्होंने बिहारवासियों से वादा किया था कि मैं अपने जीते जी बिहार का बंटवारा नहीं होने दूंगा और यदि खुदा न खास्ते बिहार का बंटवारा होता है तो मेरी लाश पर होगा।

जब बिहार में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि बिहार के 28 में से बंद पड़ी 20 सुगर फैक्ट्रियों को यथाशीघ्र चालू करवा दूंगा और 16 नये सुगर फैक्ट्री खुलवा दूंगा। लेकिन 17 वर्षों से लगातार मुख्यमंत्री बने रहने के बावजूद बंद पड़े 20 में से एक भी सुगर फैक्ट्री चालू न करवा सके। नये सुगर फैक्ट्री की स्थापना कराना तो दूर की कौड़ी है, बल्कि नीतीश कुमार ने इस मुद्दे को काफी जटिल बना दिया। मसलन पूर्वी चम्पारण के बारा चकिया सुगर फैक्ट्री को ही ले लीजिए। यह सुगर फैक्ट्री 15 सितम्बर 1994 से बंद पड़ी है। अंग्रेजों द्वारा बिहार में स्थापित करायी गयी यह राज्य की पहली सुगर फैक्ट्री है। उस समय नील का उत्पादन सिर्फ चम्पारण में ही होता था, जिसकी खेती अंग्रेजों द्वारा चम्पारण में करायी जाती थी। बारा चकिया सुगर फैक्ट्री के साथ नील की फैक्ट्री भी स्थापित थी। उस समय नील का उत्पादन पूरी दुनियां में सिर्फ चम्पारण में स्थापित नील की फैक्ट्रियों में की जाती थी। जिसे पूरी दुनियां में निर्यात कर अंग्रेज मालोमाल हो रहे थे। यह बात मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समझ में कैसे नहीं आयी? बारा चकिया सुगर फैक्ट्री के पास अकूत संपत्ति थी। गन्ना उपजाने के लिए हजारों एकड़ जमीन था। सामान्य कर्मियों को रहने के लिए बहुत अच्छा आवास था। अधिकारियों और जेनरल मैनेजर को रहने के लिए बेहतरीन कोठियां थी। एक शानदार गेस्ट

हाउस भी था। एक शानदार गोशाला था, जिससे बारा चकिया की जनता को गाय के शुद्ध दूध की आपूर्ति होती थी। बिजली की आपूर्ति हेतु बारा चकिया सुगर फैक्ट्री का अपना पावर हाउस था, जिसे मशीनों को चलाने के लिए बिजली की आपूर्ति की जाती थी। फैक्ट्री के कर्मियों और अधिकारियों के आवास में चौबिसों घंटे मुफ्त में बिजली और पानी की आपूर्ति की जाती थी। अर्थात् सभी आवासीय मुलाजिम साहब की जिंदगी जीते थे, लेकिन नीतीश सरकार ने बारा चकिया सुगर फैक्ट्री के खरबों की संपत्ति को 2009 में कुछ ही करोड़ में इस शर्त पर बेच दिया कि जो व्यक्ति उसे खरीदा है, शिघ्रातिशीघ्र चीनी का उत्पादप शुरू कर देगा, लेकिन उस व्यक्ति ने शिघ्रातिशीघ्र फैक्ट्री की कीमती मशिनों के कटवाकर स्क्रैप के रूप में तब्दील कर बेच दिया। अर्थात् बारा चकिया सुगर फैक्ट्री की मशिनों का वजूद ही खत्म कर दिया। सिर्फ स्क्रैप बेचने से ही उसे खरीद के मुकाबले उसे बहुत अधिक पैसे मिल गये। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि बारा चकिया सुगर फैक्ट्री को स्थापित करने में कितना पैसा लगा होगा। यह बारा चकिया और आसपास के कम से कम 25 वर्ग किलोमीटर की जनता के सुख-चैन की डकैती नहीं तो और क्या है? क्या इस डकैती को नीतीश सरकार के सहयोग के बगैर अंजाम तक पहुंचाना संभव था? बारा चकिया फैक्ट्री के मालिक ने किसानों से चार-पांच साल तक लिये गये करोड़ों रूपये के गन्ने का भुगतान नहीं किया। फैक्ट्री के मालिक ने फैक्ट्री के मुलाजिमों को चार-पांच महीने के वेतन का भी भुगतान नहीं कियां

यहां पर इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि आजादी के पहले अंग्रेजों के शासनकाल में बिहार में 28 सुगर फैक्ट्रियां थी, जिसका मतलब है 28 टाउनशीप था। एक सुगर फैक्ट्री के चलते हजारों लोगों को सीधे नौकरी मिली थी। गन्ना नगदी फसल है, इसलिए सुगर फैक्ट्री के आसपास के करीब 30-32 वर्ग किलोमीटर के किसान गन्ना का फसल उगाकर खुशहाल जीवन जीते थे। सुगर फैक्ट्री के कर्मी, अधिकारी, आसपास की जनता और किसान को मिलाकर कई वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में एक लंबा-चौड़ा टाउनशीप बच गया था। इस तरह 28 में से सिर्फ 8 ही टाउनशीप बचे हैं। शेष 20 टाउनशीप लालू-राबड़ी सरकार के समय से ही उजड़ते चले गये, जिन्हें नीतीश सरकार बचा न सकी।

दूसरा उदाहरण मेहसी के सीप उद्योग को ही ले लीजिए। पूर्वी चम्पारण के बुढ़ी गंडक (सिकरहना) नदी के किनारे स्थित मेहसी में आज से करीब 120 साल पहले सीप बटन फैक्ट्री की स्थापना की गई थी। उस समय मेहसी (मुजफ्फरपुर और मोतिहारी के बीच में स्थित) में सीप बटन बनाने की करीब 108 इकाइयां थी। अंग्रेज मेहसी स्थित सीप बटन उद्योग की अहमियत को समझते थे, इसलिए उनके समय में मेहसी का सीप बटन उद्योग खूब फला-फूला था। उस समय दुनियांभर में जापान के आलावा सिर्फ भारत के बिहार राज्य के मेहसी में ही सीप से विभिन्न प्रकार के आकार और आकृति के बटन बनाये जाते थे, जो बीतते समय के साथ इतिहास बन गया। ऐसा इसलिए कि नायलन के सस्ते और मजबूत बटन ने सीप के बटन का वजूद ही मिटा दिया। मेहसी के लोग बड़े ही सृजनात्मक और खोजी प्रकृति के होते हैं। वे लोग सीप के बटन की जगह सीप के अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे खिलौने तथा घर के सजावट की वस्तुएं बनाने लगे। सीप को रंगने का शोध कार्य मेहसी के लोगों ने ही किया है। सीप के बने खिलौने और सजावट की वस्तुएं प्राकृतिक होने के साथ-साथ बहुत ही सुंदर, आकर्षक और मनमोहक दिखते हैं, मानों जैसे ईश्वर ने सीप का निर्माण इन्ही मनमोहक वस्तुओं के लिए किया है। देश-विदेश में इन वस्तुओं की भारी मांग है। ऐसा इसलिए कि सीप के बने प्राकृतिक खिलौने और सजावट की वस्तुओं के सामने प्लास्टिक के बने खिलौने और सजावट की वस्तुएं कबाड़ की तरह दिखती है। फिर इन वस्तुओं को बनाने का कच्चा माल सीप है, जिसका खजाना सिकरहना नदी है। बावजूद इसके मेहसी में इनका उत्पादन इतनी कम मात्रा में होता है कि देश में ही ये वस्तुएं देखने को नहीं मिलती है और विदेशों में भी इसका निर्यात न के बराबर होता है, जबकि भारत सहित पूरी दुनियां में ये वस्तुएं बेहद पसंद की जाती है। बावजूद इसके मेहसी का सीप बटन उद्योग बिहार सरकार की उद्योगों के प्रति उदासीनता के चलते बंदी के कगार पर पहुंच गया है। यदि बिहार सरकार इस उद्योग को प्रेरित करने में

समुचित रूचि लेती तो सीप उद्योग बिहार को समृद्ध बनाने में बहुत ही अहम भूमिका निभाता तथा बिहार का नाम पूरी दुनियां में रौशन करता और कई हजार लोगों को इस उद्योगों में सीधे नौकरी मिल जाती। कम से कम एक हजार लोगों को रोजगार अवश्य ही मिल जाता। इतना ही नहीं, मेहसी का सीप उद्योग अद्‌भुत ऐतिहासिक धरोहर है। इसलिए पूरे देश को मेहसी के सीप उद्योग पर गर्व होना चाहिए। फिर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ऐतिहासिक महत्व के धरोहरों की अहमियत को समझते हैं, जिसका प्रमाण है बिहार की राजधानी पटना के अतिविशिष्ट इलाका बेली रोड के किनारे सैकड़ों करोड़ों की लागत से बिहार म्यूजियम का निर्माण कराया जाना और उसे सजाने तथा समृद्ध बनाने में लगा रहना। ऐसे में मेहसी का सीप उद्योग उनकी नजरों से ओझल क्यों हैं? इस उद्योग के प्रति उनके मन में क्यों नहीं रूचि पैदा हो रही है।

यदि मेहसी के सीप उद्योग की ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ध्यान आकृष्ट किया जाये तो निश्चित रूप से वह अपने 'लोकल फॉर भोकल' मिशन के तहत इस उद्योग को यथाशीघ्र ऊँचाई पर पहुंचाने के लिए पुरजोर प्रयास करेंगे, जिससे देश-विदेश में हर जगह सीप से बने मेहसी के बने प्राकृतिक खिलौने और सजावट की वस्तुओं की धूम मच जायेगी। क्योंकि नरेन्द्र मोदी असली जोहरी हैं। वह इस तथ्य को पलक झपकते ही समझ जायेंगे, लेकिन बिहार के सभी सांसदों को मोतियाबिंद हो गया है, तभी तो आज तक बिहार के किसी भी सांसद ने एक बार भी मेहसी के सीप उद्योग की चर्चा नहीं की है। मैं शर्तिया दावा करता हूं कि चीन, जो पूरी दुनियां में सर्वाधिक खिलौना तथा सजावटी वस्तुओं का निर्यात करता है और भारत का नंबर वन दुश्मन देश है, वह भी भारी मात्रा में मेहसी में बने सीप के खिलौने तथा सजावटी वस्तुओं का निर्यात करेगा। विदेशों से अच्छी-खासी मात्रा में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होगी तथा पूरी दुनियां में बिहार का नाम रौशन होगा।

यह बिहार के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है कि यहां के सभी मुख्यमंत्रियों ने उद्योगों के महत्व को नहीं समझा और इसलिए उद्योगों के प्रति उदासीन बने रहे। ऐसे ही मुख्यमंत्रियों के चलते आजादी के पहले का समृद्ध बिहार आजादी के बाद देश का एक गरीब और बिमारू राज्य बन गया।

★ **देर आये दुरूस्त आये :-** पिछले एक साल से लग रहा है कि बिहार में उद्योगों को स्थापित करने को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सोच में सकारात्मक बदलाव आया है, जो बिहार के विकास के लिए शुभ संकेत हैं। मुख्यमंत्री को लगने लगा कि औद्योगिकरण के बदौलत ही बिहार को बिमारू स्टेट से विकासशील स्टेट में तब्दील किया जा सकता है। औद्योगिकरण ही विकास की रीढ़ और बेरोजगारी की समस्या का निदान है। इसलिए बिहार में औद्योगिक क्रान्ति का होना आवश्यक आवश्यकता है। उद्योग बढ़ेंगे तो रोजगार का सृजन होगा और रोजगार का सृजन होगा तो रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तो रोजगार पाकर युवाओं के दिमाग का खालीपन दूर होगा। दिमाग का खालीपन शैतान का कारखाना है। दिमाग का खालीपन दूर होगा तो युवाओं के दिमाग में नशा करने की प्रवृति नहीं आयेगी और नशा करने की प्रवृति नहीं आयेगी तो अपना करीयर बनाने के लिए सोचेंगे और करीयर के बारे में सोचेंगे तो अपराधी बनने की प्रवृति दूर हो जायेगी। ऐसा इसलिए कि उनके पैसे की जरूरत रोजगार मिलने से पूरी हो जायेगी।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार कृषि के क्षेत्र में पहले से ही अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। अनाजों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने में देश में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए बिहार सरकार को केन्द्र सरकार ने पांच बार 'कृषि कर्मण पुरस्कार' से पुरस्कृत किया है। बिहार राज्य को वर्ष 2011-12 में चावल, 2012-13 में गेंहू, 2015-16 और 2017-18 में मक्का और 2018-19 में गेंहू के उत्पादन में उत्कृष्टता को लेकर 'कृषि कर्मण पुरस्कार' मिल चुका है। अनाजों के साथ-साथ दूध, मछली, अंडा आदि के उत्पादन में भी बिहार तेजी से आगे बढ़ रहा है। राज्य में दूध का उत्पादन 2011-12 में 65.17 लाख टन था, जो वर्ष 2018-19 में बढ़कर 98.18 लाख टन हो गया। आज दूध के उत्पादन में बिहार देश में चौथे पायदान पर है। अंडा का उत्पादन वर्ष 2016-17 में 111.17 करोड़ था, जो वर्ष 2019-20 में बढ़कर 265 करोड़ हो गया। राज्य के मछली उत्पादन ने वित्तीय वर्ष 2020 में पड़ोसी राज्य और नेपाल को 30 हजार टन मछली का निर्यात किया था। वर्ष 2004-05 से वर्ष 2019-20 के पन्द्रह साल में पंजाब ने कृषि में महज 2% की वृद्धि दर्ज की, जबकि बिहार ने 4.8 की वृद्धि

दर्ज की। अर्थात् पंजाब से ढ़ाई गुना अधिक वृद्धि दर्ज की।

अब बिहार में उद्योगों की बारी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में पिछले एक साल में बिहार में उद्योगों की स्थापना के लिए 38 हजार 906 करोड़ रूपये के 614 निवेश के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। सिर्फ इथेनॉल प्लांट की स्थापना के लिए 30 हजार 382 करोड़ रूपये के निवेश का प्रस्ताव आया है। इथेनॉल प्रोत्साहन नीति के तहत राज्य में 17 इथेनॉल प्लांट स्थापित किये जाने का काम चल रहा है। मार्च के अंतिम सप्ताह या अप्रैल के प्रथम सप्ताह में कम से कम चार इथेनॉल प्लांट का उद्घाटन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के हाथों हो जायेगा। ये चारों इथेनॉल प्लांट आरा, गोपालगंज और पूर्णिया जिलों में लगाये गये हैं। बिहार का वार्षिक इथेनॉल कोटा 18.50 करोड़ लीटर से बढ़ाकर 35.58 करोड़ लीटर प्रतिवर्ष कर दिया जायेग। इससे बिहार सरकार को राजस्व के रूप में अच्छी खासी आमदनी होगी। 557 करोड़ की लागत से बेगूसराय में पेप्सी को बॉटलिंग प्लांट पिछले एक साल से बनकर लगभग तैयार हैं। इसमें फ्रूट जूश प्रोसेसिंग प्लांट भी स्थापित किया गया है। तसर किस्म के रेशम विकास योजना के अंतर्गत बांका, जमुई, नवादा, रोहतास और बेतिया (पश्चिम चम्पारण) जिले में 6120 एकड़ जमीन में रेशम फॉर्म पौधारोपण किया गया है। खादी संस्थानों को 320 आधुनिक करघा खरीदने के लिए 90% अनुदान पर बुनकरों को राशि उपलब्ध करायी गयी है। बिहार में नये-नये खादी मॉल स्थापित किये जा रहे हैं। खादी और हैण्डलूम के क्षेत्र में बिहार तेजी से आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन बिहार में उद्योगों की स्थापना हेतु तेजी से काम कर रहे हैं। खादीग्राम उद्योग का तो उन्होंने कायाकल्प ही कर दिया है। उद्योगों को स्थापित करने के प्रति शाहनवाज हुसैन की तत्परता को देखकर आजादी के बाद पहली बार ऐसा महसूस हो रहा है कि बिहार में कोई उद्योग मंत्री भी है। उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद ने ऐलान किया है कि केन्द्र सरकार की आर्थिक मदद से मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत 16 हजार बेरोजगार लोगों को प्रति व्यक्ति पांच लाख रूपये अनुदान और पांच लाख कर्ज सहित कुल दस लाख रूपये दिये जायेंगे। पिछले एक साल में बिहार में 87 औद्योगिक इकाइयां स्थापित की जा चुकी है। इससे 2 लाख रोजगार सृजन हुआ है। ऐसा इसलिए एक-एक ईकाइ में सैकड़ों लोगों को रोजगार मिला है। मुख्यमंत्री सुक्ष्म एवं लघु उद्योग क्लस्टर विकास योजना के तहत 10 क्लस्टरों में सामान्य सुविधा केन्द्र स्थापित की गई है, जिनमें सर्वाधिक प्रमुख मखाना क्लस्टर केन्द्र है। फिलहाल बिहार में प्रतिवर्ष 13.37 लाख क्वींटल मखाना का उत्पादन हो रहा है। नतीजा सूखा फल मखाना की लोकप्रियता विदेशों में बढ़ रही है और बिहार को विदेशी मुद्रा की कमायी हो रही है। औद्योगिक क्षेत्रों की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करने के लिए मुजफ्फरपुर स्थित बेला औद्योगिक क्षेत्र के लिए 115 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है। सिर्फ पिछले एक साल की अवधि में बिहार उद्योगपतियों के लिए एक पसंदीदा राज्य के रूप में उभरा है। जिस तरह से आज बिहार में उद्यागों की स्थापना हेतु तेजी से काम चल रहा है और बिहार में ही लाखों बेरोजगारों को रोजगार मिल रहा है, उससे लगता है कि काम की तलाश में यहां के लोगों के पलायन में भारी कमी आ जायेगी। बिहारियों का मेहनत बिहार के उत्थान में लगेगा। हाल ही में दिल्ली के प्रगति मैदान में लगाये गये अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला में बिहार को प्रथम पुरस्कार मिला है।

तारकिशोर प्रसाद

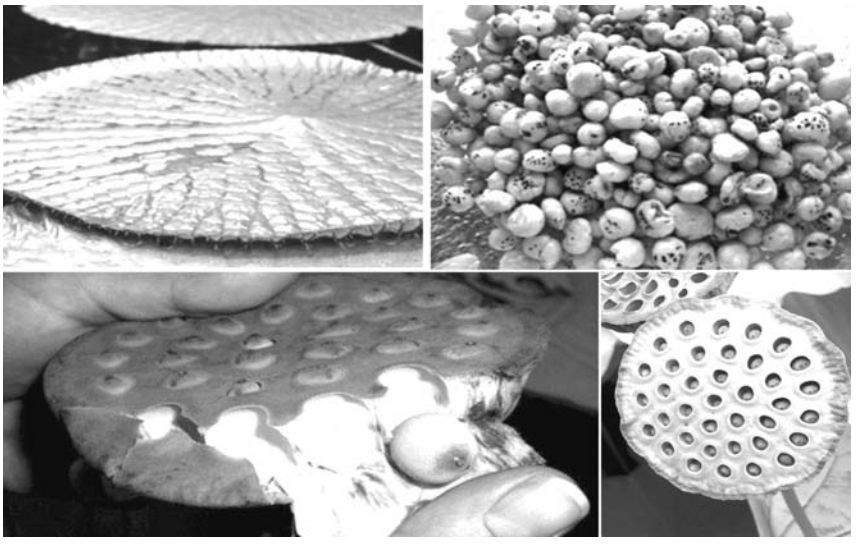

बिहार में बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए अब नीतीश सरकार कितनी जागरूक हो गयी है, इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि बिहार सरकार टेक्सटाईल इंड्स्ट्रीज को बढ़ावा देने के लिए टेक्टटाईल पॉलिसी बनायी है, जिसका ऐलान वह इसी महिने कर देगी। इस नीति के तहत बिहार सरकार लैंड कनवर्सन, स्टांप ड्यूटी, कौशल विकास, पेटेंट रजिस्ट्रेशन आदि में रियायत देने का प्रावधान किया है। इस नीति के तहत राज्य में नौकरी देने वाली कंपनियों को प्रति कर्मचारी 800 से लेकर 3000 रूपये तक का प्रोत्साहन राशि देगी। इस तरह निर्यात करने वाली कंपनियों को अलग से प्रोत्साहन राशि तथा कुछ अन्य सुविधाएं भी देगी। प्रोत्साहन नीति के तहत करोड़ रूपये की लागत के प्लांट मशिनरी पर 25 लाख रूपये, 500 करोड़ रूपये की लागत के प्लांट पर 45 करोड़ रूपये और 500 करोड़ रूपये से अधिक लागत के प्लांट पर 50 करोड़ रूपये का अनुदान देने का प्रावधान है। उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने ऐलान किया है कि बिहार सरकार भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गायक मनोज तिवारी को खादी ग्रामोद्योग का ब्राण्ड एम्बेसडर बनायेगी। जिससे खादी ग्रामोद्योग के उत्पाद की लोकप्रियता काफी बढ़ जायेगी।

★ **रोजगार की रीढ़ है शिक्षा** :- बिहार की मिट्टी और आवोहवा की खूबी है कि यहाँ के छात्र कुशाग्र और मेहनती होते हैं, तभी तो विश्व विख्यात पांच प्राचीन विश्वविद्यालयों में से चार बिहार में थे-नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, उदंतपुरी विश्वविद्यालय और जगद्ल विश्वविद्यालय। सिर्फ तक्षशिला विश्वविद्यालय बिहार के बाहर उत्तर प्रदेश में था। आजादी के बाद से लेकर 2000 तक देश में सर्वाधिक आईएएस और आईपीएस बिहार के बनते थे। मेडिकल और इंजीनिरिंग में सर्वाधिक दाखिला बिहार के ही छात्र-छात्राओं की होती थी, लेकिन विगत् 22 वर्षों से धीरे-धीरे कम होती जा रही है। प्राचीन काल की तरह आज भी आचार्य चाणक्य का अर्थशास्त्र और महर्षी पतंजलि का योगदर्शन पूरी दुनियां में अपना परचम लहरा रहा है। आज स्वामी रामदेव के योग और प्राणायाम के प्रदर्शन के समक्ष पूरी दुनियां की सभी चिकित्सा पद्धतियां नतमस्तक हैं, जो बिहार के महर्षी पतंजलि के योग दर्शन पर आधारित है। आज 125 से भी अधिक देशों में भारतीय आयुर्वेदिक दवाइयों का डंका बज रहा है, जो भारतीय आर्युवेदाचार्य धनवंतरी, सुश्रूत और जीवक के शोद्यकार्यों पर आधारित है। आर्युवेदाचार्य धनवंतरी तो आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं। महान खगोलविद और गणितज्ञ आर्यभट्ट के शून्य (जीरो) और दशमलव की खोज पर आज का पूरा कम्प्यूटर साइंस टिका हुआ है। गुजरात के मोहन दास करमचंद गांधी द्वारा चलाये गये आंदोलन को पहली बड़ी सफलता बिहार के चम्पारण में ही मिली थी। उन्होंने ही चंपारण के किसानों के खिलाफ अंग्रेजों द्वारा बनाये गये काले कानून 'तीककठिया कानून' को निरस्त कराया था। चम्पारण के उस सफल आंदोलन ने अंग्रेजों के चूले हिला दी थी। गांधी जी की निडरता और जुझारूपन से प्रभावित होकर नोवेल पुरस्कार विजेता रविन्द्र नाथ टैगोर ने गांधी जी को 'महात्मा' की संज्ञा से विभूषित किया था। आजाद भारत में आज तक बिहार के महान गणितज्ञ डॉ० वशिष्ट नारायण सिंह जितना प्रतिभावान कोई भी अन्य गणितज्ञ पैदा नहीं हुआ है। वर्तमान में बिहार के सबसे बड़े गणितज्ञ डॉ० के.सी. सिन्हा के अनुसार वशिष्ट नारायण सिंह दो नोवेल पुरस्कार प्राप्त कर लेते, यदि उनका समुचित इलाज कराया गया होता। लेकिन बहुत ही दुख की बात है कि बिहार के किसी भी मुख्यमंत्री ने उनकी प्रतिभा का कोई कद्र नहीं किया। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार वशिष्ट नारायण सिंह का समुचित इलाज कराये होते तो पूरी दुनियां में वह बिहार का नाम रौशन कर देते।

आजादी के पहले शिक्षा को लेकर बिहार की स्थिति बहुत अच्छी थी। उस समय बिहार में पटना कॉलेज और पटना साइंस कॉलेज, लंगट सिंह कॉलेज, पटना मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, बिहार इंजीनियरिंग कॉलेज (इसका नाम नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी हो गया है) आदि की गिनती देश के श्रेष्ठत्तम शिक्षण संस्थानों में होती थीं वर्ष 1960 तक पटना साइंस कॉलेज को एशिया का ऑक्सफोर्ड कहा जाता था। डॉ० वशिष्ट नारायण सिंह पटना साइंस कॉलेज के ही विद्यार्थी थे, लेकिन आज उपरोक्त सभी

महामाया प्रसाद सिन्हा

वशिष्ठ नारायण सिंह

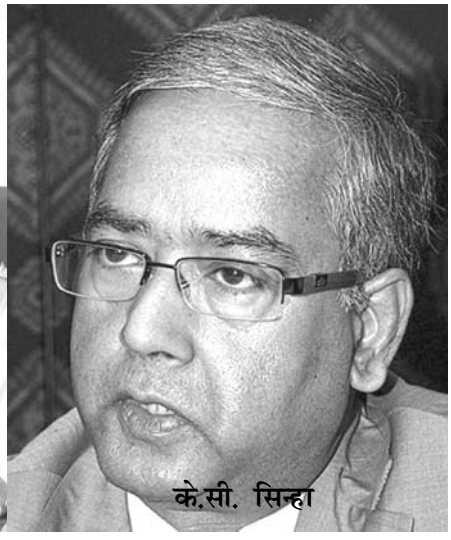

के.सी. सिन्हा

शिक्षण संस्थानों की गिनती देश के निकृष्टत्तम शिक्षण संस्थानों में होती है। पहले हर जिला में एक जिला स्कूल हुआ करता था, जो जिला विशेष की श्रेष्ठत्तम हाई स्कूल के स्तर का होता था। जिला स्कूल में दाखिला मिल जाना किसी भी विद्यार्थी के लिए बड़े सौभाग्य की बात होती थी, लेकिन आज की तारीख में सभी जिला स्कूल अपना गौरव पूरी तरह से खो चुके हैं। जब वर्ष 1947 में महामाया प्रसाद सिन्हा बिहार के मुख्यमंत्री बने तो 'जिगर का टुकड़ा' कहकर संबोधित करने लगे थे। छात्रों के प्रति अतिशय प्यार और अपनापन जताने के चक्कर में उन्हें उश्रृंखल बना दिया, अनुशासनहीन बना दिया, जबकि छात्रों को सबसे ज्यादा अनुशासित होने की जरूरत है। अनुशासनहीनता के चलते 1967 से परीक्षा में एकाएक कदाचार में बेहद वृद्धि हो गई। छात्रों को परीक्षा में जैसे चाहे, जितना चाहे चोरी कर ले तथा नकल करने की छूट मिल गयी। महामाया प्रसाद सिन्हा ने शिक्षा की नीव को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया, शिक्षा को पंगु बना दिया। शिक्षा में आयी खराबी को लेकर बिहारवासी महामाया प्रसाद सिन्हा को कभी भी माफ नहीं करेंगे। वर्ष 1990 में लालू प्रसाद जब बिहार के मुख्यमंत्री बने तो चरवाहा विद्यालय खोलने के नाम पर शिक्षा का भट्ठा बैठा दिया, तभी तो राबड़ी देवी जैसी महिला बिहार की मुख्यमंत्री बन गयी। वह आठ वर्षों तक मुख्यमंत्री की कुर्सी को सुशोभित करती रही। दरअसल लालू प्रसाद यादव ने 'राष्ट्रीय जनता दल' को पारिवारिक जनता दल में तब्दील कर लोकतंत्र की हत्या कर दी। लालू प्रसाद यादव सात साल तक और राबड़ी देवी आठ साल तक बिहार की मुख्यमंत्री बनी रही। लालू प्रसाद यादव के बड़े सुपुत्र तेजप्रताप यादव मंत्री और छोटे सुपुत्र तेजस्वी यादव उपमुख्यमंत्री बन गये। सुपुत्री मीसा भारती, बड़े साले साधु यादव और छोटे साले सुभाष यादव सांसद बना दिये गये। इस तरह लालू प्रसाद यादव के परिवार तथा संबंधी के लोग पार्टी तथा सरकार के उच्च पदों पर कब्जा जमा लिया। राबड़ी देवी जो बामुश्किल अपना हस्ताक्षर कर पाती हैं, आठ वर्षों तक बिहार का मुख्यमंत्री बनी रही। यह दुनियां का आश्चर्य नहीं तो और क्या है? जब 2005 में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने तो

बिहार के बेहद खराब शिक्षा के स्तर को और भी खराब कर दिया। दरअसल मुख्यमंत्री बनते ही नीतीश कुमार ने जल्दीबाजी में बगैर किसी जांच के चार लाख से भी अधिक शिक्षकों को बहाल कर लिया। बहाल इन शिक्षकों में से 95% शिक्षक अयोग्य निकले। नतीजा बिहार के शिक्षा का स्तर गिरकर रसातल में पहुंच गया। वैसे नीतीश कुमार ने दो-चार उम्दा शिक्षण संस्थान खोलवाने में भी अहम भूमिका निभाया है। जैसे-आईआईटी पटना, चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, नेतरहाट की तर्ज पर सिमुरतुल्ला आवासीय विद्यालय आदि।

भारत सरकार के सर्वे के अनुसार वर्ष 2021 के अंत तक देश में बेरोजगारों की संख्या 5 करोड़ 30 लाख हो गयी। अर्थात् आज की तारीख में बेरोजगारी देश की सबसे बड़ी समस्या है। इस समस्या को लेकर आज की तारीख में बिहार राज्य देश के शीर्ष पर है। ऐसा बिहार के स्तरहीन शिक्षण संस्थानों के चलते हुआ है। इन स्तरहीन शिक्षण संस्थानों से निकले विद्यार्थी इतने बकलोल हैं कि कोई भी कंपनी इन्हें नौकरी परव रखने के लिए तैयार नहीं है। मसलन भारतीय रेलवे को ही ले लीजिए। नि:संदेह न्योक्ता के रूप में रक्षा मंत्रालय के बाद रेलवे दूसरा सबसे बड़ा संस्थान है। रेलवे भर्ती बोर्ड के 35000 रिक्त पदों को भरना था, मगर इसकी समस्या भर्ती प्रक्रिया नहीं थी बल्कि भारी संख्या में अयोग्य आवेदनकर्ताओं के चलते हो गयी। दरअसल शिक्षा का स्तर गिरने से देश में समुचित कौशल वाले युवाओं की बेहद कमी हो गयी है, जो रोजगार प्राप्ति के मार्ग में बहुत बड़ा रोड़ा है। ऐसे में परीक्षाओं में व्याप्त कदाचार के खिलाफ बिहार सरकार को अभियान चलाना चाहिए। साथ ही पुरजोर प्रयास करना चाहिए कि, जैसे भी हो कार्यरत्त शिक्षकों को पर्याप्त योग्य बनाया जाये।

फिलहाल, बिहार की विधि-व्यवस्था चौपट है। इसलिए बिहार सरकार को उच्च प्राथमिकता देकर शिघ्रातिशीघ्र लचर विधि-व्यवस्था को सुधारने हेतु पुरजोर प्रयास करना चाहिए, जिससे कि बिहार में निजी उद्योग लगाने में रूचि रखने वाले बेझिझक उद्योग लगाने को प्रेरित हो।●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :www.psfsm.in

● **ललन कुमार प्रसाद**

यदि रिहायशी भवन न हो तो लोग कहां रहेंगे; यदि व्यवसायिक केन्द्र न हो तो लोग सामानों की खरीद-बिक्री कहां करेंगे; यदि स्कूल, कॉलेज, लाइब्रेरी और लेबोरेटरी न हो तो बच्चों से लेकर बुढ़ों तक लोग पठन-पाठन कहां करेंगे; यदि अस्पताल और दवा की दुकाने न हो तो मरीज अपना इलाज कहां करवायेंगे और दवा कहां से खरीदेंगे; बस अड्डे न हो तो बसे कहां ठहरेंगी, क्योंकि बसों को ठहरने का स्थान निर्धारित होते हैं। यदि बसे, बस अड्डों पर नहीं ठहरेंगी तो लोग बसों में कहां पर चढ़ेंगे और बसों से कहां पर उतरेंगे; यदि प्लेटफॉर्म सहित रेलवे स्टेशन न हो तो ट्रेनें कहां ठहरेगी और यात्री ट्रेनों पर कहां चढ़ेंगे तथा ट्रेनों से कहां उतरेंगे; यदि हवाई पट्टी सहित हवाई अड्डे न हो तो हवाई जहाज कहां से उड़ान भरेंगे और कहां उतरेंगे; यदि हवाई अड्डे न हो तो लोग कहां से हवाई जहाज पर चढ़ेंगे और कहां पर हवाई जहाज से उतरेंगे। उपरोक्त सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए भांति-भांति के भवन, सड़क, पुल-पुलिया, रेलवे ट्रैक, सुरंग आदि के रूप में इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने और विस्तार करने के लिए कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज की स्थापना करनी होगी और इन्हें विकसित करनी होगी, जो भवनों के फाउंडेशन से लेकर सुपर स्ट्रक्चर तक का नक्शा तैयार करना और उनका निर्माण करने से ही संभव होगा। यह तभी संभव है, जब सिविल इंजीनियर, आर्किटेक्ट इंजीनियर और मजदूर सहित 150 करोड़ से ज्यादा लोग उपरोक्त सभी भौतिक संरचनाओं के निर्माण हेतु कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे। इतना ही नहीं दुनियां भर में सैकड़ों-करोड़ के भवनों के मरम्मत तथा रख-रखाव (मेंटेनेंस) का काम सालोभर चलता रहता है। जिधर नजर दौड़ाइये, उधर हर जगह कंस्ट्रक्शन के कार्य दिखते ही रहते हैं। इससे बड़ा प्रमाण और क्या होना चाहिए कि नौकरी और रोजगार का पर्याय है कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज।

★ क्या है कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज? :- दुनियांभर में औद्योगिकरण व शहरीकरण स्थापित करने, विस्तार करने अैर नवीनीकरण करने को लेकर विभिन्न प्रकार की भौतिक संरचनाओं के निर्माण, मरम्मत और रख-रखाव के कार्य सालोभर दिन-रात चलते ही रहते हैं। इसी इंफ्रास्ट्रक्चर यानि बुनियादी ढ़ांचा खड़ा करने को औद्योगीकरण व शहरीकरण का विस्तार तथा नवीनीकरण कहा जाता है। मानव जीवन को सुख-सुविधा और सहुलियतें उपलब्ध कराये जाने के लिए यह आवश्यक आवश्यकता है। इसलिए जरूरी इंफ्रास्टक्चर का होना हर समाज और देश के विकास एवं समृद्धि की रीढ़ मानी जाती है। सड़क, पुल-पुलिया, रेलवे ट्रैक, हवाई पट्टी और जरूरत के मुताबिक विभिन्न आकार एवं आकृति के भवनों को उचित जगह पर उचित तरह का बनाया जाना कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज के तहत आता है। इस काम को सिविल पर्सनल, आर्किटेक्ट पर्सनल, हेल्थ व एनवायरमेंटल पर्सनल और सेफ्टी पर्सनल के संयुक्त दिशा निर्देश और देखरेख में अंजाम तक पहुचाया जाता है। विभिन्न प्रकार की भौतिक रचनाओं को जिस किसी भी उद्देश्य के लिए खड़ा किया जाता है, उसके लिए निम्नलिखित बातों का ख्याल रखा जाना चाहिए:-

☞ स्थान विशेष की भगौलिक परिस्थिति और कार्य के स्वभाव के अनुसार उपयुक्त स्थान का चुनाव करना चाहिए।

☞ जरूरत के मुताबिक विभिन्न प्रकार की भौतिक संरचनाओं को खड़ा करने के लिए पर्याप्त जमीन उपलब्ध कराया जाना चाहिए। लेकिन बेहतर तो यही होगा कि पर्याप्त जमीन से भी कुछ अधिक जमीन उपलब्ध कराया जाना चाहिए, क्योंकि जरूरत पड़ने पर भविष्य में औद्योगिकरण का विस्तार करने में सहुलियत हो। मसलन सुगर फैक्ट्री। सुगर फैक्ट्री का मुख्य उत्पाद चीनी है लेकिन चीनी का उत्पादन करने में बाईप्रोडक्ट के रूप में खोई (सिठ्ठी) प्राप्त होता है, जो कागज निर्माण हेतु बहुत ही उपयोगी पदार्थ है। बाईप्रोडक्ट के रूप में छोहा (मोलैसिस) प्राप्त होता है, जो अल्कोहल प्राप्त करने के लिए सबसे अच्छा कच्चा माल है। बाईप्रोडक्ट के रूप में प्रेसमड प्राप्त होता है, जो अम्लीय मिट्टी के लिए उत्तम खाद है।

☞ उद्योग विशेष के लिए भौतिक संरचना के निर्माण हेतु जिस समान का उत्पादन करना चाहते हैं, उसके लिए कच्चा माल प्रचूरता में आसपास ही होना चाहिए, जिससे की कच्चे माल की ढुलाई में खर्चा और समय दोनो का ही बचत हो।

☞ कंपनी के पास उपलब्ध पूंजी और संसाधनों को ध्यान में रखकर ही भौतिक संरचना खड़ा करने के छोटे-बड़े आकार का निर्धारण करना चाहिए, जिससे कि पूंजि को लेकर भौतिक संरचना को स्थापित करने का कार्य बाधित न हो, रूके नहीं।

☞ जरूरत के मुताबिक पर्याप्त संख्या में विभिन्न श्रेणियों के इंजीनियर, तकनीशियन और कामगारों को बहाल करना चाहिए, जिससे कि भौतिक संरचना का निर्माण बगैर किसी बाधा के सुचारू रूप से चलता रहे।

☞ भौतिक संरचना के निर्माण हेतु ऐसे वैज्ञानिक तकनीक को अपनाना चाहिए, जिससे कि सुरक्षित रूप से निर्माण के कार्य को आसानी से पूरा किया

जा सके।

☞ भौतिक संरचना के निर्माण हेतु नये कामगारों को काम पर लगाने के पहले कार्य विशेष के अनुसार उपयुक्त प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे कि कार्य को करने के दौरान दुर्घटना घटने की संभावना न रहे।

☞ इस बात की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए कि भौतिक संरचना को खड़ा करने के दरम्यान कोई मजदूर घायल न हो, अपंग न हो और मरे नहीं।

☞ इस बात की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए कि हर दिन काम शुरू करने के पहले सभी कामगारों के लिए उनके समक्ष मौजूद खतरे से सुरक्षा हेतु खतरा के स्वभाव के अनुसार पीपीई (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण) हो, जिससे कि उसे पहनकर कामगार काम प्रारंभ करे।

☞ इस बात की व्यवस्था की जानी चाहिए कि उत्पादन के लिए तैयार भौतिक संरचना ऐसे उपकरणों से सुसज्जित हो, जिससे कि पर्यावरण कम से कम प्रदूषित हो और यदि न हो तो अतिउत्तम। अर्थात् पर्यावरण के संरक्षण का भरपूर ख्याल रखा जाना चाहिए। मसलन चिमनी के अंदर शूट प्रेसिपिटेटर उपकरण लगाये जाने चाहिए, जिससे कि कालिख के कण कम से कम पर्यावरण में उत्सर्जित हो। उत्पाद के उत्पादन के दौरान उत्पन्न कॉर्बन डाईऑक्साइड गैस और सल्फर डाईऑक्साइड गैस को स्क्रबर से गुजारा जाना चाहिए। जिससे कि 90% गैसें चूना जल से प्रतिक्रिया कर चूना जल में ही रह जाये और शेष 10% गैस पर्यावरण में उत्सर्जित हो।

☞ उद्योगों के लिए भौतिक संरचना के निर्माण हेतु इस बात का ख्याल रखा जाना चाहिए कि स्थान विशेष से उत्पादों के ट्रांसपोटेशन की दृष्टि से अधिकाधिक सुविधाजनक हो। अर्थात् औद्योगिक शहर सड़क, रेल, हवा (एयरपोर्ट) और पानी (बंदरगाह) से जुड़ा हो, जिससे कि उत्पादों का ट्रांसपोटेशन आसानी से शीघ्रतापूर्वक किया जा सके।

☞ भौतिक संरचना के निर्माण का कार्य शुरू करने से पहले कार्य स्थली (वर्क प्लेस) का बैरिकेशन करा देना चाहिए, जिससे कि कोई भी बाहरी व्यक्ति या पशु दुर्घटना का शिकार न हो तथा कामगार बाहरी लोगों के मौजूदगी के चलते, काम करने के दौरान बाधा महसूस न करे।

☞ भौतिक संरचना आपातकालीन द्वारा (इमरजेंसी एग्जिट) से युक्त होना चाहिए, जिससे कि आपातकालिन अवस्था में कामगार अपनी जान बचाने के लिए बाहर निकल जाये।

☞ भौतिक संरचना उचित स्थान पर उचित तरह के तथा उचित क्षमता के अग्निशामक यंत्र से सुसज्जित हो।

☞ भौतिक संरचना उचित जगह पर उचित प्रकार के फायर डिटेक्टर जैसे स्मोक डिटेक्टर, फ्लैम डिटेक्टर और हीट डिटेक्टर से सुसज्जित हो, जिससे कि प्रारंभिक अवस्था में ही बगैर किसी विलंब के आग लगने का पता चल जाये।

☞ प्रत्येक भौतिक संरचना, समुचित कम्युनिकेशन सिस्टम से सुसज्जित होना चाहिए।

☞ भवन निर्माण के दौरान ऊँचाई पर काम करने के लिए जो अस्थायी मचान (स्काफोल्ड) बनाया जाता है। उसे फॉल प्रोटेक्शन सिस्टम से सुसज्जित किया जाना चाहिए, जिससे कि ऊँचाई पर काम करने वाला कोई भी कामगार नीचे जमीन पर न गिरे। ऐसा इसलिए कि कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज में सर्वाधिक मौतें ऊँचाई से जमीन पर गिरने से होती है। यही कारण है कि मचान की सतह से उसके किनारे पर तीन तरफ से एक फुट 9 इंच की ऊँचाई पर मिडरेल और तीन फीट की ऊँचाई पर गर्डरेल लगाया जाना चाहिए। ऊँचाई पर काम करने वालों को सामान्य पीपीई जैसे सेफ्टी शूट, सेफ्टी हेलमेट आदि के अलावा विशेष प्रकार के पीपीई, जैसे-सेफ्टी बेल्ट और सेफ्टी हारनेस अवश्य पहनना चाहिए। जरूरत पड़ने पर सेफ्टी नेट का भी इस्तेमाल करना चाहिए।

☞ ऊँचाई पर काम करने वाले मजदूर को भर्टिगो यानि चक्कर आने या माथा घूमने की फोबिया से ग्रसित नहीं होना चाहिए।

★ कंस्ट्रक्शन सेफ्टी मैनेजमेंट में दाखिला पाने हेतु योग्यता :- वैसे तो इंटर पास स्टूडेण्ट्स भी कंस्ट्रक्शन सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट में दाखिला ले सकते हैं, लेकिन बेहतर तो यही होता है कि स्टूडेण्ट्स इंजीनियरिंग के किसी भी डिसीप्लीन में या आर्किटेक्ट इंजीनियरिंग में बी. टेक किया हो। बी.टेक स्टूडेण्ट्स की सैलेरी 55 से 60 हजार रूपये तक प्रतिमाह से प्रारंभ होती है, जो बहुत ही तेजी से बढ़ती ही जाती है। बी. एससी. स्टूडेण्ट्स के लिए भी कंस्ट्रक्शन सेफ्टी मैनेजमेंट में दाखिला लेना बहुत लाभदायक होता है।

★ कंस्ट्रक्शन सेफ्टी मैनेजमेंट के शिक्षण संस्थान :-

☞ रियल स्टेट एण्ड अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट, पूणे, महाराष्ट्र।

☞ इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस, डेवलपमेंट एण्ड मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट, पूणे, महाराष्ट्र।

उपरोक्त दोनो शिक्षण संस्थानों में दो वर्षीय पी.जी. डिप्लोमा की पढ़ायी करायी जाती है।

☞ पाटलिपुत्र स्कूल ऑफ फायर एण्ड सेफ्टी मैनेजमेंट, एग्जिवीशन रोड, पटना, बिहार।

इस सेफ्टी इंस्टीच्यूट मैनेजमेंट में एक वर्षीय डिप्लोमा व पीजी डिप्लोमा की पढ़ाई करायी जाती है। इस इंस्टीच्यूट का लेबोरेटरी देश के सभी सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूटों में सबसे बड़ा है, इसलिए यहां पढ़ने वाले स्टूडेण्ट्स देश के अन्य सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्ट्रीच्यूटों के मुकाबले ज्यादा लाभान्वित होते हैं। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

● ललन सिंह

रूस और यूक्रेन के बीच तनाव बहुत पहले शुरू हुआ था जब यूक्रेन के तत्कालीन राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच का राजधानी कीव में विरोध शुरू हुआ। उनको रूस का समर्थन था, लेकिन ब्रिटेन और अमेरिका के समर्थित प्रदर्शनकारियों के लगातार विरोध के कारण फरवरी 2014 में देश छोड़कर भागना पड़ा था, वर्तमान में रूस की युद्धनीति यूक्रेन पर हमले के कदम उठाने के कुछ कारणों से अवगत होना भी जरूरी है। इसमें सबसे बड़ी वजह अमेरिका द्वारा यूक्रेन के नाटो संगठन में शामिल करने की कवायद है। नाटो में अमेरिका का वर्चस्व है। इस संगठन में 30 देश शामिल है एवं अधिकतर देश यूरोप के ही है। इस संगठन में सबसे अधिक फौजी जवान अमेरिकन हैं। नाटो को हिन्दी में उत्तरी अंटलांटिक संधि संगठन और अंग्रजी में नॉर्थ अंटलांटिक टीरीटी ऑर्गनाइजेशन कहते हैं। यह एक सैन्य गठबंधन है। इसकी स्थापना 4 अप्रैल 1949 को हुई थी। इस संगठन का मुख्यालय वुसेल्स (बेलजियम) में है। इसकी व्यवस्था का आधार सामुहिक सुरक्षा पर आधारित है, जिसके तहत बाहरी आक्रमण होने पर इस संगठन के सभी देशों को सहमति एवं सहयोग और आपसी तालमेल द्वारा मुकाबला करने का है। नाटो का सैन्य रणनीति का उद्देश्य ही अपने संगठन के देशों के ताकत से मजबूत सुरक्षात्मक माहौल बनाने का है, जिससे पूरे विश्व में ताकत वाला संगठन नाटो को मान्यता है।

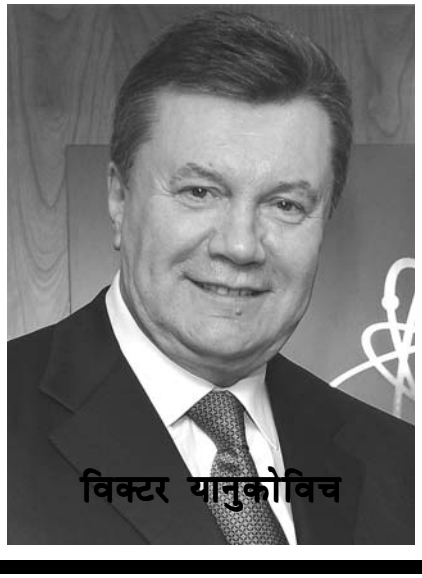
विक्टर यानुकोविच

यूक्रेन कभी रूसी सम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था और 1991 में सोवियत संघ के टूटने के बाद यूक्रेन को स्वतंत्रता मिली और तभी से यूक्रेन रूस के छत्रछाया से निकलने की लगातार कोशिश करने लगा और तभी से यूक्रेन ने पश्चिमी देशों से नजदिकियां बढ़ाई। यूक्रेन की उत्तर एवं पूर्वी हिस्से की लंबी सीमा रूस से मिलती है और 2010 में विक्टर यानुकोविच यूक्रेन के राष्ट्रपति बने तो रूस से करीबी रिश्ते बनने लगे। उन्होंने ही यूरोपीय संघ में शामिल होने के समझौते को खारिज भी किया था और इसी कारण से भारी विरोध के वजह से 2014 में इस्तिफा देना पड़ा। यूक्रेन द्वारा लगातार रूस पर आरोप लगता रहा कि वे अलगाववादियों और विद्रोहियों को हथियार के साथ ही आर्थिक रूप से मदद दी जाती रही है और बाद में रूस द्वारा यूक्रेन के ऊपर आक्रमकता की कार्यवाही हुई और क्रीमिया प्रायादीप पर कब्जा किये गये पूर्वी हिस्से में यूक्रेन के डोनावास जो औद्योगिक इलाका है, 2014 के लड़ाई में 14000 से अधिक लोगों की जानें भी गई थी। हालांकि जर्मनी और फ्रांस द्वारा शांति और विवादों के समाधान के लिए किये गये मध्यस्था भी यूक्रेन एवं रूस के बीच कई बार हुई जंग तो उस समय रूक गया, पर पूरी तौर पर कोई राजनीतिक समाधान नहीं निकल

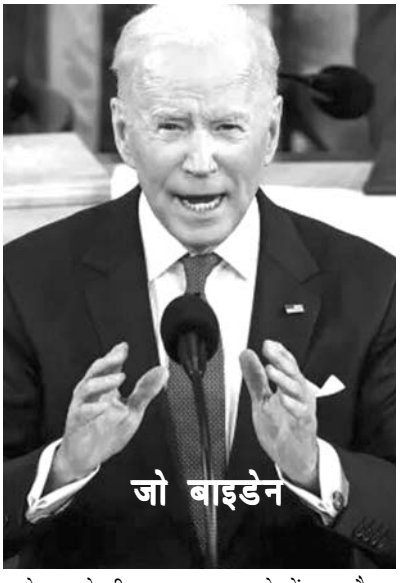

पाया और यह चिंगारी दोनो देशों के बीच में धीरे-धीरे लड़ाई के कारण भी बनने में रही, इस बात में कोई संदेह नहीं।

पिछले साल से ही दोनों देशों में संघर्षविराम कें उल्लंघन के हालात में तेजी आने लगे थे, फिर यूक्रेनी सीमा के नजदीक रूसी सैनिकों का युद्धाभ्यास शुरू हुआ। बीच-बीच में रूस ने युद्धाभ्यास को रोका भी, जिससे तनाव में कमी भी आयी, पर अचानक रूस द्वारा रूस-यूक्रेन सीमा के नजदीक 1 लाख 75 हजार जवानों की तैनाती कर दी। इस हालात के मद्देनजर अमेरिका एवं नाटो देशों के अनावश्यक बयानों से और माहौल को बिगाड़ने में समर्थन मिला। आज जो यूक्रेन की तबाही का जो हालत है, उसमें रूस के साथ अमेरिका एवं उसके सहयोगी देश भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। सच है कि युद्ध विनाश के सबसे बड़ा कारण है। आज भी अमेरिका एवं ब्रिटेन, रूस के हमले पर भारत को अपने पक्ष में लाने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिका एवं नाटो के सदस्य देश और इन देशों की मीडिया पुतीन महोदय को ही खलनायक बताने में जुटा है। यह बात भी सच है कि यूक्रेन एक संप्रभु देश है, लेकिन उसे रूस की सुरक्षा चिंताओं का भी ख्याल करना चाहिए था, क्योंकि रूस बार-बार यूक्रेन को नाटो का सदस्य नहीं बनने के लिए दबाब और चेतावनी दे रहा था। रूस का कहना था कि अमेरिका के नेतृत्व वाली नाटो सैन्य संगठन का हिस्सा नहीं बनना चाहिए पर अमेरिका अपने सुपर पावर वाले सोच के कारण यूक्रेन को नाटो का सदस्य बनाने पर आमदा था। सच यह भी है की नाटो का संगठन सोवियत संघ के साम्यवाद का विस्तार को रोक लगाने के लिए किया गया था। 1991 के सोवियत संघ के विघटन के बाद उसके नेतृत्व वाले बरसा पैक्ट का वजूद भी खत्म हो गया था और रूस के लगातार चेतावनी के बाद भी नाटो अपने विस्तार के दायरे को बढ़ाने में कार्यरत्त रहा। बरसा पैक्ट का हिस्सा रहे देशों को भी नाटों के संगठन में हिस्सा बनाये और नाटो का हिस्सा बनाने के चाहटत पर रूस अमेरिका और नाटो के देशों को दूरी बनाने के लिए चेताया भी, पर इसका कोई असर नहीं हुआ। कई बार यूक्रेन के साथ अमेरिका और नाटो देशों के साथ सैन्य अभ्यास को भी जारी रखा और आज यूक्रेन और रूस की इस भयंकर युद्ध की वजह से यूरोपीय देशों और अमेरिका का अनावश्यक समर्थन भी रहा, इस बात पर संदेह नहीं और इन कारणों का परिणाम है की विश्व आज परमाणु खतरे और तीसरे विश्वयुद्ध के मुहाने पर खड़ा नजर आ रहा है, जो की पूरे दुनियां के लिए चिंता का विषय है। इन हालातों पर रूस के उपर भी यूक्रेन द्वारा लगातार आरोप भी लगते रहे हैं की विद्रोहियों के गढ़ में रूसी सैनिकों की मौजूदगी है। रूस इन बयानों को खारिज भी करता रहा है पर रूसी राष्ट्रपति कई बार यूक्रेनियों और रूस के लोगों को एक ही लोग मानने वाले बयान देते रहे हैं और यह भी कहा है कि सोवियत संघ के समय में यूक्रेन को गलत तरीके से रूसी जमीन मिल गया था। इस हालात में दोनो देशों में लगातार एक-दूसरे पर अरोप-प्रत्यारोपों का बयान जारी रहता रहा है और

इन वजहों से सीमा विवाद और तानातानी अपने चरम ऊँचाइयों पर पहुंचा और आज दोनो देश अपने एक्शन से महायुद्ध के कगार पर है और महाविनाश जारी है।

एक और चिंता रूस को थी की नाटो अपना सैन्य मजबूती के बाबत यूक्रेन में नाटो का ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना के लिए तैयारी कर रहा है। यदि नाटो में यूक्रेन शामिल नहीं भी हुआ तो भी यह नाटो का सोच रूसी क्षेत्र के नजदीक खतरा पैदा कर सकता है और पुतीन महोदय लिखित में गारंटी चाहते थे की यूक्रेन में किसी तरह का नाटो का सैन्य मजबूती का कार्यक्रम ना तो इसके लिए राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन और अमेरिका के राष्ट्रपति के बीच वर्चुअल बैठक भी हुई थी, पर बाइडेन साहब ने इन रूस के चिंताओं पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया। संवाद और वार्ता की कमी के कारण यूक्रेन एवं रूस के आपसी मतभेद और एक-दूसरे पर अविश्वास बढ़ता गया। तनाव एवं लड़ाई के हालात बनने लगे और इस वर्ष के फरवरी 24 तारीख से खुलकर युद्ध का शुरूआत हो गया। इसमें रूस के द्वारा पहल हुई। दो प्रांतों को स्वतंत्र देश एवं उसके साथ एक्शन के प्रस्ताव ने माहौल को पूरी तरह से महायुद्ध में बदल कर रख दिया और आज इस महाविनाश युद्ध के त्रासदी से लगभग 15 लाख लोगों का यूक्रेन से पड़ोसी देशों में पलायन हो चुका है। हर दिन लोगों की मौते हो रही है। बर्बादी और बिगड़ते हालात पर

विश्व और यू.एप.ओ. भी लाचार महसूस कर रहा है, दुनियां दो भागों में बंट रहा है, पर सच यह भी है कि हर को अपना स्वार्थ और हित का ख्याल अधिक है। मानव जाति इस दुखद स्थिति पर कुछ नहीं कर पा रहा, पर शांति हो, इसकी कोशिश जरूर हो रही है, पर हालात ज्यों का त्यों ही है।

यह महायुद्ध अब घातक नतीजे वाला और विश्व को गंभीर संकट में डाल रहा है। हथियारों एवं सैनिक साजो-समानों की होड़ बढ़ाने का भी काम कर रहा है और मानवीय मूल्यों पर भारी पड़ता नजर आ रहा है। भारत भी इस युद्ध से चिंतित है और यह स्वभाविक भी है। दुनियां के हर देश अपने हित और रक्षा बजट को बढ़ाने के दबाब में हैं। इसका ताजा प्रमाण चीन के रक्षा बजट की बढ़ोतरी की घोषणा, यह भी चिंता की बात है। क्योंकि भारत का पड़ोसी चीन एवं पाक के नापाक सोच और विस्तारवादी वाली आदतें जगजाहिर है और चीन के इरादों पर भारत की नजर बहुत सतर्क एवं चौकस भी है और यूक्रेन के संकट से भारत भी बहुत कुछ समझ रहा है। हालांकि चीन से अपने सीमा विवाद के बाबत 11 मार्च को कोर कमांडरों के बीच 15वीं दौर की वार्ता चुशूल मोल्डों में होगी, जिसकी आपसी सहमति भी बन चुकी है और भारत इन वार्ता के दौरान हाट स्पिंग, गोगरा इलाके के साथ डेपसाम से सैनिकों को पीछे हटाने पर भारत का जोर रहेगा। एक तरफा बदलाव की कोशिश स्वीकार नहीं करेगा। इस बात को चीन को साफ शब्दों में बता दिया गया है। एक बात और साफ है कि यूक्रेन संकट से मिला सबक, युद्ध के लिए तैयार होना होगा। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत के दिशा में तत्काल कई कदम और उठाने होंगे। भारतीय सेना प्रमुख का बयान इस वर्तमान हालात में मायने रखता है। आपातकाल परिस्थिति में देश को अपना सुरक्षा और अपनी कुटनीति पर ही मुस्तैद होना होगा। यह यूक्रेन के हलात से सबक के तौरपर सिख मिला है। इस अनुभव के द्वारा भारत को सामर्थ्यशाली बनना आज की जरूरत है। रक्षा बजट बढ़ाने के दबाब से उन देशों पर अवश्य दबाब अधिक होगा, जिनक`

पड़ोसी ताकतवर और विस्तारवाद वाले अदतों से मजबूर हैं। गरीब और विकासशील देशों को ना चाहते हुए भी शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास के आयाम से जुड़े कार्यक्रमों के बजाये रक्षा बजट के बढ़ोतरी एवं रक्षा उपकरणों पर खर्च करना निहायत आवश्यक होगा। कोविड संकट से विश्व पूरी तौर पर अभी उभरा भी नहीं है, यह महायुद्ध का संकट पूरे विश्व के आर्थिक हालातों पर भी चोट पहुंचायेगा। प्रतिबंधो के कारण गैस, ऑयल के साथ हर वस्तुओं पर इसका फर्क और बढ़ोत्तरी होना स्वभाविक है और इन सब समस्याओं पर कैसे विश्वव्यापी नियंत्रण हो, इसके लिए दुनियां के ताकतवर देशों और यूएनओ को आगे बढ़ने की जरूरत है, जिसमें हमारा देश भारत के भी हर मंच और सभी स्तरो पर कार्यरत्त होना होगा, जो हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा हो रहा है। इसमें सबसे खास बात यह है कि सबसे पहले वर्तमान यूक्रेन एवं रूस के इस महायुद्ध को खत्म करने और विवादों को राजनीतिक एवं कुटनीतिक तथा सामरिक रूप से समाधान का मार्ग जल्द से जल्द तैयार हो। यूक्रेन और रूस के वार्ता का दौर जारी है, पर दोनो देशों के अपने-अपने शर्तों पर अडिग रहने के कारण शांति एवं समस्याओं का समाधान की हालात नहीं बन रही है। विश्व असंमजश वाली स्थिति में है, क्योंकि पूरी दुनियां इस युद्ध के कारण डरा और सहमा हुआ है।

इस समय एक बात साफ है कि यूक्रेन संकट जिस तरह से गहराता जा रहा है उसमें विश्व के आर्थिक माहौल एवं शांति-सुरक्षा का खतरा आवश्यक रूप से विगाड़ने की स्थिति में है, यूक्रेन के हर बड़े शहरों पर लगातार मिसाइल, बम एवं रूसी हमले के कारण मलवे में परिवर्तित हो रहा है और अब रूस राजधानी किव के कब्जे के लिए अपने घेराबंदी के एक्शन में लगा है। यह भी सच है कि जितने भी नाटो देश और अमेरिकी मदद करे पर यूक्रेन की बर्बादी तय है, क्योंकि अमेरिका या नाटो देशों का साथ आर्थिक या हथियारों एवं सैनिक साजो-सामान का हो सकता है, पर उनके फौज यूक्रेन के लिए रूस के साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं देने का स्पष्ट बयान दे चुके हैं।

पूरे यूक्रेन में लोग रूसी सैन्य दबाब के कारण लगातार पलायन के तरफ हैं। किव और बड़े शहरों से महिलाओं एवं बच्चों के साथ बुर्जुग को निकाला जा रहा है। दोनो देशों के दो, तीन दिनों के युद्ध विराम कुछ शहरों में देने से लोगों को अपने जान बचाने के लिए मौका जरूर मिल रहा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की का बार-बार बंकर से बाहर आकर देशवासियों एवं फौज के मनोबल को बढ़ाना सही है पर सच को झुठलाया नहीं जा सकता। उनके जोश से यूक्रेन के आम आदमी और यूक्रेन के बचाव होना असंभव जैसा ही है। अब उनके कई बयान लाचारी को दर्शाता है। अब वे डोनवास एवं क्रिमीया पर भी रूस से बातचीत को तैयार हैं, पर रूस को भी अपने शर्तों एवं दूसरे देश के सम्मानजनक हालात पर गौर करना होगा। यूक्रेन के कई शहरों में सिजफायर से पूरी राहत नहीं मिलेगी। अब पूरे तौरपर सिजफायर के बाद ही दोनो देश की हालात सम्मान हो सकती है।

अब गुरिल्ला वार की शुरूआत यूक्रेन एवं रूस के बीच शुरू हो चुकी है, जिससे यह लड़ाई लंबी और खतरनाक हालात पैदा कर सकती है और यही कारण है की अब तक रूस जैसा ताकतवर सामरिक दृष्टि से देश यूक्रेन को पूरी तरह से कब्जा नहीं कर पाया है और इस युद्ध में रूस का भी काफी नुकसान होता नजर आ रहा है। 1500 करोड़ से अधिक प्रतिदिन का व्यय रूस को आर्थिक रूप से कमजोर करेगा, इस पर रूस भी चिंतित है। साथ ही लगातार अमेरिका का और देशों का प्रतिबंध हर स्तर पर आफत में डाल रहा है। रूस के आंतरिक माहौल में भी इसका असर नजर आने लगा है। रूसी लोग इस लड़ाई के त्रासदी के खिलाफ आवाज भी उठाने लगे हैं। इस बात का पुतिन साहब को भी समझ आ रहा है, पर दोनो देशों को इस पर गंभीरता से सोच पर निर्णय की आवश्यकता है, जिससे जल्द समाधान का मार्ग प्रशस्त हो और दोनो के टकराव का अंत हो। साथ ही विश्व के अन्य देशों को भी इस

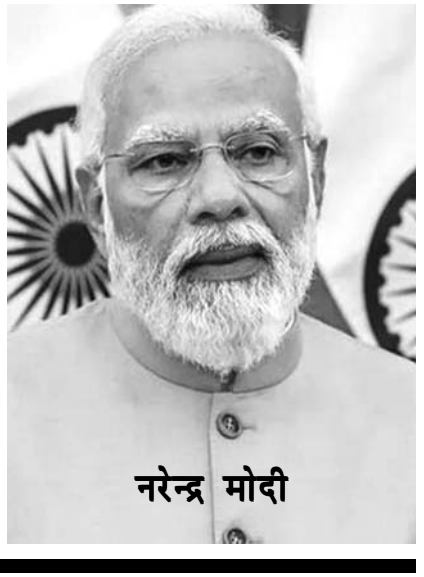

विवाद को समाप्त हेतु ईमानदारी से विचार करना ही होगा, क्योंकि इस लड़ाई का दूरगामी परिणाम भविष्य में जरूर होगा। आज यूएनओ के हर मंच को इस विवाद पर सख्त एवं सतर्क होकर मानवीय आधार पर भी निर्णय लेने होंगे, नहीं तो आने वाले समय में इसका परिणाम दुर्भाग्यपूर्ण एवं दुखद होगा, जिसका पूरा विश्व को नुकसान झेलने होंगे। अब तो नाटो में भी आपसी विवाद एवं यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की का नाटो के बाबत गुस्सा सामने आने लगा है। इन्हे भी सच की जानकारी हो रही है की यूक्रेन एक मोहरा के तौर पर बनाने की चाल ही थी। हालांकि विश्व में अब रूस के हमले के विरोध में आवाजे उठने लगी है पर केवल आत्म-विश्वास से ही यूक्रेन, रूस का सामना जरूर कर रहा है पर कब तक कर पायेगा, यह कहना मुश्किल है।

भारत भी इस युद्ध के समाधान के लिए लगातार हर मंच से बातचीत द्वारा करने की प्रयासों पर कार्यरत्त है। हमारे प्रधानमंत्री जी इस मुद्दे पर यूक्रेन एवं रूस के राष्ट्रपति से कई बार वार्ता टेलीफोन के माध्यम से किया है और इसी क्रम में यूक्रेन में फंसे लोगों को, जिसमें भारतीय विद्यार्थी जो मेडिकल के लिए अध्ययनरत्त थे, उनके निकासी के लिए गंगा ऑपरेशन के तहत अभियान पर भी दोनो देश से गहन चर्चा की। जिसके परिणामस्वरूप हजारों की संख्या में भारत में वापसी हुई, जिससे भारत में लोगों को राहत के साथ देश के सरकार के प्रति गर्व भी महसूस होना भी स्वभाविक है। इस तहद भारत के सम्मानजनक दावे विश्व में उजागर हो रहा है। सुरक्षित निकासी भारत सरकार की प्राथमिकता का निर्देश एवं भारतीयों को वापसी में भारतीय एयर फोर्स का साथ उदाहरणार्थ है। इस ऑपरेशन गंगा के तहत अभियान पर आम लोगों के अंदर देश के प्रति और भी जर्बदस्त विश्वास की भावना और दुनियां में देश के ताकत और महत्व का एहसास भी हुआ। आज यूक्रेन के राष्ट्रपति द्वारा बार-बार हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से शांति समाधान का आग्रह करना देश के महत्व को दर्शाता है। रूस भी हाल के दिनों में भारत के साथ रूख और नीति पर अपना मित्रवत बयान दिये हैं। मतलब साफ है आज दुनियां भारत के निष्पक्ष सोच पर मुहर लगाता है।

एक बात सर्वविदित है स्वार्थ पर टिका हुआ संबंध कभी भी स्थायी नहीं होता, यही अब इस भयंकर युद्ध में समझ आ रहा है। महाशक्ति अमेरिका और नाटो जैसे देश अब यूक्रेन को उसके हालात पर जमीनी स्तर पर कोई साथ नहीं दे रहा। केवल अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक, सामरिक मदद की बयानबाजी और समर्थन के नाम पर आग में घी डालते भी नजर आ रहे हैं। बमबारी से यूक्रेन पूरी तौर पर तबाही के हालात में है, पलायन जर्बदस्त और किव पर कब्जा की नजदीक। एक बात और समझ में जरूर आना चाहिए कि यूएनओ भी लगभग निष्क्रीय हालत में है। आने वाले समय में दुनियां के इस पंचायत वाली माननीय संस्था पर विचार जरूर हो, क्योंकि बिगड़े हुए माहौल पर इस संयुक्त राष्ट्र संघ का क्या दिशा निर्देश हो, इसकी ताकत पर भी प्रश्न जरूर उठेंगे। क्योंकि जो विश्व को उम्मीद होती है, वह मौके पर पूरे करने में सक्षम और निर्देशों में सही निर्णायक भूमिका क्यों नहीं? यूक्रेन और रूस का यह भयंकर युद्ध नकाम कुटनीति का भी नतीजा है। रूस द्वारा शुरू में ही डोनेत्सक एवं लुहांस्क को स्वतंत्र देश और मान्यता, विश्व के लिए सही संदेश नहीं था। यह अंतर्राष्ट्रीय नियम के खिलाफ प्रक्रिया थी। इस पर भी किसी को शक की गुंजाइश नहीं थी पर यूरोप के कई देश अमेरिका एवं नाटो देशों का नजर सोवियत संघ के विखराव के बाद अलग हुए देशों पर थी और अपने साथ लाने का सोच और महाशक्ति बनने के होड़ में यह महाविनाशक युद्ध कब तक जारी रहेगा, यह भविष्य ही बतायेगा। भारत की भी समस्या बढ़ाने वाला यह यूक्रेन संकट जरूर है। इसका असर चाहे वह कुटनीतिक, राजनीतिक और आर्थिक सामरिक स्तर पर हो, इसमें भी कोई शक नहीं, पर भारत का विदेश मंत्रालय और सरकार अपने देश के हित एवं भविष्य के हालातों के मद्देनजर अपने तटस्थ एवं साथ ही साथ पुराने अनुभवों को ध्यान में रखकर शांति समाधान के लिए प्रयासरत्त है। आज भारत के तरफ विश्व की नजर भी है, पर देश अपने आप को नीति और ईमानदार तटस्थ सिद्धांतों पर विश्व पटल के समस्याओं का समाधान के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही मानवीय आधार पर हर तरह से जरूरतों के लिहाज से सहायता के भी कार्यों में जुटा हुआ है। हाल के दिनों में फ्रांस, जर्मनी, इजरायल और भारत के तरफ से युद्ध विराम के लिए प्रयास हो रहे हैं। इस युद्ध ने भयंकर तबाही का हद पार कर चुका है। बड़े-बड़े शहर, रिहायशी इलाके, परमाणु सयंत्र और अस्पताल एवं स्कूलों की भी पूरी तरह से बर्बादी नजर आ रही है। अब जो तस्वीर यूक्रेन से आ रही है, उससे पूरी मानव जाती दहल चुका

है। सवाल जीत-हार का नहीं, क्या होगा इस महायुद्ध के घमासान का, अब इस पर कैसे रोक लगे, इस पर केवल सोच की जरूरत है और अहंकार, अतिक्रमण और बहसीपन, यही कारण है इस महायुद्ध के जारी रहने का। जल्द से जल्द युद्ध विराम हो, इस पर गंभीरता से निर्णय लेने के लिए महाशक्तियों एवं संगठनों को निर्णय लेने होंगे।

रूस की न्यूक्लीयर धमकी से पूरे विश्व को खतरा है, यह अमेरिका का कहना है। यूक्रेन के लिए पुतिन बहुत आक्रमक हो गये हैं। वह अपने गुस्से में कुछ भी करने को तैयार हैं और परमाणु हमले की संभावना भी कर सकते हैं। यही कारण है कि यूक्रेन सीमा पर अमेरिकन लड़ाकू विमानों का जमावड़ा, नाटो भी अपने संगठन के मजबूती के एक्शन में है, जो विश्व के जंगी माहौल को और खराब कर सकती है। पर अब जलेस्की लाचार हालात में रूस से हर स्तर पर चर्चा के लिए तैयार हैं। रूस अपने हक में, जो उसकी सोच है कि अपने समर्थन वाला सत्ता यूक्रेन में स्थापित करने का ख्वाब वह पूरा हो सकता है, जिस तरह से रूसी सैन्य शक्ति का एक्शन जारी है। रूसी हमले में पूरा यूक्रेन मलवे की ढ़ेर हो चुका है। लड़ाई शहरों में जब होती है तो लड़ाई की टैक्टीस में काफी तबदीली करनी होती है। कीव में रूस आतंकियों को भेजने की तैयारी में है। इस तरह का बयान यूक्रेन रक्षा मंत्रालय द्वारा की जा रही है। दूसरे तरफ पुतिन का परमाणु बम के इस्तेमाल पर बार-बार बयान दुनियां को बेवजह आफत में डाल सकता है। बम, बारूद के बाद इस युद्ध में बायो वेपन से भी प्रहार दोनो देशों के द्वारा हो रहे हैं, जो अति शर्मनाक और दुखद है। इस पर जल्द ही गंभीरता से नीतिगत निर्णय हो और जल्द लड़ाई पर रोक लगे।

इस युद्ध में हमारे देश के एक युवा छात्र नवीन जो खरकीव में मेडिसिन के लिए गये थे, पर गोलाबारी के दौरान उनकी मौत हो गई, जो देश के लिए दुखद घटना रही। राहत की बात है कि भारत सरकार को ऑपरेशन गंगा अभियान से लगभग छात्रों एवं भारतीयों को वापसी हो रही है। विदेशों में पढ़ने वाले हमारे देश के छात्र-छात्राओं की वापसी इस महायुद्ध में जर्बदस्त समस्या सा हो गया था, पर दोनो देशों के साथ संवाद एवं अभिजन से इसमें सफलता प्राप्त हुई। भारत के समक्ष आज इस महायुद्ध के समय संतुलन साधने की चुनौती है और कोई भी कदम देश के भविष्य के कुटनीतिक, राजनीतिक एवं व्यापारिक, सामरिक पर प्रभाव अवश्य पड़ेगा। इसलिए पुराने अनुभव अपने साथ के मित्रवत व्यवहारों और समर्थन का ध्यान रखकर ही विश्व के मंच पर आगे बढ़ने होंगे क्योंकि दुनियां इस महायुद्ध में दो भागों में बढ़ चुका है और भारत भी पूरी तौरपर इस बाबत सजग है और

जरूरी भी है। भारत की अपनी समस्याएं, जरूरतें और सुरक्षा की हालात है और विश्व पटल पर हर देश से अलग-अलग स्तर पर कई समझौते भी है और विश्व के नजर में भारत एक निष्पक्ष एवं निर्णायक भूमिका अदा कर सकता है तो भारत को अपने हर निर्णय को बहुत सोची समझी निर्णय से स्थापित करने का समय है यही आज हमारा भारत करता हुआ नजर आ रहा है। फिलहाल यूक्रेन के साथ विश्व के अधिकतर देशों की सहानुभूति है पर दोनो पक्षों के साथ मिल बैठकर वार्ता से लड़ाई एवं इसके राजनीतिक, कुटनीतिक समाधान पूरी तौर पर हो। इस पर यूएनओ का सतर्क भूमिका की भी जरूरत है। तीसरे विश्वयुद्ध को टालने के लिए साथ ही परमाणु लड़ाई का माहौल ना बने, इस पर सात ढ़ंग से आज विचार एवं समझ की जरूरत है, एक बात साफ है कि यूक्रेन और रूस के महायुद्ध में कुछ संगठन और देशों का अपना स्वार्थ भी निहीत है। आग में घी डालने वाले एक्शन, बयानो पर अंकुश आज की जरूरत है। इस महायुद्ध में पूरे विश्व को इसके दुष्परिणाम को भुगतना पड़ेगा, चाहे वह व्यापारिक हो या सामरिक, भारत भी इस हालत पर बड़े दूरदर्शी लक्ष्य पर कार्यरत्त है। विशेषकर हमारा विदेश मंत्रालय जो किसी भी आपातकालिन परिस्थिति में भारत के हित और सुरक्षा पर सतर्क है, क्योंकि लड़ाई का अंत केवल विनाशकारी ही होता है, इससे किसी भी पक्ष को फायदा नहीं होता और इससे दूरी बनाना हर देश, संगठन को आज की जरूरत है, क्योंकि युद्ध के घातक मंसूबे विश्व के बेहतरी को बाधा पहुंचाती है। राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता ना खराब होने पाये, यह सुनिश्चित करने का समय है और इसके लिए विश्व के सभी देशों को एक मत से सहमति बनाने की जरूरत भी और इसी के विश्व में सही और आपसी मेल भाव का माहौल बनाने में कामयाबी प्राप्त हो पायेगी। ●

(लेखक बी.एस.एफ. के पूर्व अधिकारी हैं।)

पुलिस ने किया डबल मर्डर का खुलासा

● ओम प्रकाश

राजधानी रांची के सिल्ली थाना क्षेत्र स्थित तानाशी मोड़ के पास आठ फरवरी की देर रात को प्रेमी प्रेमिका का मर्डर कर दिया गया था। इस घटना की सूचना स्थानीय लोगों ने 9 फरवरी की सुबह सिल्ली ओपी प्रभारी को दी। स्थानीय लोगों ने बताया कि मुरी बरलांगा रेलवे ओवरब्रिज के पास एक लड़का लड़की का शव पड़ा हुआ है। इस घटना की जानकारी रांची के एसएसपी सुरेंद्र कुमार झा को मिलने के बाद एसएसपी सुरेंद्र कुमार झा ने ग्रामीण एसपी नौशाद आलम के नेतृत्व में टीम गठित कर मामले को जल्द सुलझाने का निर्देश दिए। पुलिस ने टेक्निकल सेल के सहारे पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी के नाम श्रीपद मांझी, भोलानाथ मांझी, विष्णु मांझी, सुशील मांझी और दिनेश मांझी है। गिरफ्तार आरोपी विष्णु मांझी ने बताया कि प्रेम प्रसंग में हत्या की गई है। मृतका लड़की नाबालिग थी तो वहीं मृतक लड़का बालिग था। मृतक लड़का का नाम

राजेश मांझी था। गिरफ्तार आरोपी विष्णु मांझी ने बताया कि लड़की रिश्ते में हमारी साली लगती थी। इस प्रेम प्रसंग की वजह से घरवाले और मौशेरा भाई काफी परेशान रह रहे थे। लड़की को बार बार समझाने के बावजूद लड़की नहीं मान रही थी। इसीलिए इस घटना को अंजाम दिया। गिरफ्तार सभी आरोपी ने बताया कि लड़की की हत्या करने से पहले उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया उसके बाद लड़की की हत्या की गई थी।

☞ **लड़की के जीजा ने ही हत्या करने का बनाया था प्लान :-** भाई श्रीपद मांझी ने बताया कि इस प्रेम प्रसंग की वजह से जीजा जी काफी तनाव में थे और घर की इज्जत बर्बाद कर देने की धमकी दे रहे थे। जीजा विष्णु मांझी ने ही हत्या करने का प्लान बनाया और फिर उसकी हत्या की गई। भाई श्रीपद मांझी ने प्रेमी प्रेमिका को शादी कराने के नाम पर तनाशी मोड़ के पास बुलाया। प्रेमी प्रेमिका के आने के बाद गिरफ्तार हुए सभी लोगों ने बारी बारी से लड़की के साथ दुष्कर्म किया और उसकी हत्या कर दी। इसके बाद प्रेमी को चाकू से गोदकर उसकी भी हत्या कर दी गई। ●

हत्या करने के बाद आरोपियों ने निकाली शंकर की आंख

● ओम प्रकाश

सिल्ली पुलिस ने सिल्ली के काशीडीह लगाम गांव निवासी शंकर महली की हत्या की गुत्थी 72 घंटों के अंदर सुलझा लिया है। जानकारी के अनुसार शंकर की छेड़खानी से परेशान होकर भाभी सुशीला महली ने ही पड़ोसी नीतिन महली के साथ मिलकर उसकी हत्या की रची थी साजिश। इस घटना के बाद रांची के एसएसपी सुरेंद्र कुमार झा के निर्देश पर ग्रामीण एसपी नौशाद आलम के मार्गदर्शन में, सिल्ली डीएसपी खिस्टोफर केरकेट्टा के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने जब मामले की जांच की तो पता चला कि शंकर की भाभी फरार है। पुलिस ने कड़ी खोजबीन कर उसे गिरफ्तार किया। कड़ाई से पूछताछ करने के बाद आरोपी सुशीला महली ने पूरे मामले का खुलासा किया। पुलिस की पूछताछ में उसने बताया कि शंकर की छेड़खानी से परेशान होकर उसने अपने

पड़ोसी नीतिन महली के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी थी। इस एवज में उसने नीतिन को सुपारी के तौर पर पांच हजार नगद और एक डिसमील जमीन देने का वादा भी किया था। भाभी सुशीला की निशानदेही पर पुलिस ने आरोपी नीतिन को भी उसके काशीडीह लगाम गांव स्थित घर से गिरफ्तार किया। पुलिस ने दोनों आरोपियों के पास से घटना में इस्तेमाल किए गए दउली व गमछी भी बरामद कर लिया है। जानकारी के लिए आपको बता दें की हत्या करने के बाद दोनों आरोपियों ने शंकर माहली की एक आंख भी निकल ली थी। 18 फरवरी की रात शंकर अपने बगल के घर में सोने के लिए चला गया। करीब एक बजे सुशीला व नीतिन उसके कमरे में गए। दोनों ने मिलकर शंकर का गला दबा दिया। कुछ देर बाद दोनों को यह लगा कि शंकर अभी नहीं मरा है ,इसके बाद दउली मारकर उसकी हत्या कर दी। और दोनो ने मिलकर शंकर का एक आंख भी निकाल दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद दोनों वहां से निकल कर अपने घर आ गए। ●

लूटपाट की योजना बना रहे चार आरोपी गिरफ्तार

● ओम प्रकाश

मांडर थाना क्षेत्र के ब्राम्बे चौक के पास एसबीआई एटीएम में कुछ लोगो के द्वारा चोरी की घटना को अंजाम दिया जा रहा था। सूचना मिलने पर रांची के एसएसपी सुरेंद्र कुमार झा ने पुलिस अधीक्षक ग्रामीण नौशाद आलम के निर्देश पर थाना प्रभारी मंडार विनय कुमार के नेतृत्व में टीम गठित कर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए। थाना प्रभारी विनय कुमार पुलिस बल के साथ जब वहां पर पहुंचे तो देखा कि चार युवक एटीएम में चोरी कर रहे हैं। पुलिस को देखते ही चारों युवकों ने भागने का प्रयास किया। जिसके बाद थाना प्रभारी विनय कुमार और उनकी टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एटीएम में लूटपाट करने वाले युवकों को खदेड़ कर हिरासत में लिया। कड़ाई से पूछताछ करने पर इन लोगों ने पुलिस को बताया कि एसबीआई एटीएम के बगल स्थित झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक के पास दरवाजे में लगे ताले को लोहे की रॉड से तोड़कर हम लोगो ने अंदर जाने की कोशिश की थी, लेकिन अंदर जाने में सफल नहीं हो सके। इसलिए एसबीआई एटीएम में चोरी करने आए थे। इसी क्रम में चार युवकों को गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तार लोगों में उज्जवल उरांव, आकाश उरांव, अनुराग कच्छप, और प्रदीप खालको है। पुलिस ने इनके पास से दो मोटरसाइकिल, बैंक के मुख्य दरवाजे से तोड़े गए दो ताले और दो रॉड बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार। चारों युवकों में से उज्जवल पूर्व में भी अपराधिक गतिविधियों में शामिल रहा है और जेल भी जा चुका है। इस छापेमारी में मांडर थाना प्रभारी विनय कुमार यादव, सालुका, योगेंद्र एवं सशस्त्र बल शामिल है। ●

महिला पुलिसकर्मियों ने संभाला सीसीआर का कमान

● ओम प्रकाश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला पुलिसकर्मियों ने सीसीआर यानी (कंपोजिट कंट्रोल रूम) का कमान संभाला। महिला पुलिसकर्मी सीसीटीवी कैमरा से पूरे शहर की ट्रैफिक पर नजर रख रही थी। जिनमे रेड लाइट जंप, बिना हेलमेट, ट्रैफिक नियम तोड़ने वाले, अपराध कर भागने वाले एवं कानून तोड़ने वालो पर नजर रख रही थी और गलती करने वालों का चालान बनाने के लिए वरीय अधिकारियों के पास उन वाहनों का नंबर नोट कर उन्हें वायरलेस के जरिए जानकारी पहुंचा रही थी । जानकारी के लिए आपको बता दें कि वैसे तो आम दिनों में वहां पर महिला एवं पुरूष दोनों काम करते है, लेकिन महिला दिवस के अवसर पर वरीय अधिकारियों के आदेश पर सीसीआर का पूरा कमान महिलाओं को सौंप दिया गया था। महिला पुलिसकर्मियों ने कमान अपने हाथों में दिये जाने पर गर्वित महसूस कर रही थी। उन्होंने कहा की उनके लिए यह काफी बड़ा सम्मान हैं। इस प्रकार के सम्मान से हम महिला पुलिसकर्मियों का कॉन्फिडेंस लेवल ऊंचा हो गया है। इससे हम लोग अपने आप में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ महसूस कर रहे हैं। आज का दिन हम लोगों के लिए सचमुच बहुत खास है। इस अवसर पर साइबर थाना प्रभारी नेहा बाला, साइबर सेल की डीएसपी यशोधरा तथा सुखदेवनगर थाना प्रभारी ममता कुमारी ने भी महिला दिवस के अवसर पर सीसीआर पहुंच कर महिला पुलिसकर्मियों का उत्साह बढ़ाया। मौके पर पर सिटी एसपी सौरभ कुमार के साथ सीसीआर डीएसपी दीपक कुमार भी मौजूद रहे। ●

✯ संगेय एवं असंज्ञेय अपराध किस प्रकार के अपराध होते हैं एवं उनमे मूलभूत रूप से क्या अंतर होता है ?

अपराधों की प्रकृति के अनुसार उन को दो भागों में बांटा गया है प्रथम संगेय अपराध एवं द्वितीय असंगेय अपराध । अपराधों का यह वर्गीकरण उनकी गंभीरता एवं सामान्य प्रकृति के आधार पर किया गया है ऐसे अपराध जो संगीन एवं गंभीर प्रकृति के होते हैं संगेय अपराध कहे जाते हैं एवं जो सामान्य प्रकृति के होते हैं वे असंगेय अपराध समझे जाते हैं। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 2(ग) के अनुसार संगेय अपराध के मामलों से अभिप्राय ऐसे अपराध एवं मामलों से होता है जिसमें पुलिस अधिकारी प्रथम अनुसूची के अनुसार या उस समय लागू किसी विधि के अनुसार वारंट के बिना गिरफ्तार कर सकता है। अपराध संगेय है या असंगेय यह दंड प्रक्रिया संहिता की प्रथम अनुसूची के स्तंभ 4 में दिया गया है। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 154 के अंतर्गत पुलिस अधिकारी मामले की सूचना मिलने पर तुरंत उसका अन्वेषण शुरू कर सकता है जब की धारा 155 के अंतर्गत अपराध के बारे में सूचना मिलने पर पुलिस अधिकारी उस का अन्वेषण मजिस्ट्रेट द्वारा आदेश मिलने पर ही कर सकता है दंड प्रक्रिया संहिता की प्रथम अनुसूची दो में अन्य विधियों के विरुद्ध अपराधियों का वर्गीकरण है जिसके अनुसार पुलिस अधिकारी वारंट के बिना केवल उन अपराधों में गिरफ्तारी कर सकता है जिनमें अपराध 3 वर्ष और उससे अधिक कारावास से दडनीय है यदि किसी मामले में एक या अधिक अपराध सगेय हो तो वह संगेय अपराध माना जाता है कोई केस असंगे केवल तभी हो सकता है जब उसकेस में का प्रत्येक अपराध असंगेय अपराध हो। संगेय और असगेय अपराधों में मूल अंतर निम्नलिखित प्रकार से है ।संगेय अपराध गंभीर एवं संगीन प्रकृति के होते हैं जबकि अ संगेय अपराध सामान्य प्रकृति के होते हैं संगेय अपराधों में पुलिस बिना वारंट के गिरफ्तार कर सकती है जबकिअसगेय मामलों में पुलिस बिना वारंट के मुदालय को गिरफ्तार नहीं कर सकती है। संगेय मामलों में पुलिस अधिकारी बिना किसी आदेश के अन्वेषण शुरू कर सकता है जबकि असगेय मामलों में बिना आदेश के अन्वेषण नहीं किया जा सकता है संगेय मामलों में कार्यवाही करने के लिए परिवाद की आवश्यकता नहीं होती है जबकि असगेय मामले में कार्यवाही का प्रारंभ परिवाद से होता है।

✯ अजीत कुमार चोरी के इरादे से बबलू कुमार के घर में प्रवेश करता है बबलू कुमार तथा उसके घर के अन्य व्यक्ति अजीत कुमार को घेरकर लाठियों से आक्रमण करते हैं अजीत कुमार अपने जीवन को संकट में पाकर पिस्तौल निकालकर गोली चला देता है जिससे बबलू कुमार की मृत्यु हो जाती है तो क्या अजीत कुमार हत्या का दोषी होगा?

अजीत कुमार भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के अनुसार हत्या का दोषी माना जाएगा , प्रस्तुत समस्या प्रतिरक्षा के अधिकार से संबंधित है इस समस्या के दो पक्ष हैं पहला अजीत कुमार चोरी करने के आशय से बबलू कुमार के घर प्रवेश करता है इसलिए बबलू कुमार को अपनी संपत्ति की प्रतिरक्षा करने का अधिकार है और इस अधिकार के प्रयोग में वह अपने घर के सदस्यों के साथ अजीत कुमार को घेरकर लाठियों से आक्रमण करता है यहां हो सकता है कि बबलू कुमार को अपने शरीर एवं संपत्ति के प्रतिरक्षा के अधिकार के प्रयोग का अधिकार रहा हो किंतु विधि की उपेक्षा उसके पक्ष में नहीं होगा ,दूसरा दिए समस्या में अजीत कुमार केबल चोरी करने के आशय से बबलू कुमार के घर नहीं गया था उसके पास पिस्तौल होना इस बात का साक्षी है कि वह इस तैयारी के साथ बबलू कुमार के घर में चोरी करने गया था कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वह उस पिस्तौल का प्रयोग करेगा उसका पूर्व चिंतन था कि वह विरोध किए जाने पर मकान

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि

(अधिवक्ता)

Ph.- 9308454485
7004408851

E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

मालिक की हत्या भी कर सकता है इसलिए अजीत कुमार अपनी जीवन को संकट से बचाने का लाभ नहीं ले सकता है क्योंकि वह स्वयं बबलू कुमार के घर चोरी करने गया था जो स्वयं में अपराध है, इसलिए अजीत कुमार भारतीय दंड संहिता 1807 की धारा 100 में वर्णित व्यक्तिगत प्रतिरक्षा का अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता है और वह हत्या का दोषी माना जाएगा।

✯ मजिस्ट्रेट की शिनाख्त रिपोर्ट की शैक्षिक महत्व क्या है?

दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 291(क) के अंतर्गत इस विषय में उपबंध किया गया है जिसके उपधारा (1) के अनुसार कोई दस्तावेज जो किसी व्यक्ति या संपत्ति की बाबत किसी कार्यपालक मजिस्ट्रेट को हस्ताक्षरित शिनाख्त रिपोर्ट होनी आवश्यक है इस संहिता के अधीन किसी जांच विचारण या अन्य कार्यवाही में साक्ष्य के तौर पर उपयोग में लाई जा सकेगी यद्यपि ऐसे मजिस्ट्रेट को साक्षी के तौर पर नहीं बुलाया गया है परंतु जहां ऐसे रिपोर्ट में ऐसे किसी संदिग्ध व्यक्ति या साक्षी का विवरण है जिसे भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 की धारा 21, 32, 33, 155 या धारा 157 में उपबंध लागू होते हैं वहां ऐसा विवरण धारा 37 के अधीन उन धाराओं के उपबंध के अनुसार के सिवाय प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है। पुन: उपधारा 2 में उपबंधित किया गया है कि न्यायालय यदि ठीक समझता है तो अभियोजन या अभियुक्त के आवेदन पर ऐसे मजिस्ट्रेट को सम्मन और उक्त रिपोर्ट की विषय वस्तु के बारे में परीक्षण कर सकेगा। अत: शिनाख्त रिपोर्ट का शैक्षिक महत्व उपयुक्त के अनुसार सीमित है।

✯ जानिए आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के बारे में।

आवश्यक वस्तु अधिनियम को 1955 में भारत की संसद ने पारित किया था। तब से सरकार इस कानून की मदद से आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन आपूर्ति और वितरण को नियंत्रित करती है ताकि यह चीजें उपभोक्ताओं को उचित दाम पर उपलब्ध हो सके। सरकार अगर किसी चीज को आवश्यक वस्तु घोषित कर देती है तो सरकार के पास यह अधिकार आ जाता है कि वह उस पैकेज्ड प्रोडक्ट्स की अधिकतम खुदरा मूल्य तय कर सके। उचित मूल्य से अधिक दाम पर चीजों को बेचने पर विक्रेता को सजा हो सकती है।

✯ आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 का क्या मकसद है?

खाने पीने की चीजें दवा इंधन जैसे पेट्रोलियम के उत्पाद जिंदगी के लिए कुछ अहम चीजें हैं, अगर कालाबाजारी या जमाखोरी की वजह से इन चीजों की आपूर्ति प्रभावित होती है तो आम जनजीवन प्रभावित होगा । साफ शब्दों में कहा जाए तो कुछ चीजें ऐसी हैं जिस के बगैर इंसान का ज्यादा दिनों तक जिंदा रहना मुश्किल है या इंसान के लिए बहुत ही जरूरी है। ऐसी चीजों को आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के तहत आवश्यक वस्तु की सूची में रखा गया है। इसका एक ही मकसद होता है कि लोगों को जरूरी चीजें उचित दाम पर और आसानी से उपलब्ध हो सके।

Hotel Maurya Patna

Hotel Maurya – Patna is a pioneer project of **Bihar Hotels Limited (BHL).** It is the only **Five Star** category hotel in the State of Bihar with friendly face of affordable luxury. BHL has been successfully operating its Five Star Hotel in Patna since **1978.** Situated in the heart of the city, Patna, the hotel reflects the **historic grandeur** of this city.

Corporate Facilities & Services: Centrally located in the Commercial heart of Patna the Hotel provides Intricately & elegantly designed rooms, Central Air- Conditioning, Direct dialing from rooms with call detail print-out facility, Satellite LED television, Choice of **Seven Convention Halls** of varied capacities, **Heritage rooms** for private dining , **Business Centre, Shopping Arcade, Bank facility, Travel counter, Swimming pool, Safe deposit lockers, Fitness centre & Wi-fi**, all within the hotel premises.

Dining:

- *Vaishali Café* - Walk-in for Breakfast and Business Buffet Lunches. The a-la-carte table offers a multi cuisine and buffet spreads to tinkle those taste buds.
- *Spice Court* – Restaurant serving Indian, Continental, Thai & Chinese cuisine.
- *The Pastry Shop* – Provides all kinds of Baker's confectionery viz; Mouthwatering cakes, Crossiants, Breads, Muffins etc. It also provides free home delivery of cakes of 6 pound onwards.
- *Bollywood Treats*- A matchless meeting point for Munchies, Music, TV shows, Pool Table, Games for kids. Thus, providing Masti not only for adults but also for kids.

Rooms:

- Step into an universe of old world nobility & colonial charm at the spacious VVIP suite of rooms, where your every demand for luxury is met in a manner that's perfected to please. What's more, it's accommodating enough to entertain an entourage of guests. Elegantly designed premium rooms with beautiful interiors and excellent facilities

Total Rooms: 77 – Double: 73, Suites: 04

Credit Cards: Visa, Master, Amex, Bob Cards

Access (in kms): Apt: (07), Rly. Stn.:(01)

MAGADH INTERNATIONAL SCHOOL

Affiliated to C.B.S.E., New Delhi I Affiliation No. 330789

ADMISSION OPEN FOR 2022

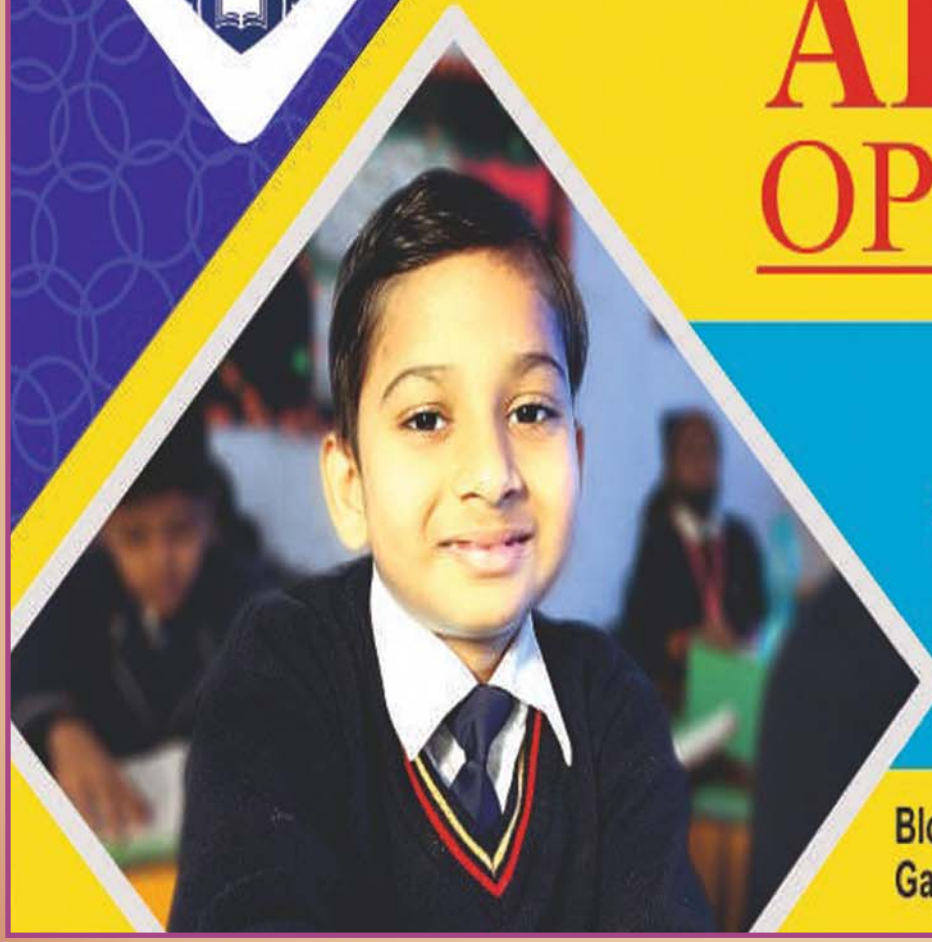

WHY CHOOSE US

Quality School with best learning facilities. Creative education plan.

THE LEARNING BENEFITS

Helping good environment. Loving and caring atmosphere.

WHAT WE OFFER YOU

Create best future for your children.

Block Road, Tekari, Gaya, Bihar - 824236 | 7667425414 8825338825 | info@mistekari.in www.mistekari.com